अनुघजांकीड २ ५२६४

अयुध्याकांड २

ॐ ह्रीं रा ॐ श्रीमते रामानुजाय नमः॥

अ०कां०
१

॥ई०॥श्रीगणेशायनमः॥श्रीजानकीवल्लभोविजयते॥श्लोक॥वामांगेचविभातिभूधरसुतादेवापगामस्तकेभालेवालविधुर्गलेचगरलंयस्योरसि
व्यालराट्॥सोयंभूतिविभूषनःसुरवरःसर्वाधिपःसर्वदःसर्वःसर्वगतःशिवःशशिनिभःश्रीशंकरःपातुमां॥१॥प्रसन्नतायांनगताभिषेकेतथानम
म्लेवनवासदुःखतः॥मुखांबुजश्रीरघुनंदनस्यमेसदास्तुमंजुलमंगलप्रदा॥२॥नीलांबुजस्यामलकोमलांगंसीतासमारोपितवामभागं
पाणौमहासायकचारुचापंनमामिरामंरघुवंशनाथं॥३॥दो॥श्रीगुरुचरणसरोजरजनिजमनमुकुरसुधारि॥वरणौरघुवरविमलजसजोदाय
कफलचारि॥१॥चौ॥जवतेंरामव्याहिघरआए॥नितनवमंगलमोदवधाए॥भुवनचारिदशभूधरभारी॥सुकृतमेघवरषहिसुखवारी॥रिधिसिधि
संपतिनदीसुहाई॥उमगिअवधिअंवुधिकहआई॥मनिगनपुरनरनारिसुजाती॥सुचिअमोलसुंदरवहुभांती॥कहिनजाईकछुनगरविभूती॥जनुइ
तनीविरंचिकरतूती॥सवविधिसवपुरलोगसुखारी॥रामचन्दुमुखचन्दुनिहारी॥मुदितमातुसवसखीसहेली॥फुलितविलोकिमनोरथवेली॥राम
रूपगुणशीलसुभाऊ॥प्रमुदितहोइदेखिसुनिराऊ॥दो॥सवकेउरअभिलाषअसकहहिमनाइमहेश॥आयुअछतजुवराजपदरामहिदेउनरेश॥ राम
नाम चौ॥एकसमयसवसहितसमाजा॥राजसभारघुराजविराजा॥सकलसुकृतमूरतिनरनाहू॥रामसुजससुनिअतिहिउछाहू॥नृपसवरहहिकृ १
पाअभिलाषे॥लोकपरहहिप्रीतिरुषराषे॥त्रिभुवनतीनिकालजगमाहीं॥भूरिभागदशरथसमनाहीं॥मंगलमूलरामसुतजासू॥जोकछुकहिय
थोरसवतासू॥राउसुभायमुकुरकरलीन्हा॥वदनविलोकिमुकुटसमकीन्हा॥श्रवणसमीपभएसितकेशा॥मनहुंजरठपनअसउपदेशा॥नृप

युवराजरामकहदेहू॥ जीवणजन्मलाकिनलेहू॥ दो॥ यहविचारुउरआनिन्रपसुदिनसुअवसरपाई॥ प्रेमपुलकितनमुदितमनगुरहिसुना
यउजाइ॥३॥ चौ॥ कहैभुआलसुनियमुनिनायक॥ भयेरामसवविधिसवलायक॥ सेवकसचिवसकलपुरवासी॥ जेहमरेअरिमित्रउदासी॥
सवहिरामप्रियजेहिविधिमोही॥ प्रभुअसीसजनुतनुधरिसोही॥ विप्रसहितपरिवारगोसाई॥ करहिछोहुसवरौरिहिनाई॥ जेगुरचरणरेणसिर
धरहीं॥ तेजनुसकलविभववसकरहीं॥ मोहिसमानमहिभएनदूजे॥ सवपायरजपावनिपूजे॥ अवअभिलाषएकमनमोरे॥ पूजिहिनाथअ
नुग्रहतोरे॥ मुनिप्रसन्नलखिसहजसनेहू॥ कहेउनरेशरजायसुदेहू॥ दो॥ राजनराउरनामजससवअभिमतदातार॥ फलअनुगामीम
हिपमनिमनअभिलाषतुम्हार॥४॥ चौ॥ सवविधिगुरुप्रसन्नजियजानी॥ वोलेउराउहरषिमृदुवानी॥ नाथरामकरियेयुवराजू॥ कहियकृ
पाकरिकरियसमाजू॥ मोहिअछतयहहोउउछाहू॥ लहहिलोगसवलोचनलाहू॥ प्रभुप्रसादशिवसवैनिवाही॥ यहलालसाएकमनमाही॥ पुनि
नसोचतनरहौकिजाऊ॥ जेहिनहोइपाछेपछताऊ॥ सुनिमुनिदशरथवचनसोहाए॥ मंगलमूलमोदमनभाए॥ सुनुन्रपजासुविमुखपछिता
हीं॥ जासुभजनविनुजरनिनजाहीं॥ भयउतुम्हारतनयसोस्वामी॥ रामपुनीतप्रेमअनुगामी॥ दो॥ वेगिविलंवुनकरियन्रपसाजियसवैसमाज
सुदिनसुमंगलतवहिजवरामहोंहियुवराज॥५॥ चौ॥ मुदितमहीपतिमंदिरआए॥ सेवकसचिववसुमंतवोलाए॥ कहिजयजीवसीसतिन्हनाए॥
भूपसुमंगलवचनसुनाए॥ प्रमुदितमोहिकहेउगुरुआजू॥ रामहिरायदेहुयुवराजू॥ जौपाछैहिमतलागेनीका॥ करहुहरषिहियरामहि

अ॰ का॰ २ टीका॥ मंत्रीमुदितसुनतप्रयवानी॥ अभिमतविरवपरेउजनुपानी॥ विनतीसचिवकरैकरजोरी॥ जिअहुजगतपतिवरिसकरोरी॥ जगमंग
लभलकाजविचारा॥ वेगियनाथनलाइअवारा॥ नृपहिमोदसुनिसचिवसुभाषा॥ बढतचौरजनुलहीसुसाषा॥ दो॥ कहेउभूपमुनिराजक वेन
रजोइजोइआयसुहोइ॥ रामराजअभिषेकहितवेगिकरियसोइसेइ॥ चौ॥ हरषिमुनीशकहेउमृदुवानी॥ आनहुसकलसुतीरथपानी
औषधमूलफूलफलपाना॥ कहेउनामगनिमंगलनाना॥ चामरचमरवसनवहुभांती॥ रोमपाटपटअगिणितिजाती॥ मणिगणमंग
गलवस्तुअनेका॥ जोजगजोगभूपअभिषेका॥ वेदविहितकहिसकलविधाना॥ कहेउरचहुपुरविविधविधाना॥ सफलरसालपुंगफ
लकेरा॥ रोपहुवीथिन्हपुरचहुंफेरा॥ रचहुमंजुमनिचौकेचारू॥ कहहुवनावणवेगिवजारू॥ पूजहुगणपतिगुरुकुलदेवा॥ सवमिलिक
करहुभूमिसुरसेवा॥ दो॥ ध्वजपताकतोरणकलशसजहुतुरगरथनाग॥ सिरधरिमुनिवरवचनसवनिजनिजकाजहिलाग॥ ६॥ चौ॥
जोमुनीशजेहिआयसुदीन्हा॥ सोतेहिकाजप्रथमजनुकीन्हा॥ विप्रसाधसुरपूजतराजा॥ करहुरामहितमंगलकाजा॥ सुनतरामअभि राम २
षेकसोहावा॥ वाजतग्रहग्रहअवधिवधावा॥ रामसीयतनसगुनजनाए॥ फरकहिमंगलअंगसोहाए॥ पुलकिसप्रेमपरस्परकहहीं॥ भर
तआगमनसूचकअहहीं॥ भएवहुतदिनअतिअवसेरी॥ सगुनप्रतीतिभेटप्रयकेरी॥ भरतसरिसप्रयकोजगमांहीं॥ इहैसगुनफलदूसरना
हीं॥ रामहिवंधसोचदिनराती॥ अंडउन्हकमठहृदयजेहिभांती॥ दो॥ एहिअवसरमंगलपरमसुनिहसेउरनिवास॥ सोभितलखिविधुवढत

जनु वारिधि विविधि विलास ॥ ८ ॥ चौ ॥ प्रथम जाइ जिन्ह वचन सुनाए ॥ भूषन वसन भूरि तिन्ह पाए ॥ प्रेम पुलकित नमन अनुरागी ॥ मंगल
कलस सजन सव लागी ॥ चौके चारु सुमित्रा पूरी ॥ मणिमय विविध भांति अति रूरी ॥ आनंदमगन राम महतारी ॥ दिए दान वहु विप्र हंकारी ॥ पू
जि ग्रामदेवी सुर नागा ॥ कहेउ वहोरि देन वलि भागा ॥ वार वार गणपतिहि निहोरी ॥ पुरवहु सकल मनोरथ मोरी ॥ जेहि विधि होइ राम कल्यानू ॥
देहु दया करि सो वरदानू ॥ गावहि मंगल कोकिलवयनी ॥ विधुवदनी मृगसावकनयनी ॥ दो ॥ रामराज अभिषेक सुनि हिय हरषे नर नारि ॥ लगे सुमं
गल सजन सव विधि अनुकूल विचारि ॥ ९ ॥ चौ ॥ तव नरनाह वसिष्ठ वोलाए ॥ रामधाम सिष देन पठाए ॥ गुरु आगमन सुनत रघुनाथा ॥ द्वार आइ
पद नायउ माथा ॥ सादर अरघ देइ घर आने ॥ सोरह भांति पूजि सनमाने ॥ गहे चरण सिय सहित वहोरी ॥ वोले राम कमल कर जोरी ॥ सेवक स
दन स्वामि आगमनू ॥ मंगल मूल अमंगल दमनू ॥ तदपि उचित जनु वोलि सप्रीती ॥ पठइय काज नाथ असि नीती ॥ प्रभुता तजि प्रभु कीन्ह स
नेहू ॥ भए पुनीत आजु यह गेहू ॥ आयसु होइ सो करउ गोशाई ॥ सेवक लहै स्वामि सेवकाई ॥ दो ॥ सुनि सनेह साने वचन मुनि रघुवरहि प्रसंस ॥
राम कस न अस कहहु तुम हंस वंश अवतंस ॥ १० ॥ चौ ॥ वरनि राम गुण शील सुभाऊ ॥ वोले प्रेम पुलकि मुनिराऊ ॥ भूप सजे अभिषेक समाजू ॥
चाहत देन तुमहि युवराजू ॥ राम करहु सव संजम आजू ॥ जौ विधि कुशल निवाहै काजू ॥ गुरु सिष देइ राउ पहि गैऊ ॥ राम हृदय अस विसमय भैऊ ॥
जनमे एक संग सव भाई ॥ भोजन शयन केलि लरिकाई ॥ करणवेध उपवीत विवाहू ॥ संग संग सव भयउ उछाहू ॥ विमल वंश यह अनुचित एकू ॥ वंधु

अ॰ कां॰
३ हि॰

विहाइ वडेंऽअभिषेकू॥ प्रभु सप्रेम पछतानि सोहाई॥ हरउ भक्त मन कि कुटिलाइ॥ दो॥ तेहि अवसर आए लषन मगन प्रेम आनंद॥ सन
नमाने प्रिय वचन कहि रघुकुल कैरव चंद॥ ११ चौ॥ वाजने वाजहि विविध विधाना॥ पुर प्रमोद नहि जाइ वषाना॥ भरत आगमन सकल मना
वहि॥ आवहि वेगि नयन फल पावहि॥ हाट वाट ग्रह गली अथाई॥ कहहि परसपर लोग लोगाई॥ कालि लगन भल केतिक वारा॥ पूजिहि वि
धि अभिलाष हमारा॥ कनक सिंहासन सीय समेता॥ वैठहि राम होहि चित चेता॥ सकल कहहि कव होइहि काली॥ विघ्न मनावहि देव कुचाली॥ ति
न्हहि सोहाइ न अवध वधावा॥ चोरहि चांदनि राति न भावा॥ सारद वोलि विनय सुर करही॥ वारहि वार पाय ले परही॥ दो॥ विपति हमारि विलोकि
वडि मातु करि असोइ आजु॥ राम जाहि वन राज तजि होइ सकल सुरकाजु॥ १२ चौ॥ सुनि सुर विनय ठाढि पछिताती॥ भइउ सरोज विपिन हिम
राती॥ देषि देव पुनि कहहि निहोरी॥ मातु तोहि नहि थोरिउ षोरी॥ विसमय हरष रहित रघुराऊ॥ तुम्ह जानहु सव राम सुभाऊ॥ जीव कर
म वस दुख सुख भागी॥ जाइय अवधि देवहित लागी॥ वार वार गहि चरन सकोची॥ चली विचारि विवुध मति पोची॥ ऊच निवास नीच करतूती॥ राम
देषि न सकहि पराइ विभूती॥ आगिल काज विचारि वहोरी॥ करिहहि चाह कुशल कवि मोरी॥ हरषि हृदय दशरथपुर आई॥ जनु ग्रह दशा दु ३
सह दुखदाई॥ दो॥ नाम मंथरा मंदमति चेरि कैकेइ केरि॥ अजस पेटारी ताहि करि गई गिरा मति फेरि॥ १३ चौ॥ देषि मंथरा नगर वनावा॥ मंजुल
मंगल वाजु वधावा॥ पूछेसि लोगन्ह काह उछाहू॥ राम तिलक सुनि भा उर दाहू॥ करै विचार कुवुधि कुजाती॥ होइ अकाज कवन विधि राती॥ देषि लागि के॰।

मधकुटिलकि रानी॥ जिमिगवतकैलेउकेहि भाती॥ भरतमातु पहिगइविलषानी॥ काउनमनीअसहसिकहिरानी॥ उतरुनदेइसोलेइउसासू॥ नारिचरित
करिढारैआसू॥ हंसिकहिरानिगालुवडतोरै॥ दीन्हलरवणसिषअसमनमोरे॥ तवडुंनवोलुचेरिवडिपापिनि॥ छाडैसांसकारिजनुसापिनि॥ दो॥ सभय
रानिकहकहसिकिनकुशलराममहिपाल॥ लरवनभरतरिपुदवनसुनिभाकुवरिहिउरशाल॥ २४॥ चौ॥ कतसिषदेइहमहिकोमाई॥ गालुकरवके
हिकरवलपाई॥ रामहिछाडिकुशलकेहिआजू॥ जेहिनरेशदेइयुवराजू॥ भयौकौशिलहिविधिअतिदाहिन॥ देषतगरवरहतउरनाहिन॥ देषडुकस
नजाइसवसोभा॥ जोअवलोकिमोरमनछोभा॥ पुत्रविदेशनसोचतुम्हारे॥ जाननतिहौवसनाहहमारे॥ नीदवडुतप्रियसेजतुराई॥ लरवडुनभूपकपट
चतुराई॥ सुनिप्रियवचनमलिनमनजानी॥ झुकीरानीअवरडुअरगानी॥ पुनिअसकवडुंकहसिघरफोरी॥ तौधरिजीभिकढावौतोरी॥ दो॥ कानेषोरे
ने कूवरेकुटिलकुचालीजानि॥ तियविशेषपुनिचेरिकहिभरतमातुरिससिआनि॥ २५॥ चौ॥ प्रियवादिनिसिरवदीन्हीतोही॥ सुपनेडुतोपरकोडुनमोही॥ सुदि
नसुमंगलदायकसोई॥ तोरकहापुनजेहिदिनहोई॥ जेठस्वामिसेवकलघुभाई॥ यहदिनकरकुलरीतिसोहाई॥ रामतिलकजौसांचेडुकाली॥ दे
उमांगुमनभावतआली॥ कौशिल्यासमसवमहतारी॥ रामहिसहजसुभायपियारी॥ मोपरकरहिसनेहविशेषी॥ मैकरिप्रीतिपरीछादेषी॥ जौंवि
धिजन्मदेइकरिछोहू॥ होडुरामसियपूतपतोहू॥ प्राणतेअधिकरामप्रियमोरे॥ तिन्हकेतिलकछोभकसतोरे॥ दो॥ भरतसपथतोहिसत्यकडु
परिहरिकपटदुराउ॥ हर्षसमयविसमयकरसिकारणमोहिसुनाउ॥ २६॥ चौ॥ एकहिवारआससवपूजी॥ अवकछुकहवजीभिकरिदूजी॥ फो

अ०यो रैयोगकपारअभागा॥भलेकहतदुखरौरहिलागा॥कहहिझूठिफुरिवातवनाइ॥तेप्रियतुमहिकरुइमैमाई॥हमहुकहवअववकु
४ रसुहाती॥नहीतौमौनरहवदिनराती॥करिकुरूपविधिपरवसकीन्हा॥ववासोलुनिअलहियजोदीन्हा॥कोउनृपहोउहमहिकारानी
चेरिछाडिअवहोवकिरानी॥जारैजोगसुभावहमारा॥अनभलदेषिनजाइतुम्हारा॥तातेंकछुकवातअनुसारी॥छमियदेविवडिचू
कहमारी॥दो॥गूढकपटप्रियवचनसुनितियप्रवोधीरानि॥सुरमायावसवैरिनिहिसुहृदजानिपतिआनि॥१७॥चौ॥सादरपुनिपुनिस
छतिओही॥सवरीगाननमृगीजनुमोही॥तसिमतिफिरीअहैजसभावी॥रहसीचेरिघातजनुफावी॥तुम्हपूछहुमैकहतडेराऊ॥धरेहुमोर
घरफोरिनिनाऊ॥सजिप्रतीतिवहुविधिगढिछोली॥अवधसाढसातीतववोली॥प्रियसियरामकहातुम्हरानी॥रामहितुम्हप्रियसोफुरवा
नी॥रहाप्रथमअवसोदिनवीते॥समैफिरेरिपुहोंहिपिरीते॥भानुकमलकुलपोषनिहारा॥विनुजलजारिकरैसोछारा॥जरितुम्हारिचह
सवतिउपारी॥रूंधहुकरिउपाइवरवारी॥दो॥तुम्हहिनसोचसुहागवलनिजवसजानहुराउ॥मननमलीनमुखमीठनृपराउरसरलसुभाउ राम
चौ॥चतुरगंभीररामममहतारी॥वीचपाइनिजवातसंवारी॥पठएभरतभूपननिऔरे॥राममांतुमतजानवरौरे॥सेवहिसकलसवतिमोहिनीके ४
गर्वितभरतमांतुवलपीके॥शालतुम्हारकौशिलहिमाई॥कपटचतुरनहिहोइजनाई॥राजहितुम्हपरप्रेमविशेषी॥सवतिसुभावसकेनहि
देषी॥रचिप्रपंचभूपहिअपनाई॥रामतिलकहितलगनधराई॥यहकुलउचितरामकहुटीका॥सवहिसोहाइमोहिसुठिनीका॥आगि

लवातसमुझि डरमोही॥ देउ दइ फिरि सो फल ओही॥ दो॥ रचिपचि कोटिक कुटिलपन कीन्हेसि कपट प्रबोध॥ कहेसि कथा शत सवति कै जेहि विधि वाढ विरोध॥१९॥ चौ॥ भावी वस प्रतीति उर आई॥ पूछ रानि पुनि सपथ दिवाई॥ का पूछहु तुम्ह अवहुं न जाना॥ निज हित अनहित पसु पहिचाना॥ भयउ पाष दिन सजत समाजू॥ तुम्ह पाई सुधि मोसन आजू॥ षाइय पहिरिय राज तुम्हारे॥ सत्य कहे नहि दोष हमारे॥ जौं अ सत्य कछु कहव वनाइ॥ तो विधि देइहि हमहि सजाइ॥ रामहि तिलक कालि जौं भयऊ॥ तुम्ह कहं विपति वीज विधि वयऊ॥ रेख षचाइ कहौ वल भाषी॥ भामिनि भइहु दूध की मांषी॥ जौं सुत सहित करहु सेवकाई॥ तौ घर रहहु न आन उपाई॥ दो॥ कद्रुं विनतहि दीन्ह दुख तुमहि कौशिल्या देव॥ भरत वंदिगृह सेइहहि लखन राम के नेव॥२०॥ चौ॥ केकय सुता सुनत कटु वानी॥ कहि न सके कछु सहमि सुषानी॥ तन प्रसेव कदली जनु कांपी॥ कूवरी दशन जीभि तव चांपी॥ कहि कहि कोटिक कपट कहानी॥ धीरज धरहु प्रवोधेसि रानी॥ कीन्हिसि कठिन पढाइ कुपाठू॥ जिमि न नवै फिरि उकठु कुकाठू॥ फिरा करम प्रय लाग कुचाली॥ वकिहि सराहै मानि मराली॥ सुनु मंथरा वात फुरि तोरी॥ दहिन आंषि नित फरकत मोरी॥ दिन प्रति देषौं राति कुसपने॥ कहौं न तोहि मोह वस अपने॥ काह करौं सखि सुध सुभाऊ॥ दाहिन वाम न जानौं काऊ॥ दो॥ अपने चलत न आजु लगि अनभल काहुक कीन्ह॥ केहि अघ एक हि वार मोहि देव दुसह दुख दीन्ह॥२१॥ चौ॥ नैहर जनम भरव वरु जाई॥ जियत न करव सवति सेवकाई॥ अरि वस दैव जिवावै जाही॥ मरण नीक तेहि जीवन नाही॥ दीन वचन कह वहु वि

अ॰ का॰ धिरानी॥सुनिकुवरीतियमायागानी॥असकतकहहुमानिमनऊना॥सुखसोहागतुम्हकहंदिनदूना॥जेहिराउरअतिअनभलताः
५ का॥सोपाइहियहफलपरिपाका॥जवतेकुमतिसुनामैंस्वामिनि॥भूषनवासरनीदनजामिनि॥पूछेउगुनिन्हरेषतिन्हषांची॥भरतभुवा
लहोहियहसांची॥भामिनिकरहुंतोकहौउपाउ॥हैतुह्मारिसेवावसराऊ॥दो॥परौकूपतववचनपरसकौंपूतपतित्यागि॥कहसिमोरदुख
देषिवडकसनकरवहितल्यागि॥२२॥चौ॥कुवरीकुबुधिम्हलिकैकेई॥कपटछुरीउरपाहनटेइ॥लषैनरानिनिकटदुखकैसे॥चरैहरिततृण
वलिपसुजैसे॥सुनतवातम्रदअंतकठोरी देतमनहुमधमाहुरघोरी॥कहैचेरिसुधिअहैकिनाही॥स्वामिनिकथाकहेहुमोहिपाही॥दु
इवरदानभूपसनथाती॥मागहुआजुजुडावहुछाती॥सुतहिराजरामहिवणवासू॥देहुलेहुसवसवतिहुलासू॥भूपतिरामसपथजवक
रई॥तवमागेहुजेहिवचननटरई॥होइअकाजआजुनिशिवीते॥वचनमोरिप्रियमानहुजीतें॥दो॥वडकुघातकरिपातकिनिकहेसिको राम
पगृहजाहु॥काजसंवारेहुसजगसवसहसाजनिपतिआहु॥२३॥चौ॥कुवरिहिरानिप्राणप्रियजानी॥वारवारवडवुद्धिवषानी॥तोहिस ५
महितूनमोरसंसारा॥वहेजाततैभइसिअधारा॥जौंविधिपुरवमनोरथकाली॥करौतोहिचषुपुतरीआली॥वहुविधिचेरिहिआदरदेई॥को
पभवनगवनीकैकेई॥विपतिवीजवरषारितुचेरी॥भुइभइकुमतिकैकेईकेरी॥पाइकपटजलअंकुरजामा॥वरदोउदलदुखफलपरिनामा॥
कोपसमाजसाजिसवसोई॥राजकरतनिजकुमतिविगोइ॥राउरनगरकोलाहलहोई॥यहकुचालकछुजाननकोई॥दो॥प्रमुदितपुरनर

नारिसव सजहि सुमंगल चार ॥ एक प्रविसहि एक निर्गमहि भीर भूपदरवार ॥२४॥ चौ ॥ वाल सरवा सुनि हिय हरषाही ॥ मिलि दश पाच राम पहि
जाही ॥ प्रभु आदरहि प्रेमवस जानी ॥ पूछहि कुशल छेम मृदु वानी ॥ फिरहि भवन प्रिय आयसु पाई ॥ करत परसपर राम वडाई ॥ को रघुवीर सरिस संसा
रा ॥ शील सनेह निवाहनिहारा ॥ जेहि जेहि योनि कर्म वस भ्रमहीं ॥ तहं तहं ईश देव यह हमहीं ॥ सेवक हम स्वामी सिय नाहू ॥ होउ नात यह ओर
निवाहू ॥ अस अभिलाष नगर सव काहू ॥ कैकेय सुता हृदय अति दाहू ॥ को न कुसंगति पाइ नसाई ॥ रहै न नीच मते चतुराई ॥ दो ॥ सांझ सम
य सानन्द नृप गयउ कैकइ गेह ॥ गवनानि ठुरता निकट किय जनु धरि देह सनेह ॥२५॥ चौ ॥ कोपभवन सुनि सकुचे राउ ॥ भयवस अगहुं परै न हि
पाऊ ॥ सुरपति वसै वाहवल जाके ॥ नरपति रहहि सकल रुष ताके ॥ सो सुनि तिय रिसि गयो सुषाई ॥ देषहु काम प्रताप वडाई ॥ शूल कुलिश असि
अग नितहारे ॥ सो रतिनाथ कुसुम सर मारे ॥ सभय नरेश प्रिया पहि गयऊ ॥ देखि दशा दुख दारुण भयऊ ॥ भूमि शयन पट मोट पुराना ॥ दिए
डारि तन भूषन नाना ॥ कुमतिहि कस कुवेषता फावी ॥ अन अहिवात सूच जनु भावी ॥ जाइ निकट नृप कह मृदु वानी ॥ प्राणप्रिया केहि हेतु रिसा
नी ॥ छं ॥ केहि हेतु रानि रिसानि परसत प्राणपति हि नेवारई ॥ मानहुं सरोष भुअंग भामिनि विषम भांति निहारई ॥ दोउ वासना रसना दशन वर
मरम ठाहर देषई ॥ तुलसी नृपति भवतव्यता वस काम कौतुक पेषई ॥ सो ॥ वारवार कह राउ सुमुखि सुलोचनि पिकवचनि ॥ कारण मोहि सुना
उ गजगामिनि निज कोप कर ॥२६॥ चौ ॥ अनहित तोर प्रिया केइ कीन्हा ॥ केहि दुइ सिर केहि यम चह लीन्हा ॥ कहु केहि रंकहि करौ नरेशू ॥ कहु

अ० कां ६ केहिन्रपहिनिकारौदेसू॥सकौतोरअरिअमरौमारी॥कहाकीटवपुरेनरनारी॥जानहिमोरसुभाववरोरू॥मनतवआननचन्दचको
रू॥एयाप्राणसुतसरवसमोरे॥परिजनप्रजासकलवसतोरे॥जौंकछुकहौंकपटकरितोही॥भामिनिरामसपथसतमोही॥विहसिमांगु
मनभावतिवाता॥भूषणसजहिमनोहरगाता॥घरीकुघरीसमुझिमनदेषू॥वेगिएयापरिहरहुकुवेषू॥दो॥अससुनिमनगुनिसपथव
डिविहसिउठीमतमन्द॥भूषनसजतिविलोकिमरगुमनहुंकिरातिनिफंद॥२७॥चौ॥पुनिकहराउसुहृदजियजानी॥प्रेमपुलकिमृदुमंजु
लवानी॥भामिनिभयउतोरमनभावा॥घरघरनगरअनंदवधावा॥रामहिदेउकालियुवराजू॥सजहिसुलोचनिमंगलसाजू॥दल
किउठेउसुनिहृदयकठोरू॥जनुछुइगयउपाकवरतोरू॥ऐसिउपीरविहसितेइगोई॥चोरनारिजिमिप्रगटनरोई॥लखीनभूपक
कपटचतुराई॥कोटिकुटिलमतिगुरुसिषाई॥यद्यपिनीतिनिपुननरनाहू॥नारिचरितजलनिधिअवगाहू॥कपटसनेहवढ़ा
इवहोरी॥वोलीविहसिनयनमुहमोरी॥दो॥मांगुमांगुपैकहहुन्रपकवहुंदेहुनलेहु॥देनकहेहुवरदाननुइतेउपावतसंदेहु॥२८॥ राम ६
चौ॥जानेउमरमराउहसिकहई॥तुमहिकोहावपरमप्रियअहई॥थातीराषिनमागेहुकाऊ॥विसरिगयउमोहिभोरसुभाऊ॥झूठेहुहम
कु हिदोसजनिदेहू॥दुइकैचारिमांगिवरलेहू॥रघुकुलरीतिसदाचलिआई॥प्राणजाउवरुवचननजाई॥नहिअसत्यसमपातकपुंजा॥गिरिसम
होहिकिकोटिकगुंजा॥सत्यमूलसवसुकृतसोहाए॥वेदपुराणविदितमुनिगाए॥तेहिपररामसपतकरिआई॥सुकृतसनेहअवधिरघुराई

३= संभ्रम मुरुछि परा। न्रपकेंसे। काटेपंष परे उ षग जैसे। गर उसहमि नहि कछु कहि आवा। जनु सचान वन झपटे उ लावा ८२

वात दि ढाइ कुमति हंसि वोली॥ कुमत विहंग कुलह जनु षोली॥ दो॥ भूप मनोरथ सुभग वन सुष सुविहंग समाजु॥ भीलिनि जिमि छाडन चहति वचन भयंकर वाजु॥ २९॥ चौ॥ सुनहु प्राणपति भावत जीका॥ देहु एक वर भरतहि टीका॥ मांगौ दूसर वर कर जोरी॥ पुरवहु नाथ मनोरथ मोरी॥ तापस वेष विशेष उदासी॥ चौदह वरष राम वनवासी॥ सुनि मृदु वचन भूप उर सोकू॥ ससि कर छुवत विकल जिमि कोकू॥ विवरन भय उ निपट महिपालू॥ दामिनि हने उ मनहु तरु तालू॥ माथे हाथ मूदि दो उ लोचन॥ तनु धरि सोच लाग जनु सोचन॥ मोर मनोरथ सुरतरु फूला॥ फरत करिनि जनु हते उ समूला॥ अवधि उजारि कीन्हि कैकेई॥ दीन्हेसि अचल विपति कै नेई॥ दो॥ कवने अवसर का भय उ गय उ नारि विश्वास॥ जोग सिद्ध फल समय जिमि जतिहि अविद्या नास॥ ३०॥ चौ॥ एहि विधि रा उ मनहि मन झंषा॥ देषि कुभांति कुमति मन मंषा॥ भरत कि रा उर पूत न होहीं॥ आनेहु मोल वेसाहि कि मोही॥ जो सुनि सर अस लाग तुम्हारे॥ काहे न वोलेहु वचन संभारे॥ देहु उतर अनु कहहु कि नाही॥ सत्यसंध तुम्ह रघुकुल माही॥ देन कहेहु अव जनि वर देहू॥ तजहु सत्य जग अपजस लेहू॥ सत्य सराहि कहेहु वर देना॥ जानहु लेइहि मांगि चवेना॥ शिवि दधीच वलि जो कछु भाषा॥ तनु धनु तजे उ वचन पन राषा॥ अति कटु वचन कहति कैकेई॥ मानहु लोन जरे पर देई॥ दो॥ धर्म धुरंधर धीर धरि नयन उघारे उ रा उ॥ सिर धुनि लीन्हि उसास असि मारेसि मोहि कुठा उ॥ ३१॥ चौ॥ आगे देषि जरत रिसि भारी॥ मनहु रोष तरु आरि उ घारी॥ मूठि कुवुद्धि धार निठुराई॥ धरी कूवरी सान वनाई॥ लखी महीप कराल कठोरा॥ सत्य कि जीवन लेइहि मोरा॥ वोले उ रा उ कठिन करि छाती॥ वानि सविनय न तासु हि सुहाती॥ प्रिया वचन कस कहसि कुभांती॥ पीर प्रतीति प्रीति करि हाती॥ मोरे भरत राम दुइ आ

अ॰का॰ षी॥ सत्य कहौं धरि शंकर साषी॥ अवसि दूत मैं पठउव प्राता॥ ऐहहि वेगि सुनत दोउ भ्राता॥ सुदिन सोधि सव साज सजाई॥ दोउ भरत कहं
७ राज वजाइ॥ दो॥ लोभ न रामहि राज कर वहुत भरत पर प्रीति॥ मैं वड छोट विचारि जिय करत रहेउं न्रप नीति॥ ३२॥ चौ॥ राम सपथ शत कहौं सुभाऊ
राममातु कछु कहेउ न काऊ॥ रिसि परिहरु अव मंगल साजू॥ कछु दिन गए भरत युवराजू॥ एकहि वात मोहि दुख लागा॥ वर दूसर असमंजस
मागा॥ अजहूं हृदय जरत तेहि आंचा॥ रिसि परिहास कि साच हु साचा॥ कहु तजि रोष राम अपराधू॥ सव कोउ कहै राम वड साधू॥ तहूं
सराहसि करसि सनेहू॥ अव सुनि मोहि भयउ संदेहू॥ जासु सुभाउ अरिहि अनुकूला॥ सो किमि करिहि मातु प्रतिकूला॥ दो॥ प्रिया हास रिसि प
रिहरहि मांगु विचारि विवेक॥ जेहि देषौं अव नयन भरि भरत राज अभिषेक॥ ३३॥ चौ॥ जिऔं मीन वरु वारि विहीना॥ मनि विनु फनिक जिऔं
दुखदीना॥ कहौं सुभाव न छल मन माहीं॥ जीवन मोर राम विनु नाहीं॥ समुझि देषु जिय प्रिया प्रवीना॥ जीवन राम दरस आधीना॥ सु
नि म्रदु वचन कुमति अति जरई॥ मनहु अनल आहुति घृत परई॥ कहै करहु किन कोटि उपाया॥ इहां न लागिहि राउरि माया॥ राम
देहु कि लेहु अजस करि नाहीं॥ मोहि न वहुत परिपंच सोहाहीं॥ राम साधु तुम साधु सयाने॥ राममातु भलि सव पहिचाने॥ जस कौशिल्या मो ७
र भल ताका॥ तस फलु उन्हहि देउं करि साका॥ दो॥ होत प्रात मुनिवेष धरि जौं न राम वन जांहि॥ मोर मरन राउर अजस न्रप समुझिय मन मा
हि॥ ३४॥ चौ॥ अस कहि कुटिल भई उठि ठाढ़ी॥ मानहुं रोष तरंगिनि वाढ़ी॥ पाप पहार प्रगट भई सोई॥ भरी क्रोध जल जाइ न जोई॥ दोउ वर कू

लकठिनहठधारा॥भवरकूवरीवचनप्रचारा॥ढाहतभूपनृपतरुमूला॥चलीविपतिवारिधिअनुकूला॥लखीनरेशवातसवसाची॥तियमिसुमी
चुसीसपरनाची॥गहिपदविनयकीन्हवैठारी॥जनिदिनकरकुलहोहिकुठारी॥मांगुमांथअवहीदेहुंतोही॥रामविरहजनिमारसिमोही॥राखुरामक
हजेहितेहिभांती॥नाहितजरहिजनमभरिछाती॥दो॥देखीव्याधिअसाधिनृपपरेधरणिधुनिमाथ॥कहतपरमआरतवचनरामरामरघुनाथ॥३५॥चौ
व्याकुलराउसिथिलसवगाता॥करिनिकलपतरुमनहुंनिपाता॥कंठसूषमुखआवननवानी॥जनुपाठीनदीनविनुपानी॥पुनिकहुकटुक
ठोरकैकेइ॥मनहुंघावमहमाहुरदेई॥जौंअंतहुअसकरतवरहेउ॥मांगुमांगुतुहकेहिवलकहेउ॥दुइकिहोंहिएकसमयभुआलू॥हसवठठा
इफुलाउवगालू॥दानीकहाउवअरुकृपिनाई॥होइकिषेमकुशलरउताई॥छाडहुवचनकीधीरजधरहू॥जनिअवलाइमिकरुणाकरहू॥त
नुतियतनयधामधनधरनी॥सत्यसंधकहतृणसमवरनी॥दीन्हदानफिरिमागासिराजा॥परिहरिवेदलोककीलाजा॥होतप्रातसुतवनहि
नजाई॥चौथेपननृपसुजसनसाइ॥दो॥मरमवचनसुनिराउकहकहुकछुदोषनतोर॥लागेउतोहिपिशाचजिमिकालकहावतमोर॥३६॥चौ
चहतनभरतभूपतिहिभोरे॥विधिवसिकुमतिवसीजियतोरे॥सोसवमोरपापपरिनामू॥भयउकुठाहरजेहिविधिवामू॥सुवसवसिहिफिरिआवधि
सोहाई॥सवगुणधामरामप्रभुताई॥करिहहिभाइसकलसेवकाई॥होइहितिहुंपुररामवडाई॥तोरकलंकमोरपछिताऊ॥मुएहनमिटहिनजाइहिका
ऊ॥अवतोहिनीकलागुकरुसोई॥लोचनओटवइठुमुहगोई॥जौलगिजिओंकहौंकहौंकरजोरी॥तौलगिजनिकछुकहसिवहोरी॥फिरिप

अ॰ कां
८

छैतेहसि अंतअभागी॥ मारसि गाइ नाहनूलागी॥ दो॥ परेउ राउ कहि कोटिविधि काहे करसि निदान॥ कपट सयानि न कहति कछु जागति
मनहुमसान॥ ३७॥ चौ॥ रामराम कहि कंप्रभु आल्ह॥ जनुविनुपंषविहंगविहाल्ह॥ हृदय मनाव भोर जनि होई॥ रामहि जाइ कहे जनि कोई॥
उदय करहु जनि रवि कुल गुर॥ अवधि विलोकि सूल होइहि उर॥ भूप प्रीति कैकेइ कठिनाई॥ उभय अवधि विधि रचीवनाई॥ विलपत नृ
पहि भयउ भिनुसारा॥ वीना वेनु शंख धुनि द्वारा॥ पढहि भाट गुन गावहि गायक॥ सुनत नृपहि जनु लागत सायक॥ मंगल सकल सोहांहि
न कैसें॥ सहगामिहि विभूषन जैसें॥ तेहि निशि नीद परी नहि काहू॥ राम दरस लालसा उछाहू॥ दो॥ द्वार भीरि सेवक सचिव कहहि उदित रवि दे
षि॥ जागेउ अजहुं न अवधिपति कारण काव नविशेषि॥ ३८॥ चौ॥ पछिले पहर भूप नित जागा॥ आजु हमहि वड अचरज लागा॥ जाग सुमंत ज
गावहु राई॥ कीजिय काज रजायसु पाई॥ गये सुमंत तव राउर मांही॥ देषि भयावन जात डराहीं॥ धाइ षाइ जनु जाइ न हेरा॥ मानहु विपति विषाद व
सेरा॥ पूछे कोउ न उत्तर देई॥ गए जिहि भवन भूप कैकेई॥ कहि जै जीव वइठ सिर नाई॥ देषि भूप गति गयउ सुषाई॥ सोच विकल विवरन महि परेऊ॥
मानहु कमल मूल परिहरेऊ॥ सचिव सभीत सकै नहि पूछी॥ वोली अशुभ भरी सुभ छूछी॥ दो॥ परी न राजहि नीद निशि हेतु जान जगदीश॥ राम
राम रटि भोर कियकहै न मर्म महीश॥ ३९॥ चौ॥ आनहु रामहि वेगि वुलाई॥ समाचार तव पूछेहु आई॥ चलेउ सुमंत राउ रुष जानी॥ लखी कु
चाल कीन्ह कछु रानी॥ सोक विकल मग परै न पाऊ॥ रामहि वोलि कहि हे का राऊ॥ उर धरि धीरज गयउ दुआरे॥ पूछहि सकल देषि मन मारे॥ स

ल

राम
८

चौ॥
समाधानकरिसोसवहीका॥गयउजहांदिनकरकुलटीका॥रामसुमंतहिआवतदेषा॥आदरकीन्हपितासमलेरवा॥निरषिवदनकहिभूपरजाई
रघुकुलदीपहिचलेलेवाई॥रामकुभांतिसचिवसंगजांहीं॥देषिलोगजहंतहंविलषांहीं॥दो॥जाइदीषरघुवंशमनिनरपतिनिपटकुसाजु॥
सहमिपरेउलरिवसिंहिनिहिमनहुंवृद्धगजराज॥४०॥सूषहिअधरजरहिसवअंगू॥मनहुदीनमनिहीनभुअंगू॥सरुषसमीपदेषिकै
केई॥मानहुंमीचुघरीगनिदेई॥करुणामयमृदुरामसुभाऊ॥प्रथमदीषदुरवसुनानकाऊ॥तदपिधीरधरिसमयविचारी॥पूछीमधुर
वचनमहतारी॥मोहिकहुमातुतातदुरवकारण॥करियजतनजेहिहोइनिवारण॥सुनहुरामसवकारणएहु॥राजहितुम्हपरवहुतसनेहू॥
देनकहेन्हिमोहिदुइवरदाना॥मागेउजोकछुमोहिसुहाना॥सोसुनिभयउभूपहियसोचू॥छाडिनसकहितुम्हारसकोचू॥दो॥सुतसनेहइतव
चनउतशंकटपरेउनरेश॥सकहुतआयसुधरहुसिरमेटहुकठिनकलेश॥४१॥चौ॥निधरकवैठिकहैकटुवानी॥सुनतकठिनता
अतिअकुलानी॥जीभिकमानवचनसरनाना॥मनहुमहीपमृदुलच्छसमाना॥जनुकठोरपनधरेसरीरा॥सिषैधनुषविद्यावरवीरा
सवप्रसंगरघुपतिहिसुनाई॥वैठिमनहुतनुधरिनिठुराई॥मनमुसुकाइभानुकुलभानू॥रामसहजआनन्दनिधानू॥वोलेवचनविग
तसवदूषण॥मृदुमंजुलजनुवागविभूषण॥सुनुजननीसोसुतवडभागी॥जोपितुमातुवचनअनुरागी॥तनयमातुपितुपोषनिहारा॥दु
र्लभजननिसकलसंसारा॥दो॥मुनिगणमिलनविशेषवनसवहिभांतिहितमोर॥तेहिपरपितुआयसुवहुरिसंमतजननीतोर॥४२॥चौ॥ न

अ॰ कां भरतप्राणप्रियपावहिराजू॥ विधिसवविधिमोहिसनमुखआजू॥ जौंनजांउवनऐसेहुकाजा॥ प्रथमगनियमोहिमूढसमाजा॥ सेव
९ हिअरंडुकलपतरुत्यागी॥ परिहरिसुधालेहिविषमांगी॥ तेउनपाईअससमयचुकाहीं॥ देखुविचारिमातुमनमाहीं॥ अंवएकदुखव
डमोहिविशेषी॥ निपटविकलनरनायकदेषी॥ थोरहिवातपितहिदुखभारी॥ होतिप्रतीतिनमोहिमहतारी॥ राउधीरगुणउदधिअगाधू
भामोहितेंकछुवडअपराधू॥ जातेंमोहिनकहतकछुराऊ॥ मोरिसपथतोहिकहसतभाऊ॥ दो॥ सहजसरलरघुवरवचनकुमतिकुटिल
करिजान॥ चलैजोंकजिमिवक्रगतियद्यपिसलिलसमान॥ ४३॥ चौ॥ वहसीरानीरामरुषपाई॥ वोलीकपटसनेहजनाई॥ सपथ
तुम्हारभरतकैआना॥ हेतुनदूसरमैंकछुजाना॥ तुम्हअपराधजोगनहितात॥ जननीजनकवंधसुखदाता॥ रामसत्यसवजोकछु
कहहू॥ तुमपितुमातुवचनरतअहहू॥ पितहिवुझाइकहहुवलिसोई॥ चौथेपनजेहिअजसनहोई॥ तुमसमसुअनसुकृतजेहिदीन्हे॥
उचितनतासुनिरादरकीन्हे॥ लागहिंकुमुखवचनशुभकैसें॥ मगहगयादिकतीरथजैसे॥ रामहिमातुवचनसवभाए॥ जिमिसुरसरिगतस राम ९
न लिलसोहाये॥ दो॥ गइमूर्छारामहिसुमिरिनृपफिरिकरवटलीन्ह॥ सचिवरामआगमनकहिविनयसमैसमकीन्ह॥ ४४॥ चौ॥ अवनि व
यअकनिरामपगुधारे॥ धरिधीरजतवनयनउघारे॥ सचिवसंभारिराउवैठारे॥ चरनपरतनृपरामनिहारे॥ लिएसनेहविकलउरलाई॥
गईमनिमनहुंफनिकफिरिपाई॥ रामहिचितैरहानरनाहू॥ चलाविलोचनवारिप्रवाहू॥ सोकविवसकछुकहैनपारा॥ हृदयलगावतवा

रहिवारा॥ विधिहिमनाउराउमनमांहीं॥ जेहिरघुनाथनकाननजांहीं॥ सुमिरिमहेशहिकहैनिहोरी॥ विनतीसुनहुसदाशिवमोरी॥ आसु॰
तोषतुह्मअवढरदानी॥ आरतिहरहुदीनजनजानी॥ दो॰॥ तुह्मप्रेरकसवकेहृदयसोमतिरामहिदेहु॥ वचनमोरतजिरहहिघरपरिहरिशीलस
नेहु॥ ४५॥ चौ॰॥ अजसहोउजगसुजसनसाऊ॥ नरकपरोंवरुसुरपुरजाऊ॥ सवदुखदुसहसहावहुमोही॥ लोचनओटरामजनिहोही॥ असमन
गुनैराउनहिवोला॥ पीपरपातसरिसमनडोला॥ रघुपतिपितहिप्रेमवसजानी॥ पुनिकछुकहीमांतुअनुमानी॥ देसकालऔसरअनुसारी॥ वोलेव
चनविनीतविचारी॥ तातकहौंकछुकरौढिठाई॥ अनुचितछमवजानिलरिकाई॥ अतिलघुवातलागिदुखपावा॥ काहुनमोहिकहिप्रथमजना
वा॥ देखिगोसांइहिपूछेउमाता॥ सुनिप्रसंगभएसीतलगाता॥ दो॰॥ मंगलसमयसनेहवससोचपरिहरियतात॥ आयसुदेइयहरषहियकहिपुल
केप्रभुगात॥ ४६॥ चौ॰॥ धन्यजन्मजगतीतलतासू॥ पितहिप्रमोदचरितसुनिजासू॥ चारिपदारथकरतलताके॥ प्रियपितुमातुप्राणसमजाके॥ आ
यसुपालिजनमफलपाइ॥ ऐहोवेगिहिहोउरजाई॥ विदामांतुसनआवौंमांगी॥ चलिहोवनहिवहुरिपगलागी॥ असकहिरामगवनतवकी॰
न्हा॥ भूपसोकवसउतरनदीन्हा॥ नगरव्यापिगइवातसुतीछी॥ छुवतचढीजनुसवतनविछी॥ सुनिभयेविकलसकलनरनारी॥ वेलिवि॰
टपजनुदेखिदवारी॥ जोजहंसुनैधुनैसिरसोई॥ वडविषादनहिधीरजहोइ॥ दो॰॥ मुखसूखहिलोचनस्रवहिसोकनहृदयसमाई॥ मनहुं॰
करुणरसकटकइउतरीअवधिवजाइ॥ ४७॥ चौ॰॥ मिलेहिमांझविधिवातविगारी॥ जहंतहंदेहिकैकइहिगारी॥ एहिपापिनिहिवूझिकापरेऊ

अ॰ कां॰ छाएभवनपरपावकधरेऊ॥ निजकरनयनकाढिचहदीषा॥ डारिसुधाविषिचाहतचीषा॥ कुटिलकठोरकुबुद्धिअभागी॥ भइरघुवंशवेनुवनआ
१० गी॥ पालववैठिपेडएइकाटा॥ सुषमहसोकठाटधरिठाटा॥ सदारामएहिप्रानसमाना॥ कारनकवनकुटिलपनठाना॥ सत्यकहहिकविनारि
२ सुभाऊ॥ सवविधिअगमअगाधदुराऊ॥ निजप्रतिविंबुवरुकुगहिजाई॥ जानिनजाइनारिगतिभाई॥ दो॰॥ काहनपावकजारिसककानसमु
द्रसमाइ॥ कानकरैअवलाप्रवलकेहिजगकालनषाइ॥ ४८॥ चौ॰॥ कासुनाइविधिकाहसुनावा॥ कादिषाइचहकाहदिषावा॥ एककहहिभल
भूपनकीन्हा॥ वरविचारिनहिकुमतिहिदीन्हा॥ जोहठिभयउसकलदुखभाजनु॥ अवलाविवसज्ञानगुणगाजनु॥ एकधरमपरमितिपहिचाने
न्रपहिदोसनहिदेहिसयाने॥ शिवदधीचहरिचंदकहानी॥ एकएकसनकहहिवषानी॥ एकभरतकरसंमतकहही॥ एकउदासभावसुनिर
हही॥ काननमूंदिकररदगहिजीहा॥ एककहहियहवातअनीहा॥ सुकृतजाइअसकहततुम्हारे॥ रामभरतकहप्राणपियारे॥ दो॰॥ चंदुचवै
वरुअनलकनसुधाहोइविषतूल॥ सपनेहुकवहुंनकहहिकछुभरतरामप्रतिकूल॥ ४९॥ चौ॰॥ एकविधातहिदूषनदेही॥ सुधादेषाइ राम १०
दीन्हविषजेही॥ षरभरनगरसोचसवकाहू॥ दुसहदाहउरमिटाउछाहू॥ विप्रवधूकुलमान्यजठेरी॥ जेप्रियपरमकैकईकेरी॥ लगीदेन
सिषशीलसराही॥ वचनवानसमलागहिताही॥ भरतनपृयमोहिरामसमाना॥ सदाकहहुयहसवजगजाना॥ करहुरामपरसहजसनेहू
केहिअपराधआजुवनदेहू॥ कवहुंनकिएहुसवतिआरेसू॥ प्रीतिप्रतीतिजानसवदेसू॥ कौशिल्यंअवकाहविगारा॥ तुम्हजेहिलागि

वज्रपुरपारा॥दो॥सीयकिपियसंगपरिहरिहिलषनकिरहिहहिधाम॥राजकीभुंजवभरतपुरनृपकिजियहिविनुराम॥५०॥चौ॥असविचा
रिउरछाडहुकोहू॥सोककलंककोपिजनिहोहू॥भरतहिअवसिदेहुयुवराजू॥काननकहारामकरकाजू॥नाहिनरामराजकेभूषे॥धर्मधुरी
नविषैयरसरूषे॥गुरुग्रहवसहिरामतजिगेहू॥नृपसनअसवरदूसरलेहू॥जौंनहिलगिहहुकहेहमारे॥नहिलागिहिकछुहाथतुह्मारे॥जो
परिहासकीन्हकछुहोई॥तौकहिप्रगटजनावहुसोई॥रामसरिससुतकाननयोगू॥काहकहिहिसुनितुह्मकहेलोगू॥उठहूवेगिसोइकरहु
उपाई॥जेहिविधिसोककलंकनसाई॥छंद॥जेहिभांतिसोककलंकजाइउपाइकरिकुलपालही॥हठिफेरुरामहिजातवनजनिवातदूस
रचालही॥जिमिभानुविनुदिनप्राणविनुतनुचन्द्रविनुजिमिजामिनी॥तिमिअवधतुलसीदासप्रभुविनुसमुझिधौजियभामिनी॥सो॥स
खिन्हसिषावनदीन्हसुनतमधुरपरिनामहित॥तेहिकछुकाननकीन्हकुटिलप्रवोधीकूवरी॥५१॥चौ॥उतरुनदेइदुसहरिसिरूषी॥मृगि
न्हचितवजनुवाघिनिभूषी॥व्याधिअसाधिजानितिन्हत्यागी॥चलीकहतमतिमंदअभागी॥राजकरतएहिदैवविगोई॥कीन्हेसिअस
जसकरैनकोई॥एहिविधिविलपहिपुरनरनारी॥देहिकुचालिहिकोटिकगारी॥जरहिविषमजरलेहिउसांसा॥कवनरामविनुजीवन
आसा॥विपुलवियोगप्रजाअकुलानी॥जनुजलचरगणसूषतपानी॥अतिविषादवसलोगलुगाई॥गएमातुपहरामगोसांइ॥मुखप्रसं
नचितचौगुनचाऊ॥मिटासोचजनिराषैराऊ॥दो॥नवगयंदरघुवंशमनिराजअलानसमान॥छूटिजानवनगवनसुनिउरअनंदअधिका

अ॰का॰ ११ न॥ चौ॥ रघुकुलतिलकजोरिदोउहाथा॥ मुदितमातुपदनाएउमाथा॥ दीन्हअसीसलाइउरलीने॥ भूषनवसननेछावरकीन्हे॥
वारवारमुखचूंवतिमाता॥ नयननेहजलपुलकितगाता॥ गोदराखिपुनिहृदयलगाए॥ श्रवतप्रेमरसपयदसोहाए॥ प्रेमप्रमोदनकछु
कहिजाई॥ रंकधनदपदवीजनुपाई॥ सादरसुंदरवदननिहारी॥ वोलीमधुरवचनमहतारी॥ कहहुतातजननीवलिहारी॥ कवहिलगन
मुदमंगलकारी॥ सुकृतशीलसुखसींवसोहाई॥ जनमलाभकेअवधिअघाई॥ दो॥ जेहिचाहतनरनारिसवअतिआरतएहिभांति॥ जिमि
चाहतचातकतृषितवृष्टिसरदरितुस्वाति॥ ५३॥ चौ॥ तातजाउवलिवेगिअन्हाऊ॥ जोमनभावमधुरकछुषाहू॥ पितुसमीपतवजाएहुभै
या॥ भइवडिवारजाइवलिमैया॥ मातुवचनसुनिअतिअनुकूला॥ जनुसनेहसुरतरुकेफूला॥ सुखमकरंदभरेश्रीमूला॥ निरषिरामम
नभवरुनभूला॥ धर्मधुरीनधर्मगतिजानी॥ कहेंमातुसनअतिमृदुवानी॥ पितैदीन्हमोहिकाननराजू॥ जहंसवभांतिमोरवडकाजू॥
आयसुदेहिमुदितमनमाता॥ जेहिमुदमंगलकाननजाता॥ जनिसनेहवसिडरपसिभोरे॥ आनंदअंवअनुग्रहतोरे॥ दो॥ वरषचारिदश
विपिनवसिकरिपितुवचनप्रमान॥ आइपाइपुनिदेषिहोमनजनिकरसिमलान॥ ५४॥ चौ॥ वचनविनीतसुनतरघुवरके॥ सरसमलगे राम ११
मातुउरकरके॥ सहमिसुखीसुनिसीतलवानी॥ जिमिजवासपरेपावसपानी॥ कहिनजाइकछुहृदयविषादू॥ मनहुमृगीसुनिकेहरिना
दू॥ नयनसजलतनथरथरकांपी॥ मांजहिषाइमीनजनुमापी॥ धरिधीरजसुतवदननिहारी॥ गदगदवचनकहतिमहतारी॥ तातपितहि

तुम्ह प्रान पिआरे॥ देषि मुदित निति चरित तुम्हारे॥ राज देन कह सुभ दिन साधा॥ कहेउ जैंन वन केहि अपराधा॥ तात सुनावहु मोहि नि-
दानू॥ को दिनकर कुल भयउ कृसानू॥ दो॥ निरषि राम रुष सचिव सुत कारण कहेउ बुझाइ॥ सुनि प्रसंग रहि मूक जिमि दशा वरनि नहि जाइ॥
५५॥ चौ॥ राषि न सकै न कहि सक जाहू॥ दुहूं भांति उर दारुण दाहू॥ लिखत सुधाकर गा लिखि राहू॥ विधि गति वाम सदा सव काहू॥ धर्म सनेह
उभय मति घेरी॥ भइ गति सांप छुछुंदरि केरी॥ राषौ सुतहि करौ अनरोधू॥ धर्म जाइ अरु वंधु विरोधू॥ कहौं जान वन तौ वडि हानी॥ संकट सोच
विवस भइ रानी॥ वहुरि समुझि तिय धर्म सयानी॥ राम भरत दोउ सुत सम जानी॥ सरल सुभाव राम महतारी॥ वोली वचन धीर धरि भारी॥ तात
जाउ वलि कीन्हेहु नीका॥ पितु आयसु सव धर्म क टीका॥ दो॥ राज देन कहि दीन्ह वन मोहि न सोच दुख लेश॥ तुम विनु भरतहि भूपतिहि प्रज-
हि प्रचंड कलेश॥ ५६॥ चौ॥ जौं केवल पितु आयसु ताता॥ तौ जनि जाहु जानि वडि माता॥ जौं पितु मातु कहेउ वन जाना॥ तौ कानन शत अव-
धि समाना॥ पितु वन देव मातु वन देवी॥ षग मृग चरण सरोरुह सेवी॥ अंतहु उचित न्रपहि वनवासू॥ वय विलोकि हिय होइ हरासू॥ वड भागी वन
[illegible]न अवधि अभागी॥ जो रघुवंस तिलक तुम्ह त्यागी॥ जौं सुत कहौं संग मोहि लेहू॥ तुम्हरे हृदय होइ संदेहू॥ पूत परम प्रिय तुम सवही के॥ प्राण प्रा-
ण के जीवन जी के॥ ते तुम कहहु मात वन जाऊं॥ मै सुनि वचन वैठि पछिताऊं॥ दो॥ एहि विचारि नहि करौ हठ झूठि सनेह वढाइ॥ मानि मातु कर नात
वलि सुरति विसरि जनि जाइ॥ ५७॥ चौ॥ देव पितर सव तुमहि गोसाइ॥ राषहु पलक नयन की नाई॥ अवधि अंवु प्रिय परिजन मीना॥ तुम्ह करुणाकर धर्म

अ॰कां
१२

धरीना॥ असविचारिसोइकरहुउपाई॥ सवहिजिअतजेहिभेटहुआई॥ जाहुसुखेनवनहिवलिजाऊं॥ करिअनाथजनपरिजनगांऊ॥
सवकरआजुसुकृतफलवीता॥ भयउकरालकालविपरीता॥ वहुविधिविलपिचरणलपटानी॥ परमअभागिनिआपुहिजानी॥ दारुणदुस
हदाहउरव्यापा॥ वरनिनजाइविलापकलापा॥ रामउठाइमांतुउरलाई॥ कहिमृदुवचनवहुरिसमुझाई॥ दो॥ समाचारतेहिसमयसु
निसीयउठीअकुलाइ॥ जाइसासुपगकमलयुगवंदिवइठिसिरनाइ॥ ५८॥ चौ॥ दीन्हअसीससासुमृदुवानी॥ अतिसुकुमारिदेषिअकुला
नी॥ वैठिनमितमुखसोचतिसीता॥ रूपरासिपतिप्रेमपुनीता॥ चलनचहतवनजीवननाथू॥ केहिसुकृतसनहोइहिसाथू॥ कीतनुप्राणकि
केवलप्राना॥ विधिकरतवकछुजाइनजाना॥ चारुचरणनषलीषतधरणी॥ नूपुरमुखरमधुरकविवरणी॥ मनहुप्रेमवसिविनतीकरही
हमहिसीयपदजनिपरिहरही॥ मंजुविलोचनमोचतवारी॥ वोलीदेषिराममहतारी॥ तातसुनहुसियअतिसुकुमारी॥ सासुससुरपरिज
नहिपियारी॥ दो॥ पिताजनकभूपालमनिससुरभानकुलभानु॥ पतिरविकुलकैरवविपिनविधुगुणरूपनिधानु॥ ५९॥ चौ॥ मैंपुनिपुत्रवधू
एयपाई॥ रूपरासिगुणशीलसोहाई॥ नयननपुतरिकरिप्रीतिवढाई॥ राषेउप्राणजानकिहिलाई॥ कनकवेलिजिमिवहुविधिजाली॥ सींचिसनेह
सलिलप्रतिपाली॥ फूलतफलतभएविधिवामा॥ जानिनजाइकाहपरिनामा॥ पलंगपीठितजिगोदहिंडोरा॥ सियनदीन्हपगअवनिकठोरा॥
जीवनमूरिजिमिजोगवतरहऊं॥ दीपवातिनहिटारणकहऊं॥ सोसियचलनचहतिवनसाथा॥ आयसुकाहहोइरघुनाथा॥ चंदकिर

राम
१२

णरसरसिकचकोरी॥ रविरुषनयनसकैकिमिजोरी॥ दो॥ करिकेहरिनिश्चरचरहिंदुष्टजंतुवनभूरि॥ विषवाटिकाकिसोहसुतसुभगस जी
वनमूरि॥ ६०॥ चौ॥ वनहितकोलकिरातकिशोरी॥ रचीविरंचिविषयासुखभोरी॥ पाहनक्रिमिजिमिकठिनसुभाऊ॥ तिन्हहिकलेशनकानन
काऊ॥ केतापसतियकाननयोगू॥ जिन्हतपहेतुतजासवभोगू॥ सियवनवसिहितातकेहिभांती॥ चित्रलिखितकपिदेषिडराती॥ सुरसर
सुभगवनजवनचारी॥ डावरयोगकिहंसकुमारी॥ असविचारिजसआयसुहोई॥ मैंसिषदेउजानकिहिसोई॥ जौंसियभवनरहैक
हअंबा॥ मोहकहहोइप्राणअवलंवा॥ सुनिरघुवीरमांतुप्रियवानी॥ शीलसनेहसुधाजनुसानी॥ दो॥ कहिप्रियवचनविवेकमयकीन्ह
मांतुपरितोष॥ लगेप्रवोधनजानकिहिप्रगटिविपिनगुणदोष॥ ६१॥ चौ॥ मातुसमीपकहतसकुचांहीं॥ वोलेसमोसमुझिमनमांही॥ राजकुमा
रिसिषावनसुनहू॥ आनभांतिजियजनिकछुगुनहू॥ आपनमोरनीकजौंचहहू॥ वचनहमारमानिग्रहरहहू॥ आयसुमोरसासुसे
व वकाई॥ सोविधिभामिनिभवनभलाई॥ एहितेंअधिकधर्मनहिदूजा॥ सादरसासुससुरपदपूजा॥ जवजवमांतुकरिहिसुधिमोरी॥ होइहिप्रे
मविकलमतिभोरी॥ तवतवतुमकहिकथापुरानी॥ सुंदरिसमुझायहुमृदुवानी॥ कहौंसुभावसपथशतमोही॥ सुमुखिमातुहितराषौंतोही॥ दो॥
गुरुश्रुतिसंमतधर्मफलपाइयविनहिकलेश॥ हठवससवसंकटसहेउगालवनहुषनरेश॥ ६२॥ चौ॥ मैंपुनिकरिप्रमानपितुवानी॥ वेगिफिरव
सुनिसुमुखीसयानी॥ दिवसजातनहिलागिहिवारा॥ सुंदरसिषवनसुनहुहमारा॥ जोहठकरहुप्रेमवसवामा॥ तोतुमदुखपाइवपरिनामा॥ का

अ॰कां ननकठिनभयंकरभारी॥घोरघामहिमवारिबयारी॥कुशकंटकमगकांकरनाना॥चलवपयादेबिनुपदत्राना॥चरणकमलमृदुमं
१३ जुतुम्हारे॥मारगकठिनभूमिधरभारे॥कंदरषोहनदीनदनारे॥अगमअगाधनजाहिनिहारे॥भालुवाघवृककेहरिनागा॥करहिनाद
सुनिधीरजभागा॥दो॥भूमिशयनवलकलवसनअशनकंदफलमूल॥तेकिसदासवदिनमिलहिसमैसमयअनकूल॥६३॥चौ॥
नरअहाररजनीचरकरहीं॥कपटवेषविधिकोटिकधरहीं॥लागेअतिपहारकपानी॥विपिनिविपतिनहिजाइवषानी॥व्यालकरालवि
हगवनघोरा॥निसिचरनिकरनारिनरचोरा॥डरपहिधीरगहनसुधिआए॥मृगलोचनितुम्हभीरुसुभाए॥हंसगवनितुम्हनहिवनयो
ग॥सुनिअपजसमोहिदेइहिलोगू॥मानससलिलसुधाप्रतिपाली॥जिअइकिलवणपयोधिमराली॥नवरसालवणविहरणशीला॥
सोहकिकोकिलविपिनकरीला॥रहहुभवनअसहृदयविचारी॥चंद्रवदनिदुखकाननभारी॥दो॥सहजसुहृदगुरुस्वामिसिषजो
नकरैसिरमानि॥सोपछिताइअघाइउरअवसिहोइहितहानि॥६४॥चौ॥सुनिमृदुवचनमनोहरपियके॥लोचनललितभरेजलल राम
सियके॥सीतलसिषदाहकभैकैसें॥चकइहिसरदचांदनीजैसें॥उतरुनआवाविकलवैदेही॥तजनचहतसुचिस्वामिसनेही १३
वरवसरोकिविलोचनवारी॥धरिधीरजउरअवनिकुमारी॥तजिसकोचगुनिवियतिनिदान्हू॥कुमुदिनिसुखनचंदविनुजान्हू॥
लागिसासुपगकहकरजोरी॥छमविदेविवडिअविनयमोरी॥दीन्हप्राणपतिमोहिसिषसोई॥जेहिविधिमोरपरमहितहोई॥

मै पुनि समुझि दीख मन मांहीं॥ पिय वियोग सम दुख जग नाही॥ दो॥ प्राण नाथ करुणायतन सुंदर सुखद सुजान॥ तुम विनु रघुकुल कुमु
द विधु सुरपुर नर्क समान॥ ६५॥ चौ॥ मातु पिता भगिनी प्रिय भाई॥ प्रिय परिवार सुहृद समुदाई॥ सासु ससुर गुरु सजन सहाई॥ सुत सुंदर सु
सील सुखदाई॥ जह लगि नाथ नेह अरु नाते॥ पिय विनु तियहि तरणिहु ते ताते॥ तनु धनु धाम धरणि पुर राजू॥ पति विहून सब सोक समाजू॥
भोग रोग सम भूषण भारू॥ यम यातना सरिस संसारू॥ प्राण नाथ तुम विनु जग माहीं॥ मो कहं सुखद कतहुं कछु नाही॥ जिय विनु देह नदी
विनु वारी॥ तैसिअ नाथ पुरुष विनु नारी॥ नाथ सकल सुख साथ तुह्मारे॥ सरद विमल विधु वदन निहारे॥ दो॥ षग मृग परिजन नग
र वन वलकल विमल दुकूल॥ नाथ साथ सुरसदन सम परण साल सुख मूल॥ ६६॥ चौ॥ वनदेवी वनदेव उदारा॥ करिहहि सासु ससुर
सम सारा॥ कुश किशलय साथरी सोहाई॥ प्रभु संग मंजु मनोज तुराई॥ कंद मूल फल अमिय अहारू॥ अवध सौध शत सरिस पहारू॥
छिनु छिनु प्रभु पद कमल विलोकी॥ रहिहौ मुदित दिवस जिमि कोकी॥ वन दुख नाथ कहे वहुतेरे॥ भय विषाद परिताप घनेरे॥ प्रभु वियोग लव
लेश समाना॥ सव मिलि होहि न कृपानिधाना॥ अस जिय जानि सुजान सिरोमनि॥ लेइअ संग मोहि छाडिअ जनि॥ विनती वहुत करौ का स्वा
मी॥ करुणामय उर अंतरजामी॥ दो॥ राषिय अवधि जो अवधि लगि रहित न जानिए प्रान॥ दीनवंधु सुंदर सुखद शील सनेह निधान॥ ६७॥ चौ॥
मोहि मग चलत न होइहि हारी॥ छिनु छिनु चरण सरोज निहारी॥ सवहि भांति पिय सेवा करिहौं॥ मारग जनित सकल श्रम हरिहौं॥ पाय पषा

अ॰कां॰ रिवइठितनरुछाहीं॥कारिहेंवावमुदितमनमांहीं॥श्रमकनसहितस्यामतनदेषे॥कहिदुखसमौप्राणपतिपेषे॥सममहितृणतरुपल्ल
१४ वडासी॥पायपलोटिहिसवनिशिदासी॥वारवारमृदुमूरतिजोही॥लागिहिताततिवयारिनमोही॥कोप्रभुसंगमोहिचितवनिहारा॥
सिंहवधूहिजिमिससकसियारा॥मैंसुकुमारिनाथवनजोगू॥तुम्हहिउचिततपमोकहभोगू॥दो॥ऐसेउवचनकठोरसुनिजौंन
हृदयविलगान॥तौप्रभुविषमवियोगदुखसहिहहिपावरप्रान॥६८॥चौ॥असकहिसीयविकलभइभारी॥वचनवियोगनसकीसंभा
री॥देषिदशारघुपतिजियजाना॥हठिराषेनहिराषिहिप्राना॥कहेउकृपालभानकुलनाथा॥परिहरिसोचचलहुवनसाथा॥नहिविषाद
करऔसरआजू॥वेगिकरहुवनगवनसमाजू॥कहिप्रियवचनप्रियासमुझाई॥लगेमातुपगआशिषपाई॥वेगिप्रजादुखमेटवआई॥जननी
निठुरविसरिजनिजाई॥फिरिहिदशाविधिकवहुरिकिमोरी॥देषिहौंनयनमनोहरजोरी॥सुदिनसुघरीतातकवहोइहि॥जननीजिय राम
तवदनविधुजोइहि॥दो॥वहुरिवत्सकहिलालकहिरघुपतिरघुवरतात॥कवहिवोलाइलगाइउरहरषिनिरषिहौंगात॥६९॥चौपा॥लखिसने १४
हुकातरिमहतारी॥वचननआवविकलभैभारी॥रामप्रवोधकीन्हविधिनाना॥समौसनेहनजाइवषाना॥तवजानकीसासुपगलागी॥सुनि
आमायमैंपरमअभागी॥सेवासमयदैववनदीन्हा॥मोरमनोरथसुफलनकीन्हा॥तजवछोभजनिछाडववछोहू॥करमकठिनकछुदोसन
मोहू॥सुनिसियवचनसासुअकुलानी॥दशाकवनविधिकहोवषानी॥वारहिवारलाइउरलीन्ही॥धरिधीरजसिषआसिषदीन्ही॥अचल

होउआहिवाततुह्मारा॥जौलगिगंगयमुनजलधारा॥दो॥सीतहिसासुअसीससिषदीन्हअनेकप्रकार॥चलीनाइपदपदुमसिर
अतिहितवारहिवार॥७०॥चौ॥समाचारजवलछमनपाए॥व्याकुलविलखिवदनउठिधाए॥कंपविकलतननयनसनीरा॥गहेचरणअतिप्रे
मअधीरा॥कहिनसकतकछुचितवतठाढे॥मीनदीनजनुजलतेकाढे॥सोचहृदयविधिकाहोनिहारा॥सवसुखसुकृतसिरानहमारा॥मो
कहकाहकहवरघुनाथा॥रषिहहिभवनकिलीहहिसाथा॥रामविलोकिवंधकरजोरे॥देहगेहसवसनतृणतोरे॥वोलेवचनरामनयनाग
र॥सीलसनेहसरलसुखसागर॥तातप्रेमवसिजनिकदराहू॥समुझिहृदयपरिनामउछाहू॥दो॥मातुपितागुरुस्वामिसिषसिरधरिक
रहिसुभाय॥लहेउलाहतिन्हजनमकरनतरजनमजगजाय॥७१॥चौ॥असजियजानिसुनहुसिषभाई॥करहुमातुपितुपदसेवकाई॥भ
वनभरथरिपुसूदननाही॥राउवृद्धममदुखमनमाही॥मैवनजाउतुह्महिलैसाथा॥होइसवहिविधिअवधिअनाथा॥गुरुपितुमातुप्रजा
परिवारू॥सवकहंपरैदुसहदुखभारू॥रहहुकरहुसवकरपरितोषू॥नतरुतातहोइहिवडदोषू॥जासुराजप्रियप्रजादुखारी॥सोनृपअवसिनर
कअधिकारी॥रहहुतातअसनीतिविचारी॥सुनतलषनभएव्याकुलभारी॥सियरेवचनसूखिगएकैसे॥परसततुहिनतामरसजैसे॥दो॥उ
ततरनआवतप्रेमवसगहेचरणअकुलाइ॥नाथस्वामितुमदासमैंतजहुतकहावसाइ॥७२॥चौ॥दीन्हमोहिसिषनीकिगोसाईं॥लागिअगम
अपनीकदराई॥नरवरधीरधरमधरधारी॥निगमनीतिकहुतेअधिकारी॥मैसिसुप्रभुसनेहप्रतिपाला॥मंदरमेरुकिलेहिमराला॥गुरुपितुमातुन

अ॰कां॰ १५ जानौ काहू॥ कहौं सुभाव नाथ पतिआहू॥ जहि लगि जगत सनेह सगाइ॥ प्रीति प्रतीति निगम निजु गाई॥ मोरे सबै एक तुम्ह स्वामी॥ दीनबंधु
उर अंतरजामी॥ धर्म नीति उपदेसिअ ताही॥ कीरति भूति सुगति एय जाही॥ मन क्रम वचन चरण रत होई॥ कृपासिंधु परिहरिअ कि सोई॥ दो॰
करुणासिंधु सुबंधु के सुनि म्रदु वचन विनीत॥ समुझाए उर लाइ प्रभु जानि सनेह सभीत॥७३॥ चौ॰॥ मागहु विदा मातु सन जाई॥ आवहु वेगि
चलहु वन भाई॥ मुदित भए सुनि रघुवर वानी॥ भयो लाभ वड गइ वडि हानी॥ हर्षित हृदय मातु पहं आए॥ मनहु अंध फिरि लोचन पाए॥ जाइ जन
नि पग नायउ माथा॥ मन रघुनंदन जानकि साथा॥ पूछे मातु मलिन मन देषी॥ लषन कही सब कथा विसेषी॥ गइ सहमि सुनि वचन कठोरा॥
म्रगी देषि जनु दव चहु ओरा॥ लषन लषेउ भा अनरथ आजू॥ एहि सनेह वस करव अकाजू॥ मागत विदा सभय सकुचाही॥ जाइ संग
विधि कहिहि कि नाही॥ दो॰॥ समुझि सुमित्रा राम सिय रूप सुशील सुभाउ॥ नृप सनेह लषि धुनेउ सिर पापिनि दीन्हि कुदाउ॥७४॥ चौ॰॥ धी
रज धरेउ कुअवसर जानी॥ सहज सुहृद वोली म्रदु वानी॥ तात तुम्हारि मातु वैदेही॥ पिता राम सब भांति सनेही॥ अवध तहां जहं राम निवासू॥ राम १५
तहइ दिवस जहं भानु प्रकासू॥ जौं पै सीय राम वन जाही॥ अवध तुम्हार काज कछु नाही॥ गुर पितु मातु वंधु सुर साई॥ सेइअहि सकल प्रा
ण की नाई॥ राम प्राणप्रिय जीवन जी के॥ स्वारथ रहित सषा सव ही के॥ पूजनीय प्रिय परम जहां ते॥ सव मानियहि राम के नाते॥ अस जिय जा
नि संग वन जाहू॥ लेहु तात जग जीवन लाहू॥ दो॰॥ भूरि भाग भाजन भएहु मोहि समेत वलि जाउ॥ जौं तुम्हरे मन छाडि छलु कीन्ह राम प

दरांउ॥७५॥चौ॥पुत्रवतीयुवतीजगसोइ॥रघुपतिभक्तजासुसुतहोई॥नतरुवांझिभलिवादिविआनी॥रामविमुखसुततेहितहानी॥तु
म्हरेहिभागरामवनजांहीं॥दूसरहेतुतातकछुनाही॥सकलसुकृतकरफलसुतएहू॥सीयरामपदसहजसनेहू॥रागरोषइरिषामदमोहू॥ज
निसपनेहुइन्हकेवसिहोहू॥सकलप्रकारविकारविहाई॥मनक्रमवचनकरेहुसेवकाई॥तुम्हकहवनसवभांतिसुपासू॥संगपितुमातुराम
सियजासू॥जेहिनरामवनलहहिकलेसू॥सुतसोइकरेहुइहैउपदेसू॥छं॥उपदेसुएहुजेहिताततुमतेरामसियसुखपावही॥पितुमातु
प्रियपरिवारपुरसुखसुरतिवनविसरावही॥तुलसीसुतहिसिषदेइआयसुदीन्हपुनिआसिषदई॥रतिहोउअविरलअमलश्रीरघुवीरपद
नितनितनई॥सो॥मातुचरणसिरनाइचलेतुरंतसंकितहृदय॥वागुरविषमतुराइमनहुंभागमृगभागवस॥७६॥चौ॥गएलषनजहंजान
किनाथ॥भयेमनमगनपाइप्रियसाथ॥वंदिरामसियचरणसोहाए॥चलेसंगनृपमंदिरआए॥कहहिपरसपरपुरनरनारी॥भलिवनाइ
विधिवातविगारी॥तनकृसमनदुखवदनमलीने॥विकलमनहुमांछीमधुछीने॥करमीजहिसिरधुनिपछिताही॥जनुविनुपंषविहं
गअकुलाही॥भइवडिभीरिभूपदरवारा॥वरनिनजाइविषादुअपारा॥सचिवउठाइराउवैठारे॥कहिप्रियवचनरामपगुधारे॥सियस
मेतदोउतनयनिहारी॥व्याकुलभएभूमिपतिभारी॥दो॥सीयसहितसुतसुभगदोउदेषिदेषिअकुलाइ॥वारहिवारसनेहवसराउलेइ
उरलाइ॥७७॥चौ॥सकैनवोलिविकलनरनाहू॥सोकजनितउरदारुनदाहू॥नाइसीसपगअतिअनुरागा॥उठिरघुवीरविदा

अ॰का॰ तवमांगा॥पितुआसीसआयसुमोहिदीजै॥हरषसमयविसमयकतकीजै॥तातकिएप्रियप्रेमप्रमादू॥जसजगजाइहोइअपवादू॥सुनि
१६ सनेहवसउठिनरनाहा॥वैठारेरघुपतिगहिवाहा॥सुनहुतातुम्हकहमुनिकहही॥रामचराचरनायकअहही॥सुभअरुअसुभकर्म
अनुहारी॥ईशदेइफलहृदयविचारी॥करैजोकर्मपावफलसोइ॥निगमनीतिअसकहसवकोई॥दो॥औरकरैअपराधकोइअवरपा
वफलभोग॥अतिविचित्रभगवंतगतिकोजगुजानैजोग॥७८॥चौ॥रायराममराषनहितलागी॥वहुतउपाइकिएछलत्यागी॥लखेरा
मरुषरहतनजाने॥धरमधुरंधरधीरसयाने॥तवन्रपसीयलाइउरलीन्ही॥अतिहितवहुतभांतिसिषदीन्ही॥कहिवनकेदुखदुसह
सुनाए॥सासुससुरपितुसुखसमुझाए॥सियमनरामचरणअनुरागा॥घरनसुगमवनविषमनलागा॥औरोसवहीसीयसमुझा
ई॥कहिकहिविपिनविपतिअधिकाई॥सचिवनारिगुरुनारिसयानी॥सहितसनेहकहहिम्रदुवानी॥तुम्हकहतौनदीन्हवनवासू॥क
रहुजोकहहिससुरगुरुसासू॥दो॥सिषसीतलहितमधुरम्रदुसुनिसीतहिनसोहानि॥शारदचंदचंदनिलगतजनुचकईअकुला राम
नि॥७९॥चौ॥सीयसकुचवसउतरनदेइ॥सोसुनितमकिउठीकैकेइ॥मुनिपटभूषनभाजनआनी॥आगेधरिवोलीम्रदुवानी॥न्र १६
पहिप्राणप्रियतुम्हरघुवीरा॥सीलसनेहनछाडहिभीरा॥सुकृतसुजसपरलोकनसाऊ॥तुम्हहिजानवनकहिहिनराऊ॥असविचारिसोइ
करहुजोभावा॥रामजननिसिषसुनिसुषपावा॥भूपहिवचनवाणसमलागे॥करहिनप्राणपयानअभागे॥लोगविकलमूर्छितनरनाहू॥

कहाकरियकछुसमनकाहू॥ रामतुरतमुनिवेषवनाई॥ चौ॥ चलेजनकजननिहिसिरनाई॥ दो॥ सजिवनसाजसमाजसववनितावंधसमे
त॥ वंदिविप्रगुरुचरणप्रभुचलेकरिसवहिअचेत॥ ७९॥ निकसिवसिष्टद्वारभएठाढे॥ देषेलोगविरहदवडाढे॥ कहिप्रियवचनसकलसमुझाए॥ विप्रवृं
दरघुवीरवोलाए॥ गुरुसनकहिवरषासनदीन्हे॥ आदरदानविनयवसकीन्हे॥ जाचकदानमानसंतोषे॥ मीतपुनीतप्रेमपरितोषे॥ दासीदासव
वोलायवहोरी॥ गुरुहिसोंपिवोलेकरजोरी॥ सवकरसारसंभारगोसाईं॥ करवजनकजननीकीनाईं॥ वारहिवारजोरिजुगपानी॥ कहतरामसवसन
मृदुवानी॥ सोईसवभांतिमोरहितकारी॥ जेहितेंरहैभुवालसुखारी॥ दो॥ मातुसकलमोरेविरहजेहिनहोइदुखदीन॥ सोउपाइतुमकरेहुसवपुरज
नपरमप्रवीन॥ ८०॥ चौ॥ एहिविधिरामसवहिसमुझावा॥ गुरुपदपदुमहरषिसिरनावा॥ गणपतिगौरिगिरीशमनाइ॥ चलेअसीसपाइरघुराई॥ राम
चलतअतिभयोविषादू॥ सुनिनजाइपुरआरतनादू॥ कुसगुनलंकअवधिअतिसोकू॥ हरषविषादविवससुरलोकू॥ गईमूर्छातवभूपतिजागे॥
वोलिसुमंत्रकहनअसलागे॥ रामचलेवनप्राणनजाहीं॥ केहिसुखलागिरहततनमाहीं॥ एहितेकवनव्यथावलवाना॥ जोदुखपाइतजिहितनुप्राना
पुनिधरिधीरकहहिनरनाहू॥ लैरथसंगसखातुमजाहू॥ दो॥ सुठिसुकुमारकुमारदोउजनकसुतासुकुमारि॥ रथचढाइदेषराइवनफि
रेहुगएदिनचारि॥ ८१॥ चौ॥ जौंनहिफिरहिधीरदोउभाई॥ सत्यसंधदृढव्रतरघुराई॥ तौतुमविनयकरेहुकरजोरी॥ फेरियप्रभुमिथिलेशकि
सोरी॥ जवसियकाननदेषिडेराई॥ कहेहुमोरसिषअवसरपाई॥ सासुससुरअसकहेउसंदेसू॥ पुत्रीफिरियवनवहुकलेसू॥ पितुगृहकवहि

अ०कां
१७

कवहि ससुरारी॥ रहेहु जहां रुचि होइ तुम्हारी॥ एहि विधि करेहु उपाइ कदंवा॥ फिरै त होइ प्राण अवलंवा॥ नहीं त मोर मरण परिनामा
कछु न वसाइ भयो विधि वामा॥ अस कहि मूर्छि परा महिराजू॥ राम लषन सिय आनि देषाऊ॥ दो॥ पाइ रजायसु नाइ सिर रथ अति वे
ग वनाइ॥ गयउ जहां वाहर नगर सीय सहित दोउ भाइ॥ ८२॥ चौ॥ तव सुमंत्र नृप वचन सुनाए॥ करि विनती रथ राम चढाए॥ चढि रथ सी व
य सहित दोउ भाई॥ चले हृदय अवधिहि सिरनाई॥ चलत राम लषि अवध अनाथा॥ विकल लोग सव लागे साथा॥ कृपासिंधु
वहु विधि समुझावहि॥ फिरहि प्रेम वस पुनि फिरि आवहि॥ लागत अवध भयावन भारी॥ मानहु काल राति अंधियारी॥ घोर जंतु सम पु
र नर नारी॥ डरपहि एकहि एक निहारी॥ घर मसान परिजन जनु भूता॥ सुत हितु पितु मानहु यमदूता॥ वागन्ह विटप वेलि कुम्हिलाहीं॥ सरि
त सरोवर देषि न जाहीं॥ दो॥ हय गय कोटिन्ह केलि मृग पुरपसु चातक मोर॥ पिक रथांग सुक सारिका सारस हंस चकोर॥ ८४॥ चौ॥ राम
वियोग विकल सव ठाढे॥ जहं तहं मनहु चित्र लिखि काढे॥ नगर सफल वन गहवर भारी॥ षग मृग विपुल सकल नर नारी॥ विधि कैकेई राम
किरातिनि कीन्ही॥ जेहि दव दुसह दसहु दिसि दीन्ही॥ सहि न सके रघुवर विरहागी॥ चले लोग सव व्याकुल भागी॥ सवन्हि विचार कीन्ह १७
मन मांहीं॥ राम लखन सिय विनु सुख नाहीं॥ जहां राम तहं सवै समाजू॥ विनु रघुवीर अवध नहि काजू॥ चले साथ अस मंत्र दृढाइ॥ सु
र दुर्लभ सुख सदन विहाइ॥ राम चरण पंकज प्रिय जिन्हहीं॥ विषय भोग वस करैं कि तिन्हहीं॥ दो॥ वालक वृद्ध विहाइ गृह लगे लोग सव

साथ॥ तमसातीरनिवासकियप्रथमदिवसरघुनाथ॥८५॥ चौ॥ रघुपतिप्रजाप्रेमबसदेषी॥ सदयहृदयदुखभयउविशेषी॥ करुणाम
यरघुनाथगोसाई॥ वेगिपाइअहिपीरपराई॥ कहिसप्रेममृदुवचनसोहाए॥ वहुविधिरामलोगसमुझाए॥ किएधर्मउपदेशघनेरे॥ लोगप्रेमवस
फिरहिनफेरे॥ शीलसनेहछाडिनहिजाई॥ असमंजसवसभयेरघुराई॥ लोगसोगश्रमगासवसोई॥ कछुकदेवमायामतिमोई॥ जवहि
जामयुगजामिनिवीती॥ रामसचिवसनकहेउसप्रीती॥ षोजमारिरथहांकहुताता॥ आनउपाइवनिहिनहिवाता॥ दो॥ रामलषन
सियजानचढिशंभुचरणसिरनाइ॥ सचिवचलायउतुरतरथइतउतषोजदुराइ॥८६॥ चौ॥ जागेसकललोगभयेभोरू॥ गयेरघुना
थभयेअतिसोरू॥ रथकरषोजकतहुनहिपावहि॥ रामरामकहिचहुदिशधावहि॥ मनहुवारिनिधिवूडजहाजू॥ भयउविकलवडु
वनिकसमाजू॥ एकहिएकदेहिउपदेशू॥ तजेरामहमजानिकलेशू॥ नीदहिआयुसराहहिमीना॥ धृगजीवनरघुवीरविहीना॥ जोंपैप्र
यवियोगविधिकीन्हा॥ तौकसमरणनमांगेदीन्हा॥ एहिविधिकरतप्रलापकलापा॥ आयेअवधिभरेपरितापा॥ विषमवियोगन
जाइवषाना॥ अवधिआससवराषहिप्राना॥ दो॥ रामदरसहितनेमव्रतलगेकरणनरनारि॥ मनहुकोककोकीकमलदीनविही
त नतमारि॥८७॥ चौ॥ सीतासचिवसहितदोउभाई॥ शृंगवेरपुरपहुचेजाई॥ उतरेरामदेवसरिदेषी॥ कीन्हदंडवतहरषविशेषी॥ लषनसचि
वसियाकियप्रणामा॥ सवहिसहितसुखपायउरामा॥ गंगसकलमुदमंगलमूला॥ सवसुखकरनिहरणिसवशूला॥ कहिकहिको

टिककथाप्रसंगा॥रामविलोकहिगंगतरंगा॥सचिवहिअनुजहिएयहिसुनाई॥विवुधनदीमहिमाअधिकाई॥मंजनकीन्हपंथ
श्रमगयऊ॥सुचिजलपिअतमुदितमनभयऊ॥सुमिरतजाहिमिटहिश्रमभारू॥तेहिश्रमयहलौकिकवेवहारू॥दो॥शुद्धसच्चि
दानंदमयकंदभानुकुलकेतु॥चरितकरतधरिमनुजतनुसंस्रतसागरसेतु॥८८॥चौ॥यहसुधिगुहनिषादजबपाई॥मुदितलि
एप्रियवंधुवोलाई॥लेफलमूलभेटभरिभारा॥मिलनचलेहियहर्षअपारा॥करिदंडवतभेटधरिआगे॥प्रभुहिविलोकतअतिअ
नुरागे॥सहजसनेहविवसरघुराई॥पूछेकुशलनिकरवैठाई॥नाथकुशलपदपंकजदेषे॥भयउभागभाजनुजनुलेषे॥देवधरणिध
नधामतुह्मारा॥मैंजननीचसहितपरिवारा॥कृपाकरियपुरधारियपाऊ॥थापियजनसवलोगसिहाऊ॥कहेहुसत्यसवसत्यसु
जाना॥मोहिदीन्हपितुआयसुआना॥दो॥वरषचारिदशवासवनमुनिव्रतवेषअहार॥ग्रामवासनहिउचितसुनिगुहहिभयउदु
रवभार॥८९॥चौ॥रामलषणसियरूपनिहारी॥कहहिसप्रेमग्रामनरनारी॥तेपितुमातुकहहुसखिकैसे॥जिन्हपठएवनवालकऐ
से॥एककहहिभलभूपतिकीन्हा॥लोचनलाहुहमहिविधिदीन्हा॥तवनिषादपतिउरअनुमाना॥तरुसिंसुपातमनोहरजाना॥लैरघु
नाथहिठाउदिषावा॥कहेउरामसवभांतिसोहावा॥पुरजनकरिजोहारूघरआए॥रघुवरसंध्याकरणसिधाए॥गुहसंवारिसाथरीडस
ाई॥कुशकिशलयमयमृदुलसोहाई॥शुचिफलमूलमधुरमृदुजानी॥दोनाभरिभरिराषेसियानी॥दो॥सियसुमंतभ्रातासहितकंदमू

लफलषाइ॥ सयनकीन्हरघुवंशमनिपायपलोटतभाइ॥ ९०॥ चौ॥ उठेलखणप्रभुसोवतजानी॥ कहिसचिवहिसोवनमृदुवानी॥ १
कछुकदूरिसाजिवानसरासन॥ जागनलगेवैठिवीरासन॥ गुहवेलाइपाहरूपरतीती॥ ठांवठांवराषेअतिनीती॥ आपुलखणपहंवै
ठेउजाइ॥ कटिभाथीसरचापचढाई॥ सोवतप्रभुहिनिहारनिषादू॥ भयउप्रेमवसहृदयविषादू॥ तनपुलकितजललोचनवहइ॥ वचन
सप्रेमलखणसनकहई॥ नृपतिभवनसुभायसोहावा॥ सुरपतिसदननपटतरपावा॥ मणिमयरचितचारुचौवारे॥ जनुरतिपतिनि
जहाथसंवारे॥ दो॥ सुचिसुविचित्रसुभोगमय॥ सुमनसुगंधसुवास॥ पलंगमंजुमणिदीपजहं सविधिसकलसुपास॥ ९१॥ चौ॥ विवि
धवसनउपधानतुराई॥ छीरफेनसममसुखदसुहाइ॥ तंहंसियरामसयननिशिकरई॥ निजछविरतिमनोजमदहरई॥ तेसियरामसाथ
न रीसोए॥ श्रमितवसनविनुजाहिनजोए॥ मातुपितापरिजनपुरवासी॥ सखासुसीलदासअरुदासी॥ जोगवहिंजिन्हहिप्राणकीनाई॥
महिसोवतसोइरामगोसांइ॥ पिताजनकजगविदितप्रभाऊ॥ ससुरसुरेशसखारघुराउ॥ रामचंद्रपतिसोवयदेही॥ सोवतमहिवि१
धिवामनकेही॥ सियरघुवीरकिकाननजोगू॥ कर्म्मप्रधानसत्यकहलोगू॥ दो॥ कैकेनंदिनिमंदमतिकठिनकुटिलपणकीन्ह॥
जेहिरघुनंदनजानकिहिसुखअवसरदुखदीन्ह॥ ९२॥ चौ॥ भइदिनकरकुलविटपकुठारी॥ कुमतिकीन्हसवविश्वदुखारी॥ भयउ
विषादनिषादहिभारी॥ रामसीयमहिसयननिहारी॥ वोलेलखणमधरमृदुवाणी॥ ज्ञानविरागभक्तिरससानी॥ काहुनकोउदुख

अ०कां सुखकरदाता॥निजक्रतकर्मभोगसवभ्राता॥जोगवियोगभोगभलमंदा॥हितअनहितमध्यमभ्रमफंदा॥जनममरणजहँलगिजंजा
१९ लू॥संपतिविपतिकरमअरकालू॥धरणिधामधनपुरपरिवारू॥स्वर्गनर्कजहँलगिवेवहारू॥देषियसुनियगुनियमनमाँही॥मोहमूल
परमारथनाही॥दो॥सपनेहोइभिषारिनृपरंकनाकपतिहोइ॥जागेलाभनहानिकछुतिमिप्रपंचजियजोइ॥९२॥चौ॥असविचारिनहि
कीजियरोसू॥काहुहिवादिनदेइअदोसू॥मोहनिशासवसोवणिहारा॥देषियस्वप्नअनेकप्रकारा॥एहिजगजामिनिजागहिजोगी॥
ऐ परमारथीप्रपंचवियोगी॥जानितेवहिजीवजगजागा॥जवसवविषयविलासविरागा॥होइविवेकमोहभ्रमभागा॥तवरघुनाथचर
णअनुरागा॥सखापरमपरमारथएहू॥मनक्रमवचनरामपदनेहू॥रामब्रह्मपरमारथरूपा॥अविगतअलषअनादिअनूपा॥स
कलविकाररहितगतभेदा॥कहिनितिनेतिनिरूपहिवेदा॥दो॥भक्तभूमिभूसुरसुरभिसुरहितलागिकृपाल॥करतचरितधरिमनुजत राम
नुसुनतमिटहिजगजाल॥९३॥चौ॥सखासमुझिअसपरिहरिमोहू॥सियरघुवीरचरणरतहोहू॥कहतरामगुणभाभिनुसारा॥जा १९
गेजगमंगलदातारा॥सकलसौंचकरिरामअन्हावा॥सुचिसुजानवटछीरमगावा॥अनुजसहितसिरजटावनाए॥देषिसुमंत्रन
यनजलछाए॥हृदयदाहअतिवदनमलीना॥कहकरजोरिवचनअतिदीना॥नाथकहेअसकोशलनाथा॥लेरथजाहुरामके
साथा॥वनदेषाइसुरसरिअन्हवाई॥आनेउवेगिफेरिदोउभाई॥लखनरामसियआनेहुफेरी॥संसैसकलसकोचनिवेरी॥दो॥॥

न्रप अस कहेउ गोसाइ जस कहिय करौ वलि सोइ॥ करि विनती पायन्ह परेउ दीन्ह वाल जिमि रोइ॥ ९५॥ चौ॥ तात क्रपा करि कीजिय सोई॥
जाते अवध अनाथ न होई॥ मंत्रिहि राम उठाइ प्रवोधा॥ तात धर्म्म मत तुम सव सोधा॥ शिवि दधीचि हरिचंद नरेशा॥ सहे धर्म हित कोटि कलेशा॥
रंतिदेव वलि भूप सुजाना॥ धर्म्म धरे सहि संकट नाना॥ धर्म्म न दूसर सत्य समाना॥ आगम निगम पुरान वषाना॥ मैं सोइ धर्म्म सुलभ करि
पावा॥ तजे तिहूं पुर अपजस छावा॥ संभावित कहं अपजस लाहू॥ मरण कोटि सम दारुण दाहू॥ तुम सन तात वहुत का कहहू॥ दिए उतरु फि
रि पातक लहऊं॥ दो॥ पितु पद गहि कहि कोटि विधि विनय करव कर जोरि॥ चिंता कौनिहु वात कै तात करिय जनि मोरि॥ ९६॥ चौ॥ तुम्ह पुनि
पितु सम अति हित मोरे॥ विनती करौ तात कर जोरे॥ सव विधि सोइ करतव्य तुम्हारे॥ दुख न पाव पितु सोच हमारे॥ सुनि रघुनाथ सचिव संवादू॥ भ
यउ सपरिजन विकल निषादू॥ पुनि कछु लखण कही कटु वाणी॥ प्रभु वरजे उ वड अनुचित जाणी॥ सकुचि राम निज सपथ दिवाई॥ लखन सं
देस कहिय जनि जाई॥ कहि सुमंत पुनि भूप संदेसू॥ सहि न सकिहि सिय विपिन कलेसू॥ जेहि विधि अवध आव फिरि सीया॥ सो रघुवरहि
तुम्हहि करनीया॥ नतरु निपट अवलंव विहीना॥ मै न जिअव जिमि जल विनु मीना॥ दो॥ मयिके ससुरे सकल सुख जवहि जहां मन मान
तहं तव रहिहि सुखेन सिय जौ लगि विपति विहान॥ ९७॥ चौ॥ विनती भूप कीन्ह जेहि भांती॥ आरति प्रीति न सो कहि जाती॥ पितु संदेस सुनि क्र
पानिधाना॥ सियहि दीन्ह सिष कोटि विधाना॥ सासु ससुर गुर प्रिय परिवारू॥ फिरहु तौ सव कर मिटै षभारू॥ सुनि पति वचन कहति वैदेही॥ सुन

उ

तुम्ह पितु ससुर सरिस हितकारी॥ उतरु देउ फिरि अनुचित भारी॥

अ॰ कां॰ हु प्राणपति परम सनेही॥ प्रभु करुणामय परम विवेकी॥ तनु तजि रहति छांह किमि छेंकी॥ प्रभा जाइ कहं भानु विहाइ॥ कहं चंद्रिका चंद तजि
२० जाइ॥ प्रभुहि प्रेममय विनय सुनाइ॥ कहति सचिव सन गिरा सोहाइ॥ दो॥ आरत वस सनमुख भइ अविलग न मानव तात॥ आरजसुत पद
कमल विनु वादि जहां लगि नात॥९८॥ चौ॥ पितु वैभव विलास मैं डीठा॥ नृपमनि मुकुट मिलै पग पीठा॥ सुखनिधान अस पितु गृह मोरे॥ पि
य विहून मन भाव न भोरे॥ ससुर चक्कवै कोशलराऊ॥ भुवन चारिदश प्रगट प्रभाऊ॥ आगे है जेहि सुरपति लेइ॥ अर्द्ध सिंहासन आसन
देई॥ ससुर एताहश अवधिनिवासू॥ प्रियपरिवार मातु सम सासू॥ विनु रघुपति पद पदुम परागा॥ मोहि को उ सपने हु सुखद न लागा॥ अगम
पंथ वन भूमि पहारा॥ करि केहरि सर सरित अपारा॥ कोल किरात कुरंग विहंगा॥ मोहि सब सुखद प्रानपति संगा॥ दो॥ सासु ससुर सन मोरि हु
ति विनय करव परि पाय॥ मोर सोच जनि करिय कछु मैं वन सुखी सुभाय॥९९॥ प्राणनाथ प्रिय देवर साथा॥ वीर धुरीन धरे धनु भाथा॥ नहि
मग श्रम भ्रम कछु दुख मोरे॥ मोहि लगि सोच करिय जनि भोरे॥ सुनि सुमंत सिय सीतल वानी॥ भयउ विकल जिमि फनि मनि हानी॥ नय राम
न सूझ नहि सुनइ न काना॥ कहि न सकै कछु अति अकुलाना॥ राम प्रबोध कीन्ह वहु भांती॥ तदपि होत नहि सीतल छाती॥ जतन अनेक २०
साथ हित कीन्हे॥ उचित उतर रघुनंदन दीन्हे॥ मेटि जाइ नहि राम रजाइ॥ कठिन करम गति कछु न बसाइ॥ राम लखण सिय पद सिर ना
ई॥ फिरेउ वनिक जिमि मूर गवाई॥ दो॥ रथ हांकेहि हय राम तन हेरि हेरि हिहिनाहि॥ देखि निषाद विषाद वस धुनहि सीस पछिताहि॥१००॥ चौ॥

जासुवियोगविकलपसुऐसे॥प्रजामातुपितुजीयहिंकैसे॥वरवसरामसुमंतपठाए॥सुरसरितीरआपुतवआए॥मागेउनावनकेंवटआना॥
कहैतुम्हारमर्म्ममैंजाना॥चरणकमलरजकहंसवकहई॥मानुषकरणिमूरिकछुअहई॥छुवतसिलाभइनारिसोहाइ॥पाहनतेंनकाठक
ठिनाई॥तरणिउमुनिघरणीह्वैजाई॥वाटपरैमोरिनावउडाई॥एहिप्रतिपालौंसवपरिवारू॥नहिजानौकछुऔरकवारू॥जौंप्रभुपारअवसि
गाचहहू॥मोहिपदपदुमपषारणकहहू॥छं॥पदपदुमधोइचढाइनावननाथउतराइचहौं॥मोहिरामराउरिआनदशरथसपथसवसाची
कहौं॥वरुतीरमारहुलखणमोहिजौंलगिनपावपषारिहौ॥तौलगिनतुलसीदासरामकृपालपारउतारिहौं॥सो॥सुनिकेवटकेवचनप्रे
मलपेटेअटपटे॥विहसेकरुणाअयननिरषिजानकीलखणतन॥१०१॥चौ॥कृपासिंधुवोलेमुसुकाई॥सोइकरुजेहितुवनावनजाई
वेगिआनुजलचरणपषारू॥होतिविलंवउतारहुपारू॥जासुनामसुमिरतएकवारा॥उतरहिंनरभवसिंधुअपारा॥सोकृपालके
वटहिनिहोरा॥जेहिजगकिह्नतिहुंपगतेथोरा॥पदनषनिरषिदेवसरिहरषी॥सुनिप्रभुवचनमोहमतिकरषी॥केंवटरामरजायसु
पावा॥पानीकठौताभरिलैआवा॥अतिआनंदउमगिअनुरागा॥चरणसरोजपषारणलागा॥वरषिसुमनसुरसकलसिहाहीं॥एहि
समपुन्यपुंजकोउनाही॥दो॥पदपषारिजलपानकरिआपुसहितपरिवार॥पितरपारकरिप्रभुहिपुनिगयउमुदितलैपार॥१०२॥उतरिपारभए
सुरसरिरेता॥सीयरामगुहलखणसमेता॥केंवटउतरिदंडवतकीन्हा॥प्रभुहिसकुचएहिनाहिकछुदीन्हा॥पियहियकीसियजाननिहारी॥

अ०का० मनिसुंदरिमनमुदितउनारी॥कहेउँकृपाललेहुउतराई॥केंवटचरणगहेउअकुलाई॥नाथआजुमैंकाहनपावा॥मिटेउदोषदुख
२१ दारिददावा॥बहुतकालमैंकीन्हमजूरी॥आजुदीन्हविधिबनिभलिभूरी॥अबकछुनाथनचाहियमोरे॥दीनदयालअनुग्र
हतोरे॥फिरतवारमोरमोहिजोकछुदेवा॥सोप्रसादमैंसिरधरिलेवा॥दो॥बहुतकीन्हप्रभुलखनसियनहिकछुकेवटलेइ॥
बिदाकीन्हकरुणायतनभक्तिबिमलवरदेइ॥१०३॥चौ॥तबमज्जनकरिरघुकुलनाथा॥पूजिपारथिंहिनायउमाथा॥सियसुर
सरिहिकहेउकरजोरी॥मातुमनोरथपुरबहुमोरी॥पतिदेवरसंगकुशलबहोरी॥आयकरबमैंपूजातोरी॥मुनिसियविनयप्रेमर
ससानी॥भइतबविमलवारिवरवानी॥सुनुरघुवीरप्रियावयदेही॥तबप्रभावजगविदितनकेही॥लोकपहोंहिविलोकततोरे॥सेवहिसक
लसिद्धकरजोरे॥तुम्हजोहमहिवडिविनयसुनाई॥कृपाकीन्हमोहिदीन्हवडाई॥तदपिदेविमैंदेवअसीसा॥सुफलहोनहितनिजवागी
सा॥दो॥प्राणनाथदेवरसहितकुशलकोशलाआइ॥पुजिहिमनकैकामनासुजसरहितजगछाई॥१०४॥चौ॥गंगवचनसुनिमंगलमूला राम
मुदितसीयसुरसरिअनुकूला॥तबप्रभुगुहहिकहेउघरजाहू॥सुनतसूखमुखभाउरदाहू॥दीनवचनगुहकहकरयोरी॥विनयसुनहु २१
रघुकुलमनिमोरी॥नाथसाथरहिपंथदेखाई॥करिदिनचारिचरणसेवकाई॥जेहिवनजाइरहववरघुराई॥पर्णकुटीमैंकरबसोहाइ॥पु
निमोहिकहजसिदेवरजाई॥सोइकरिहोंरघुवीरदोहाई॥सहजसनेहराममलखिनासू॥संगलीन्हगुहहृदयहुलासू॥पुनिगुहजा

तिबोलिसबलीन्ह्रा॥ करिपरितोषविदातबकीन्हा॥ दो॥ तबगनपतिशिवसुमिरिप्रभुनाइसुरसरिहिमांथ॥ सखाअनुजसियसहिततबगवन
कीन्हरघुनाथ॥१०५॥ चौ॥ तेहिदिनभयउविटपतरवासू॥ लखनसखासबकीन्हसुपासू॥ प्रातप्रातकृतकरिरघुराई॥ तीरथराजदीषप्रभुजा
ई॥ शचीविसत्यश्रद्धाप्रियनारी॥ माधवसरिसमीतहितकारी॥ चारिपदारथभराभंडारू॥ पुन्यप्रदेशदेशअतिचारू॥ छेत्रअगमगढगाढसोहा
वा॥ सपनेहुनहिप्रतिपछिन्हपावा॥ सेनसकलतीरथबरबीरा॥ कलुषअनीकदलनरणधीरा॥ संगमसिंहासनअतिसोहा॥ छत्रअषे
वटमुनिमनमोहा॥ चवरयमुनअरुगंगतरंगा॥ देषिहोहिंदुखदारिदभंगा॥ दो॥ सेवहिसुकृतीसाधुसुचिपावहिसबमनकाम॥ वंदीवेदपुराण
गणकहहिविमलगुणग्राम॥१०६॥ चौ॥ कोकहिसकैप्रयागप्रभाऊ॥ कलुषपुंजकुंजरमृगराऊ॥ असतीरथपतिदीषसोहावा॥ सुखसागररघु
पतिसुखपावा॥ कहिसियलखनहिसखहिसुनाई॥ श्रीमुखतीरथराजबडाई॥ करिप्रणामदेषतबनबागा॥ कहतमहातमअतिअनुरागा॥ एहिवि
धिआइविलोकीवेनी॥ सुमिरतसकलसुमंगलदेनी॥ मुदितअन्हाइकीन्हशिवसेवा॥ पूजियथाविधितीरथदेवा॥ तबप्रभुभारद्वाजपहिआए॥
करतदंडवतमुनिउरलाए॥ मुनिमनमोदनकछुकहिजाई॥ ब्रह्मानंदरासिजनुपाई॥ दो॥ दीन्हअसीसमुनीशउरअतिआनंदजियजानि॥
लोचनगोचरसुकृतफलमनहुकिएविधिआनि॥१०७॥ चौ॥ कुशलप्रश्नकरिआसनदीन्हा॥ पूजिप्रेमपरिपूरणकीन्हा॥ कंदमूलफलअंकुरनी
केदिएआनिजनुअमीके॥ सीयलखनजनसहितसोहाए॥ अतिरुचिराममूलफलषाए॥ भएविगतश्रमरामसुखारे॥ भारद्वाजमृदुबचनउचा

अ॰कां रे॥ आजुसफलतपतीरथत्यागा॥ आजुसफलजपजोगविरागा॥ सफलसकलसुभसाधनसाजू॥ रामतुम्हहिअवलोकतआजू॥ लाभअ
२२ वधिसुखअवधिनदूजी॥ तुम्हरेदरसआससवपूजी॥ अवकरिकृपादेहुवरएहू॥ निजपदसरसिजसहजसनेहू॥ दो॰॥ करमवचनमनछाडि
छलजवलगिजननतुम्हार॥ तवलगिसुखसपनेहुनहिकिएकोटिउपचार॥ १०८॥ चौ॥ सुनिमुनिवचनराममुसुकाने॥ भावभक्तिआनंदअ
घाने॥ तवरघुवरमुनिसुजससोहावा॥ कोटिभांतिकहिसवहिसुनावा॥ सोवडसोसवगुणगणगेहू॥ जेहिमुनीशतुमआदरदेहू॥ मुनिरघुवीरपर
सपरतवहीं॥ वचनअगोचरसुखअनुभवहीं॥ यहसुधिपाइप्रयागनिवासी॥ वटुतापसमुनिसिद्धउदासी॥ भारद्वाजआश्रमसवआए॥ देषन
दशरथसुअनसोहाए॥ रामप्रणामकीन्हसवकाहू॥ मुदितभएलहिलोचनलाहू॥ देइअसीसपरमसुखपाई॥ फिरेसराहतसुंदरताई॥ दो
रामकीन्हविश्रामनिशिप्रातप्रयागअन्हाइ॥ चलेसहितसियलखनजनमुदितमुनिहिसिरनाइ॥ १०९॥ चौ॥ रामसप्रेमकहेउमुनिपा
हीं॥ नाथकहिअहमकेहिमगजाहीं॥ मुनिमनविहसिरामसनकहहीं॥ सुगमसकलमगतुम्हकहंअहहीं॥ साथलागिमुनिशिष्यवो राम
लाए॥ सुनिमनमुदितपचासकधाए॥ सवनिरामपरप्रेमअपारा॥ सकलकहहिमगुदीषहमारा॥ मुनिवटुचारिसंगतवदीन्हे॥ जिन्हवहुज २२
न्मसुकृतवहुकीन्हे॥ करिप्रणामरिषिआयसुपाई॥ प्रमुदितहृदयचलेरघुराई॥ ग्रामनिकटजवपहुंचहिजाई॥ देषहिदरसनारिनरधाई
होहिसनाथजन्मफलपाई॥ फिरहिदुखितमनसंगपठाई॥ दो॥ विदाकिएवहुविनयकरिफिरेपाइमनकाम॥ उतरिअन्हायेउयमुनज

ले जो शरीर सम स्याम॥११०॥ चौ॥ सुनत तीर वासी नर नारी॥ धाए निज निज काज विसारी॥ लखन राम सिय सुंदरताइ॥ देषि करहिं निज भ-
भाग वडाई॥ अति लालसा सवहीं मन माहीं॥ नाव गाव बूझत सकुचाहीं॥ जे तिन्ह महं वय वृद्ध सयाने॥ तिन्ह करि जुक्ति राम पहिचाने॥ सक-
ल कथा तिन्ह सवहि सुनाई॥ वनहि चले पितु आयसु पाई॥ सुनि सविषाद सकल पछिताहीं॥ राणी राय कीन्ह भल नाहीं॥ तेहि अवसर एक
तापस आवा॥ तेज पुंज लघु वयस सोहावा॥ कवि अलषित गति वेष विरागी॥ मन क्रम वचन राम अनुरागी॥ दो॥ सजल नयन तन पुल- व
कि निज इष्टदेव पहिचानि॥ परे दंड जिमि चरण तल दशा न जाइ वषानि॥१११॥ चौ॥ देषि दशा तन मन प्रभु तासू॥ दीनवंधु नयनन्ह भर आ-
सू॥ राम सप्रेम पुलकि उर लावा॥ परम रंक जनु पारस पावा॥ मनहुं प्रेम परमारथ दोऊ॥ मिलत धरे तनु कह सव कोऊ॥ वहुरि लखन पायन्ह
सो लागा॥ लीन्ह उठाइ उमगि अनुरागा॥ पुनि सिय चरण धूरि धरि सीसा॥ जननि जानि जन दीन्ह असीसा॥ कीन्ह निषाद दंडवत तेही॥ मि-
लेउ मुदित लखि राम सनेही॥ पियत नयन पुट रूप पियूषा॥ मुदित सुअशन पाइ जनु भूषा॥ राम लखन सिय रूप निहारी॥ सोच सनेह वि-
कल नर नारी॥ दो॥ तव रघुवीर अनेक विधि सखहि सिखावन दीन्ह॥ राम रजायसु सीस धरि भवन गवन तेइं कीन्ह॥११२॥ चौ॥ पुनि सि-
य राम लखन कर जोरी॥ यमुनहि कीन्ह प्रणाम वहोरी॥ चले ससीय मुदित दोउ भाई॥ रवितनया कर करत वडाई॥ पथिक अनेक मिलहिं
मग जाता॥ कहहिं सप्रेम देषि दोउ भ्राता॥ राज लक्षण सव अंग तुम्हारे॥ देषि सोच अति हृदय हमारे॥ मारग चलहु पियादे पाए॥ जोतिष

अ० कां
२३

नृ ठह मारे भाए॥ अगम पंथ गिरि कानन भारी॥ तेहि महं साथ नारि सुकुमारी॥ करि केहरि वन जांहि न जोई॥ हम संग चलहि जौं आयसु
सु होई॥ जाव जहां लगि तहं पहुचाई॥ फिरव वहोरि तुमहि सिर नाई॥ दो॥ एहि विधि प्रछहि प्रेम वस पुलक गात जल नैन॥ कृपासिंध
फेरहि तिन्हहि कहि विनीत वर बैन॥ ११३॥ चौ॥ जो पुर गांव वसहि मग माहीं॥ तिन्हहि नाग सुर नगर सिहांहीं॥ केहि सुकृती केहि घरी वसाए
धन्य पुन्यमय परम सोहाए॥ जहं जहं राम चरण चलि जाहीं॥ तेहि समान अमरावति नाहीं॥ पुन्य पुंज मग निकट निवासी॥ तिन्हहि सराहहि
सुरपुर वासी॥ जे भरि नैन विलोकहि रामहि॥ सीता लखण सहित घनस्यामहि॥ जे सर सरित राम अवगाही॥ तिन्हहि देव सर सरित सिहाही
जेहि तरु तर प्रभु वैठहि जाई॥ करहि कल्पतरु तासु वडाई॥ परसि राम पद पदुम परागा॥ मानति भूमि भूरि निज भागा॥ ४ छांह करहि घन विवुध दो॥
गन वरषहि सुमन सिहांहि॥ देषत गिरि वन विहंग मृग राम चले वन जांहि॥ ११४॥ दो॥ सीता लखन सहित रघुराई॥ ग्राम निकट जव नि
कसहि जाई॥ सुनि सव वाल वृद्ध नर नारी॥ चलहि तुरित गृह काज विसारी॥ राम लखन सिय रूप निहारी॥ पाइ नयन फल होहिं सु
खारी॥ सजल विलोचन पुलक शरीरा॥ सव भए मगन देषि दोउ वीरा॥ वरनि न जाइ दशा तिन्ह केरी॥ लहि जनु रंकन्ह सुरमनि ढेरी॥ एक राम
नि एक वोलि सिष देहीं॥ लोचन लाहु लेहु छिन एहीं॥ रामहि देषि एक अनुरागे॥ चितवत चले जाहि संग लागे॥ एक नयन मग छवि उर आ २३
नी॥ होंहि सिथिल तन मन क्रम वानी॥ दो॥ एक देषि वर छांह भल डासि मृदुल तृण पात॥ कहहि गवाइ ठछुनक श्रम गवन व अवहि कि प्रा

न॥११५॥चौ॥एककलसभरिआनहिपानी॥अचहिअनाथकहहिम्रदुवानी॥सुनिप्रयवचनप्रीतिअतिदेषी॥रामक्रपालसुशीलविशे
षी॥जानेउअमितसीयमनमाही॥घटिकाविलंवकीन्हवटछाहीं॥मुदितनारिनरदेषहिसोभा॥रूपअनूपनयनमनलोभा॥एकटकसवजो
हहिचहुंओरा॥रामचंद्रमुखचन्द्रचकोरा॥तरुणतमालवरणतनसोहा॥देषतकोटिमदनमनमोहा॥दामिनिवरणलखणसुठिनीके
नखसिखसुभगभावतेजीके॥मुनिपटधरकटिकसेतुनीरा॥सोहहिकरकमलन्हिधनुतीरा॥दो॥जटामुकुटसीसनिसुभगउरभुजनैनवि
शाल॥सरदपरवविधुवदनपरलसतस्वेदकनजाल॥११६॥चौ॥वरणिनजाइमनोहरजोरी॥सोभावहुतिमोरिमतिथोरी॥रामलखणसि
यसुंदरताई॥सवचितवहिचितमनमतिलाई॥थकेनारिनरप्रेमपियासे॥मनहुंम्रगीम्रगदेषिदिआसे॥सीयसमीपग्रांमतियजाहीं॥पूछतअ
तिसनेहसकुचाहीं॥वारवारसवलागहिपाए॥कहहिवचनम्रदुसरलसुभाए॥राजकुमारिविनयहमकरहीं॥तियसुभायपूछतमनडरहीं॥स्वा(
मिनिअविनयछमविहमारी॥विलगनमानवजानिगवारी॥राजकुवरदोउसहजसलोने॥इन्हतेंलहिदुतिमरकतसोने॥दो॥स्यामलगो
रकिशोरवरसुंदरसुखमाऐन॥शरदशर्वरीनाथमुखशरदसरोरुहनैन॥११७॥चौ॥कोटिमनोजलजावनिहारे॥सुमुखिकहहुको
आहितुम्हारे॥सुनिसनेहमयमंजुलवानी॥सकुचिसीयमनमहंमुसुकानी॥तिन्हहिविलोकिविलोकतधरनी॥दुहुंसंकोचसकुचतिवर
वरनी॥सकुचिसप्रेमवालम्रगनैनी॥वोलीमधुरवचनपिकवैनी॥सहजसुभावसुभगतनगोरे॥नामलखणलघुदेवरमोरे॥वहुरिवदनवि

अ०कां
२४

धनअंचलदांकी॥ पियतनचितैनयनकरिवाकी॥ खंजनमंजुतिरीछेनैनी॥ निजपतिकहेतिन्हैसियसैनी॥ भईमुदितसवग्रामवधूटी॥ रंक
न्हराजरासिजनुलूटी॥ दो॥ अतिसप्रेमसियपायपरिवहुविधिदेइअसीस॥ सदासोहागिनिहोहुतुमजौलगिमहिअहिसीस॥ ११८॥ चौ॥ पार
वतीसमपतिप्रियहोहू॥ देविनहमपरछाडवछोहू॥ पुनिपुनिविनयकरहिकरजोरी॥ जौंएहिमारगफिरिअवहोरी॥ दैसनदेवजानिनिजदासी॥ र
लखीसीयसवप्रेमपियासी॥ मधुरवचनकहिकहिपरतोषी॥ जनुकुमुदिनिकौमुदीपोषी॥ तवहिलखनरघुवररुखजानी॥ पूछेउमगुलोगन्हमृदु
वानी॥ सुनतभएनरनारिदुखारी॥ पुलकितगातविलोचनवारी॥ मिटामोदमनभएमलीने॥ विधिनिधिदेइलेइजनुछीने॥ समुझिकरमगतिधी
रजकीन्हा॥ सोधिसुगममगुतिन्हकहिदीन्हा॥ दो॥ लखनजानकीसहिततवगवनकीन्हरघुनाथ॥ फेरेसवप्रियवचनकहिलिएलाइमन
साथ॥ ११९॥ चौ॥ फिरतनारिनरअतिपछिताहीं॥ दैवहिदोषदेहिमनमाहीं॥ सहितविषादपरसपरकहहीं॥ विधिकरतवउलटेसवअहहीं॥ निपट
निरंकुशनिठुरनिसंकू॥ जिन्हससिकीन्हसरुरसकलंकू॥ रूषकलपतरुसागरषारा॥ तेहिपठयेवनराजकुमारा॥ जौंइन्हहिदीन्हवनवासू॥ कीन्हवा पै
व दिविधिभोगविलासू॥ एविचरहिमगुविनुपदत्राना॥ रचेवादिविधिवाहननाना॥ एमहिपरहिंडासिकुशपाता॥ सुभगसेजकतसृजतविधाता॥ राम
तरुतरवासइन्हहिविधिदीन्हा॥ धवलधामरचिरचिश्रमकीन्हा॥ दो॥ जौंएमुनिपटधरजटिलसुंदरसुठिसुकुमार॥ विविधभांतिभू २४
षनवसनवादिकिएकरतार॥ १२०॥ चौ॥ जौंएकंदमूलफलखांही॥ वादिसुधादिअसनजगमाहीं॥ एककहहिंएसहजसुहाए

आपुप्रगटभएविधिनवनाए॥जहंलगिवेदकहहिविधिकरणी॥श्रवणनयनमनगोचरवरणी॥देषहुषोजिभुवनदशचारी॥क
हंअसपुरुषकहांअसनारी॥इन्हहिदेषिविधिमनअनुरागा॥पटतरजोगवनावनलागा॥कीन्हवहुतश्रमअइकनआए॥तेहिइरिषा
वणआइदुराए॥एककहहिहमवहुतनजानहि॥आपुहिपरमधन्यकैमानहि॥तेपुनिपुन्यपुंजहमलेरवहि॥जिन्हदेषेदेषिहहिदेषहि॥
धि
दो॥एहिविकहिकहिवचनप्रियलेहिनयनभरिनीर॥किमिचलिहहिमारगअगमसुठिसुकुमारसरीर॥१२१॥चौ॥नारिसनेहविकलसवहोंही
चकईसांझसमैजनुसोही॥मृदुपदकमलकठिनमगजानी॥गहवरिहृदयकहैंमृदुवानी॥परसतमृदुलचरणअरुनारे॥सकुचितमहिज
नुहृदयहमारे॥जौंजगदीशइन्हहिवनदीन्हा॥कसनसुमनमयमारगकीन्हा॥जौंमागापाइअविधिपांही॥एइसषिराषियआंषिन्हमा
हीं॥जेनरनारिनअौसरआए॥तिन्हसियरामनदेषनपाए॥सुनिसरूपवूझहिंअकुलाई॥अवलगिगएकहांलहिभाई॥समरथधाइवि
लोकहिजाई॥प्रमुदितफिरहिजनमफलफलपाइ॥दो॥अवलाबालकवृद्धजनकरमीजहिपछिताहि॥होंहिप्रेमवसलोगइमिरामज
हांजहंजांहि॥१२२॥गावगावअसहोइअनंदू॥देषिभानकुलकैरवचंदू॥जोकछुसमाचारसुनिपावहि॥तेनृपरानिहिदोसलगावहि॥क
हहिएकअतिभलनरनाहू॥दीन्हहमहिजोइलोचनलाहू॥कहहिपरसपरलोगलुगाइ॥वातेसरलसनेहसोहाइ॥तेपितुमातुधन्यजिन्ह
जाए॥धन्यसोनगरजहांतेंआए॥धन्यसोदेशशैलवनगाउ॥जहंजहंजाहिधन्यसोठाऊं॥सुखपाएविरंचिरचितेही॥यहजेहिकेशवभांतिस

 नेही॥ रामलखणपथकथा सोहाई॥ रहीसकलजगकानन छाई॥ दो॥ एहि विधि रघुकुलकमलरविमगलोगन्हसुखदेत॥ जाहिचलेदेष
 तविपिनिसियसौमित्रिसमेत॥१२३॥ चौ॥ आगेंरामलखणभयेपाछें॥ तापसवेषविराजतकाछें॥ उभयवीचसियसोहतकेसी॥ ब्रह्मजीवबि
चमायाजेसी॥ बहुरिकहोछविजसमनबसई॥ जनुमधमदनमध्यरतिलसई॥ उपमाबहुरिकहोजियजोही॥ जनुबुधबिधविचरोहिनिसोही
प्रभुपदरेषवीचविचसीता॥ धरतिचरणमगचलतिसभीता॥ सीयरामपदअंकबचाए॥ लखणचलहिमगदहिनेवाए॥ रामलखनसियप्रीतिसोहा
ई॥ वचनअगोचरकिमिकहिजाई॥ षगमृगमगन्नदेषिछविहोही॥ लिएचोरिचितरामबटोही॥ दो॥ जिन्हजिन्हदेषेपथिकप्रियसियसमेतदोउभाई
भौमगुअगमअनंदतेविनुश्रमरहेसिराइ॥१२४॥ चौ॥ अजहूंजासुउरसपनेहुकाहू॥ बसहिलखनसियरामबटाऊ॥ रामधामपथपाइहिसोई
जोपथपावकबहुंमुनिकोई॥ तवरघुवीरश्रमितसियजानी॥ देषिनिकटवटसीतलपानी॥ तहबसिकंदमूलफलषाइ॥ प्रातअन्हाइचलेरघुराई
देषतवनसरशैलसोहाए॥ वालमीकिआश्रमप्रभुआए॥ रामदीषमुनिवाससोहावण॥ सुंदरगिरिकाननजलपावण॥ सरणिसरोजविटपव
नफूले॥ गुंजतमंजुमधपरसभूले॥ षगमृगविपुलकोलाहलकरही॥ विरहितवयरमुदितमनचरही॥ दो॥ सुचिसुंदरआश्रमनिरषिहरषेरा 
जिवनयन॥ सुनिरघुवरआगमनमुनिआगेंआएलयन॥१२५॥ चौ॥ मुनिकहंरामदंडवतकीन्हा॥ आशीर्वादविप्रवरदीन्हा॥ देषिरामछवि 
नयनजुडाने॥ करिसनमानआश्रमहिआने॥ मुनिवरअतिथिप्राणप्रियपाए॥ हरषितआसनदिएसोहाए॥ कंदमूलफलमधुरमगाए॥ सियसौ

मिथिरामफलखाए॥ वालमीकिमनआनंदभारी॥ मंगलमूरतिनयननिहारी॥ तवकरकमलजोरिरघुराई॥ वोलेवचनश्रवणसुखदाई॥ तुम्हत्रिकालदरसी
मुनिनाथा॥ विश्ववदिरजिमितुम्हरेहाथा॥ असकहिप्रभुसवकथावखानी॥ जेहिजेहिभांतिदीन्हवनरानी॥ दो॥ तातवचनपुनिमातुहितभाइभरतअसरा
उ॥ मोकहदरसतुम्हारप्रभुसवममपुन्यप्रभाउ॥ १२६॥ चौ॥ देषिपायमुनिरायतुम्हारे॥ भएसुकृतसवसफलहमारे॥ अवजहराउरआयसुहोई॥ मुनि
उद्वेगनपावैकोई॥ मुनितापसजिन्हतेंदुखलहहीं॥ तेनरेशविनुपावकदहहीं॥ मंगलमूलविप्रपरितोषू॥ दहैकोटिकुलभूसुररोषू॥ असजियजानि
कहिसोठांऊ॥ सियसौमित्रिसहिततहजाऊं॥ तहरुचिरुचिरपर्णतृणशाला॥ वासकरौंकछुकालकृपाला॥ सहजसरलसुनिरघुवरवानी॥ साधसा
धुवोलेमुनिज्ञानी॥ कसनकहहुअसरघुकुलकेतू॥ तुम्हपालकसंततश्रुतिसेतू॥ छं॥ श्रुतिसेतुपालकरामतुमजगदीशमायाजानकी॥ जोसृजतिज
गपालतिहरतिरुषपाइकृपानिधानकी॥ जोसहससीसअहीसमहिधरलषनसचराचरधनी॥ सुरकाजधरिनरराजतनुचलेदलनखलनिश्चरअनी॥
सो॥ रामस्वरूपतुम्हारवचनअगोचरबुद्धिपर॥ अविगतअकथअपारनेतिनेतिनितनिगमकह॥ १२७॥ चौ॥ जगपेषनतुम्हदेषिनिहारे॥ विधिहरिशं
भुनचावनहारे॥ तेउनजानहिमर्मतुम्हारा॥ औरतुम्हहिकोजाननिहारा॥ सोजानैजेहिदेहुजनाई॥ जानततुम्हहितुम्हैह्वैजाइ॥ तुम्हरीकृपातुम्हहिर
घुनंदन॥ जानहिभक्तभक्तउरचंदन॥ चिदानंदमयदेहतुम्हारी॥ विगतविकारजानअधिकारी॥ नरतनधरेहुसंततसुरकाजा॥ कहहुकरहुजसप्राकृ
तराजा॥ रामदेषिसुनिचरिततुम्हारे॥ जडमोहहिवुधहोंहिसुखारे॥ तुमजोकहहुकरहुसवसाचा॥ जसकाछियतसचाहियनाचा॥ दो॥ पूछेहुमोहि

अ॰कां॰
२६

कीरहौं कहमैं पूछतसकुचांउ॥ जहन होऊ तहंदेऊ कहि तुम्हहि देषावों ठांउ॥१२८॥ चौ॥ सुनि मुनि वचन प्रेमरससमाने॥ सकुचि राम मन महु मुसु
काने॥ वाल्मीकि हसि कहहि वहोरी॥ वानी अमिय मधुररसवोरी॥ सुनऊ राम अव कहो निकेता॥ जहां वसऊ सियलखन समेता॥ जिन्हके श्रवण स
मुद्रसमाना॥ कथा तुम्हारि सुभग सरि नाना॥ भरहि निरंतर होंहि न पूरे॥ तिन्हके हिय तुम्ह कहुं गृह रूरे॥ लोचन चातक जिन्ह करि राषे॥ रहहि दरस जल
धर अभिलाषे॥ निदरहि सरित सिंधु सर भारी॥ रूप विंदु जल होंहि सुखारी॥ तिन्हके हृदय सदन सुखदायक॥ वसऊ वंधु सियसह रघुनायक॥ दो॥ त
जस तुम्हार मानस विमल हंसिनी जीहा जासु॥ मुक्ताहल गुण गण चुनै राम वसऊ हिय तासु॥१२९॥ चौ॥ प्रभु प्रसाद सुचि सुभग सुवासा॥ सादर जा
सु लहै नित नासा॥ तुम्हहि निवेदित भोजन करहीं॥ प्रभु प्रसाद पट भूषन धरहीं॥ सीस नवहि सुर गुरु द्विज देषी॥ प्रीति सहित करि विनय विशेषी॥
कर नित करहि राम पद पूजा॥ राम भरोस हृदय नहि दूजा॥ चरण राम तीरथ चलि जाहीं॥ राम वसऊ तिन्हके हिय मांही॥ मंत्रराज नित जपहि तुम्हारा॥
पूजहि तुमहि सहित परिवारा॥ तर्पन होम करहि विधि नाना॥ विप्र जेंवाइ देहि वहु दाना॥ तुम्हतें अधिक गुरुहि जिय जानी॥ सकल भाव सेवहि सनमानी॥ राम
दो॥ सव करि मांगहि एक फल राम चरण चित होउ॥ तिन्हके मन मंदिर वसऊ सिय रघुनंदन दोउ॥१३०॥ चौ॥ काम क्रोध मद मान न मोहा॥ लोभ न छोभ २६
न राग न द्रोहा॥ जिन्हके कपट दंभ नहि माया॥ तिन्हके हृदय वसऊ रघुराया॥ सव के प्रिय सव के हितकारी॥ दुख सुख सरिस प्रसंस सागारी॥ कहहि सत्य प्रि
य वचन विचारी॥ जागत सोवत सरन तोहारी॥ तुमहि छाडि गति दूसर नाही॥ राम वसऊ तिन्हके मन मांही॥ जननी सम जानहि परनारी॥ धन पराय विष तें

प विषभारी॥ जेहरषहि परसंपति देषी॥ दुरवी होंहि परविंत्त विशेषी॥ जिन्हहि रामतुमप्राणपियारे॥ तिन्हकेउरसुभसदनतुह्मारे॥ दो॥ स्वामिसरवागुरु
मातुपितुजिन्हकेसवतुमतात॥ मनमंदिरतिन्हकेवसङ्गसीयसहितदोउभ्रात॥१३१॥ चौ॥ अ्रौगुणतजिसवकेगुनगहहीं॥ विप्रसंततहितसंकटसह
हीं॥ नीतिनिपुनजिन्हकेजगलीका॥ घर तुह्मारतिन्हकेमननीका॥ गुणतुह्मारसमुझैनिजदोसा॥ जेहिसवभांतितुह्मारभरोसा॥ रामभक्तप्रिय
लागहिजेही॥ तेहिउरवसङ्गसहितवयदेही॥ जातिपांतिधनधर्म्मवडाई॥ प्रियपरिवारसदनसुखदाई॥ सवतजितुह्महिरहैलवलाई॥ तिन्ह
ढ़ं केहृदयवसङ्गरघुराई॥ स्वर्गनर्कअ्रपवर्गसमाना॥ जँहतहंदेषुधरेधनुवाना॥ कर्मवचनमनराउरचेरा॥ रामकरङ्गतिन्हकेउरडेरा॥ दो॥ जा
हिनचाहियकवङ्गकछुतुह्मसनसहजसनेह॥ वसङ्गनिरंतरतासुमनसोराउरानिजगेह॥१३२॥ एहिविधिमुनिवरभवनदेषाए॥ वचनसप्रेम चौ ६
राममनभाए॥ कहमुनिसुनङ्गभानकुलनायक॥ आश्रमकहोसमयसुखदायक॥ चित्रकूटगिरिकरङ्गनिवासू॥ तहंतुह्मारसवभांतिसु
पासू॥ शयलसोहावनकाननचारू॥ करिकेहरिमृगविहंगविहारू॥ नदीपुनीतपुराणवषानी॥ अत्रीप्रियनिजतपवलआनी॥ सुरस
रिधारनाममंदाकिनि॥ जोसवपातकपोतडाकिनि॥ अत्रिआदिमुनिवरवङ्गवसहीं॥ करहिजोगजपतपतनकसहीं॥ चलङ्गसफलश्रमस
वकरकरह्न॥ रामदेङ्गगौरोगिरिवरह्न॥ दो॥ चित्रकूटमहिमाअमितकहीमहामुनिगाइ॥ आइअन्हाएसरितवरासियसमेतदोउभाइ॥१३३
चौ॥ रघुवरकहेउलरवणभलघाटू॥ करह्नकहह्नंअवठाहरठाटू॥ लरवणदीषपयउतरकरारा॥ चङ्गदिसिफिरेउधनुकजिमिनारा॥ न

अ॰ का॰ दीपनचसरसमदमदाना॥ सकलकलुषकलिसावजनाना॥ चित्रकूटजनुअचलअहेरी॥ चुकैनघातमारुमुठभेरी॥ असकहिलषन
२७ ठावदिषरावा॥ थलविलोकिरघुवरसुखपावा॥ रमेउराममनदेवन्हजाना॥ चलेसहितसुरपतिपरधाना॥ कोलकिरातवेषसवआए॥ रचेप
र्णतृणसदनसोहाए॥ वरणिनजाइमंजुदोउशाला॥ एकललितलघुएकविशाला॥ दो॰॥ लखणजानकीसहितप्रभुराजतरुचिरनिकेत
सोहमदनमुनिवेषजनुरतिरितुराजसमेत॥१३४॥ चौ॰॥ अमरनागकिन्नरदिगपाला॥ चित्रकूटआएतेहिकाला॥ रामप्रणामकीन्हसवकाहू
मुदितदेवलहिलोचनलाहू॥ वरषिसुमनकहदेवसमाजू॥ नाथसनाथभएहमआजू॥ करिविनतीदुखदुसहसुनाए॥ हरषितनिजनिजआश्रम
आए॥ चित्रकूटरघुनंदनछाए॥ समाचारसुनिसुनिमुनिआए॥ आवतदेषिमुदितमुनिवृंदा॥ कीन्हदंडवतरघुकुलचंदा॥ मुनिरघुवरहिलाइउर
लेही॥ सफलहोनहितआशिषदेही॥ सियसौमित्रिरामछविदेषहि॥ साधनसकलसफलकरिलेखहि॥ दो॰॥ यथाजोगसनमानिप्रभुविदाकिएमुनिवृं प्रान
द॥ करहिजोगजपयागतपनिजआश्रमनिसुछंद॥१३५॥ चौ॰॥ यहसुधिकोलकिरातनपाइ॥ हरषेजनुनवनिधिघरआई॥ कंदमूलफलभ राम
भरि रिदोना॥ चलेरंकजनुलूटनसोना॥ तिन्हमहंजिन्हदेषेदोउभ्राता॥ अपरतिन्हहिपूछहिमगजाता॥ कहतसुनतरघुवीरनिकाई॥ आइसवनदेषा २७
रघुराई॥ करहिजोहारिभेटधरिआगें॥ प्रभुहिविलोकहिअतिअनुरागें॥ चित्रलिषेजनुजहंतहंठाढे॥ पुलकशरीरनयनजलवाढे॥ रामसनेहमगन
सवजाने॥ कहिप्रियवचनसकलसनमाने॥ प्रभुहिजोहारिवहोरिवहोरी॥ वचनविनीतकहहिकरजोरी॥ दो॰॥ अवहमनाथसनाथसवभएदेषि

प्रभुपाय॥भागहमारेआगमनराउरकोशलराय॥१३६॥चौ॥धन्यभूमिवनपंथपहारा॥जहंजहंनाथपावतुमधारा॥धन्यविहंगमृगकाननचा
री॥सफलजन्मभएतुम्हहिनिहारी॥हमसवधन्यसहितपरिवारा॥दीषदरसभरिनयनतुम्हारा॥कीन्हवासभलठाववि‍चारी॥इहांसकलरितुरहवसु
खारी॥हमसवभांतिकरवसेवकाई॥करिकेहरिअहिवाघवराई॥वनवीहडगिरिकंदरषोहा॥सवहमारप्रभुपगपगजोहा॥तहंतहंतुम्हहिअहेरषे
लाउव॥सरनिर्झरजलिठांवदेषाउव॥हमसेवकपरिवारसमेता॥नाथनसकुचवआयसुदेता॥दो॥वेदवचनमुनिमनअगमतेप्रभुकरुणा
र अयन॥वचनकिरातन्हकेसुनतजिमिपितुवालकवयन॥१३७॥चौ॥रामहिकेवलप्रेमपियारा॥जानिलेहुजेजाननिहारा॥रामसकलन्ह
वनचरतैतोषे॥कहिमृदुवचनप्रेमपरिपोषे॥विदाकिएसिरनाइसिधाए॥प्रभुगुणकहतसुनतघरआए॥एहिविधिसियसमेतदोउभाई
व वसहिविपिनिसुरमुनिसुखदाई॥जवतेआइरहेरघुनायक॥तवतेंभैवनमंगलदायक॥फूलहिफलहिविटपविधिनाना॥मंजुवलितवर २९
वेलिविताना॥सुरतरुसरिससुभाव सोहाए॥मनहुविवुधवनपरिहरिआए॥गुंजमंजुरसमधुकरश्रेनी॥त्रिविधवयारिवहैसुखदेनी॥दो॥नी
लकंठकलकंठसुकचातकचक्रचकोर॥भांतिभांतिवोलहिविहंगश्रवणसुखदचितचोर॥१३८॥चौ॥करिकेहरिकपिकोलकुरंगा॥विगतवयरवि
चरहिसवसंगा॥फिरतअहेररामछविदेषी॥होंहिंमुदितमृगवृंदविशेषी॥विवुधविपिणजहंलगिजगमांहीं॥देषिरामवनसकलसिहाहीं॥सुर
सरिसरसइदिनकरकन्या॥मेकलसुतागोदावरिधन्या॥सवसरसिंधनदीनदनाना॥मंदाकिनिकरकरहिवषाना॥उदयअस्तगिरिऔकैला

अ॰ को॰
२८

सू॥ मंदरु मेरु सकल सुरवासू॥ शैल हिमाचल आदिक जेते॥ चित्रकूट जस गावहि तेते॥ विंध मुदित मन सुख न समाई॥ श्रम विनु विपुल व
डाई पाई॥ दो॥ चित्रकूट के विहंग मृग वेलि विटप तृण जाति। पुन्यपुंज सव धन्य अस कहहि देव दिन राति॥ १३९॥ चौ॥ नयनवंत रघुपतिहि
विलोकी। पाइ जनम फल होहि विसोकी। परसि चरण रज अचर सुखारी॥ भए परम पद के अधि अधिकारी॥ सो वन शैल सोभाय सोहावन
मंगलमय अति पावन पावन। महिमा कहिय कवन विधि तासू॥ सुखसागर जहं कीन्ह निवासू॥ पय पयोधि तजि अवध विहाई॥ जहं सिय ल
षण राम रहे आई। कहि न सकहि सुखमा जस कानन॥ जो शत सहस होंहि सहसानन॥ सो मैं वरनि कहौं विधि केही॥ डावर कमठ कि मंदर ले
हीं। सेवहि लषण करम मन वानी। जाइ न शील सनेह वषानी॥ दो॥ छिनु छिनु लखि सिय राम पद जानि आपु पर नेह॥ करत न सपने हुल
षन चित वंधु मातु पितु गेह॥ १४०॥ चौ॥ राम संग सिय रहहि सुखारी॥ पुर परिजन गृह सुरति विसारी॥ छिनु छिनु पिय विधु वदन निहारी॥ प्रमु
दित मनहुं चकोर कुमारी॥ नाह नेह नित वढत विलोकी॥ हरषित रहति दिवस जिमि कोकी॥ सिय मन राम चरण अनुरागा॥ अवध सहस
सम वन प्रिय लागा॥ पर्णकुटी प्रिय प्रीतम संगा॥ प्रिय परिवार कुरंग विहंगा॥ सासु ससुर सम मुनितिय मुनिवर॥ असन अमिय सम कंद मू
लफर॥ नाथ साथ साथरी सोहाई॥ मयन सयन सत सम सुखदाई॥ लोकप होंहि विलोकत जासू॥ तेहि कि मोहि सक विषय विलासू॥ दो॥
सुमिरत रामहि तजहि जन तृण सम विषय विलासु॥ राम प्रिया जग जननि सिय कछु न आचरज तासु॥ १४१॥ चौ॥ सीय लषन जेहि विधि सुख

राम
२८

लहही॥सोरघुनायकरहिसोकहही॥कहहिपुरातनकथाकहानी॥सुनहिलखणसियअतिसुखमानी॥जवजवरामअवधिसुधिकरही॥त
वतववारिविलोचनभरही॥सुमिरिमातुपितुपरिजनभाई॥भरतसनेहसीलसेवकाई॥कृपासिंधप्रभुहोहिदुखारी॥धीरजधरहिकुसमौविचा
री॥लखिसियलखणविकलह्वैजोही॥जिमिपुरुषहिअनुसरपरिछांही॥प्रयाबंधगतिलखिरघुनंदन॥धीरकृपालभक्तउरचंदन॥लगेक
हनकछुकथापुनीता॥मुनिसुखलहहिलषनअरुसीता॥दो॥रामलखनसीतासहितसोहतपरननिकेत॥जिमिवासववसअमरपुर
सचीजयंतसमेत॥१४२॥चौ॥जोगवहिप्रभुसियलषनहिकैसे॥पलकविलोचनगोलकजैसे॥सेवहिलषनसीयरघुवीरहि॥जिमिअविवे
कीपुरुषसरीरहि॥एहिविधिप्रभुवनवसहिसुखारी॥षगम्रगसुरतापसहितकारी॥कहेउरामवनगवनसोहावा॥सुनहुसुमंतअवधिजि
मिआवा॥फिरेउनिषादप्रभुपहुंचाई॥सचिवसहितरथदेखेसिआई॥मंत्रीविकलविलोकिनिषादू॥कहिनजाइजसभयउविषादू॥रामरामसि
यलखनपुकारी॥परेउधरणितलब्याकुलभारी॥देखिदखिणदिसिहयहिहिनाही॥जनुविनुपंषविहंगअकुलाही॥दो॥नहितृणचरहि
नपियहिजलमोचहिलोचनवारि॥ब्याकुलभएनिषादपतिरघुवरवाजिनिहारि॥१४३॥चौ॥धरिधीरजतवकहेनिषादू॥अवसुमंतपरिहरहु
विषादू॥तुम्हपंडितपरमारथजाता॥धरहुधीरलखिवामविधाता॥विविधकथाकहिम्रदुवानी॥रथवैठारेउवरवसआनी॥सोकसिथिलरथ
सकैनहांकी॥रघुवरविरहपीरअतिवांकी॥फरफराहिमगचलहिनघोरा॥वनम्रगमनहुंआनिरथजोरा॥उढुकिपरहिफिरिहेरहिपीछे॥राम

अ॰ कां॰ वियोगविकलदुखतीछे॥ जोकहरामलषणवैदेही॥ हंकरिहंकरिहयहेरहितेही॥ वाजिविरहगतिकिमिकहिजाती॥ विनुमणिफनिकविकलजे
२९ हिभाती॥ दो॥ भयउनिषादविषादवसदेषतसचिवतुरंग॥ वोलिसुसेवकचारितवदियेसारथीसंग॥१४४॥ चौ॥ गुहसारथीफिरेउपहुचा
ई॥ विरहविषादवरनिनहिजाई॥ चलेउअवधिलेरथहिनिषादू॥ होहिछिनहिछिनमगनविषादू॥ सोचसुमंतविकलदुखदीना॥ धृगजीव
णरघुवीरविहीना॥ रहिहिनअंतहुअधमसरीरा॥ जसनलियउविछुरतरघुवीरा॥ भयउअजसअघभाजनप्राना॥ कवनहेतुनहिक
रतपयाना॥ अहहमंदमनअवसरचूका॥ अजहुनहृदयहोइदोइटूका॥ मीजिहाथसिरधुनिपछिताई॥ मनहुकृपनधनरासिगवाइ॥ वि
रदवाधिवरवीरकहाई॥ चलेसमरजिमिसुभटलजाइ॥ दो॥ विप्रविवेकीवेदविधिसंमतसाधसुजाति॥ जिमिधोषेमदपानकियसचिवसोच
एहिभांति॥१४५॥ चौ॥ जिमिकुलीनतियसाधसयानी॥ पतिदेवताकरममनवानी॥ रहैकरमवसिपरिहरिनाहू॥ सचिवहृदयतिमिदारु
णदाहू॥ लोचनसजलडीठिभईथोरी॥ सुनैनश्रवणविकलमतिभोरी॥ सूकहिअधरलागमुहलाटी॥ जीवनजाइउरअवधिकपाटी॥ विवरण राम
भयउनजाइनिहारी॥ मारेसिमनहुपितामहतारी॥ हानिगलानिविपुलमनव्यापी॥ यमपुरपंथसोचजिमिपापी॥ वचननआवहृदयपछि २९
ताई॥ अवधिकाहमैंदेषवजाई॥ रामरहितरथदेखिहिजोई॥ सकुचिहिमोहिविलोकतसोइ॥ दो॥ धाइपछिहहिमोहिजवविकलनगरनर
रनारि॥ उतरदेवमैंसवहितवहृदेवज्रवैठारि॥१४६॥ चौ॥ पछिहहिदीनदुखीसवमाता॥ कहवकाहमैंतिन्हविधाता॥ पछिहहिजवहिलखनमहता

री॥कहिहोंकवनसंदेससुखारी॥रामजननिजबआइहिधाई॥सुमिरिवछ्छजनुधेनुलवाइ॥पूछतउतरदेबमैंतेही॥गवनेरामलखण
वैदेही॥जेपूछिहितेहिउतरदेवा॥जाइअवधिअवयहफललेवा॥पूछिहहिंजबहिराउदुखदीना॥जीवणजासुरघुनाथविहीना॥देहौंउतर
कवनमुहलाइ॥आयउकुशलकुंवरपहुचाई॥सुनतलखणसियरामसंदेसू॥तृणसमतनपरिहरिहिनरेसू॥दो॥हृदयनविहरेउपंकजिमि
विछुरतप्रीतमनीर॥जानतहौंमोहिदीन्हविधियहजातनाशरीर॥१४७॥चौ॥एहिविधिकरतपंथपछतावा॥तमसातीरतुरितरथआवा॥विदा
किएकरिविनयनिषादा॥फिरेपायपरिविनयविषादा॥पैठतनगरसचिवसकुचाई॥जनुमारेसिगुरुब्राह्मनगाई॥वैठिविटपतरदिवसगवावा॥
सांझसमैतवऔसरपावा॥अवधिप्रवेशकीन्हअंधियारे॥पैठभवनरथराषिदुवारे॥जिन्हजिन्हसमोरसुनिपाए॥भूपद्वाररथदेषनआए॥र चा
थपहिचानिविकललषिघोरे॥गरहिगातजनुआतपवोरे॥नगरनारिनरव्याकुलकैसे॥निघटेनीरमीनगणजैसे॥दो॥सचिवआगमनसु
नतनृपविकलभइरनिवास॥भवनभयंकरलागतिमिमानहुंप्रेतनिवास॥१४८॥चौ॥अतिआरतसवपूछहिरानी॥उतरनआवविक
लभयवानी॥सुनैनश्रवणनयननहिसूझा॥कहहुकहांनृपजेहितेहिवूझा॥दासिन्हदीषसचिवविकलाई॥कौशिल्यागृहगइलेवाई॥जा
इसुमंतदीषकैसराजा॥अमियरहितजनुचंदविराजा॥आसनसयनविभूषनहीना॥परेउभूमितलनिपटमलीना॥लेइउसाससोचएहिभां
ती॥सुरपुरतेजनुगिरेउजजाती॥लेतसोचभरिछिनुछिनुछाती॥जनुजरिपंषपरेउसंपाती॥रामरामकहरामसनेही॥पुनिकहरामलषण

अ०का० णवैदेही॥ दो॥ देषिसचिवजयजीवकहि कीन्हेउ दंड प्रणाम॥ सुनतउठेउ व्याकुलन्रपति कहु सुमंतकहराम॥१४९॥ चौ॥ भूपसुमंतलीन्हउरला
३० ई॥ बूडतकछुअधारजनुपाई॥ सहितसनेहनिकटवैठारी॥ पूछतराउनयनभरिवारी॥ रामकुशलकहुसरवासनेही॥ कहरघुनाथलरव
णवैदेही॥ आनेफेरिकीवनहिसिधाए॥ सुनतसचिवलोचनजलछाए॥ सोकविकलपुनिपूछनरेशू॥ कहुसियरामलषनसंदेशू॥ रामरूप
गुणशीलसुभाऊ॥ सुमिरिसुमिरिउरसोचतराऊ॥ राजसुनाइदीन्हवनवासू॥ सुनिमनभयउनहरषहरासू॥ सोसुतविछुरतगयउनप्राना॥
कोपापीवडमोहिसमाना॥ दो॥ सरवारामसियलरवणजहतहांमोहिपहुंचाउ॥ नाहितचाहतचलनअवप्राणकहोसतभाउ॥१५०॥ चौ॥ पु
निपुनिपूछतमंत्रिहिराऊ॥ प्रीतमसुवनसंदेशसुनाऊ॥ करहुसरवासोइवेगिउपाऊ॥ रामलरवणसियआनिदेषाऊ॥ सचिवधीरधरि
कहम्रदुवानी॥ महाराजतुमपंडितज्ञानी॥ धीरधुरीनधुरंधरदेवा॥ साधुसमाजसदातुमसेवा॥ जनममरणसवदुरवसुरवभोगा॥ हानि
लाभप्रियमिलनवियोगा॥ कालकरमवसहोंहिगोसाईं॥ वरवसरातिदिवसकीनाईं॥ सुरवहरषहिजडदुरवविलरवाही॥ दोउसमधीर राम
धरहिमनमाही॥ धीरजधरहुविवेकविचारी॥ छाडिअसोचसकलहितकारी॥ दो॥ प्रथमवासतमसाभयउदूसरसुरसरितीर॥ न्हाइ ३०
रहेजलपानकरिसियसमेतदोउवीर॥१५१॥ चौ॥ केवटकीन्हवहुतसेवकाई॥ सोजामिनिसृंगवेरगवाई॥ होतप्रातवटछीरमगावा
जटामुकुटनिजसीसवनावा॥ रामसरवातववनावमगाई॥ प्रियाचढाइचढेरघुराई॥ लरवणवाणधनुधरेवनाई॥ आपुचढेप्रभुआयसुपा

ई॥ विकलविलोकिमोहिरघुवीरा॥ बोलेमधुरवचनधरिधीरा॥ तातप्रनामतातसनकहहु॥ वारवारपदपंकजगहहू॥ करवपायपरिविनयव
होरी॥ ताततकरिअजनिविनतामोरी॥ वणमुदमंगलकुशलहमारे॥ कृपाअनुग्रहपुन्यतुम्हारे॥ छं॥ तुम्हरेअनुग्रहतातकाननजातसवसुखपा
इहों॥ प्रतिपालिआयसुकुशलदेषनपायपुनिफिरिआइहों॥ जननीसकलपरितोषकरिपरिपायकरिविनतीघनी॥ तुलसीकरेहुसोईजत
नजेहितेंकुशलरहकोशलधनी॥ सो॥ गुरुसनकहवसंदेसवारवारपदकमलगहि॥ करवसोईउपदेसजेहिनसोचमोहिअवधिपति॥१५२॥ चौ
पुरजनपरिजनसकलनिहोरी॥ तातसुनाएहुविनतीमोरी॥ सोइसवभांतिमोरहितकारी॥ जातेरहनरनाहसुखारी॥ कहवसंदेसभरतकेआए
नीतिनतजवराजपदपाए॥ पालेहुप्रजहिकर्ममनवानी॥ सेएहुमातुसकलसमजानी॥ वोरनिवाहेहुभायपभाई॥ करिपितुमातुचरणसे
वकाई॥ तातभांतितेहिराषवराऊ॥ सोचमोरजेहिकरैनकाऊ॥ लखनकहेउकछुवचनकठोरा॥ वरजिरामपुनिमोहिनिहोरा॥ वारवारनिज
सपथदिवाइ॥ कहवनतातलखणलरिकाइ॥ दो॥ कहिप्रणामकछुकहनलियसियभइसिथिलसनेह॥ थकितवचनलोचनसजलपुलकि
पल्लवितदेह॥१५३॥ चौ॥ तेहिअवसररघुवररुषपाई॥ केवटपारहिनावचलाई॥ रघुकुलतिलकचलेएहिभांती॥ देषेउठाढकुलिसधरिछा
ती॥ मैआपनकिमिकहोकलेसू॥ जियतफिरेउलैरामसंदेसू॥ असकहिसचिववचनरहिगयऊ॥ हानिगलानिसोचवसिभयऊ॥ सू
तवचनसुनतनरनाहू॥ परेउधरणिउरदारुणदाहू॥ तलफतविकलमोहमनमांपा॥ मज्जामनहुंमीनकहंव्यापा॥ करिविलापसव

रोवहिरानी॥महाविपतिकिमिजाइवषानी॥सुनिविलापदुखहूंदुखलागा॥धीरजहूकरधीरजभागा॥दो॥भयउकोलाहलनगरअतिसु
निनृपराउरसोर॥विपुलविहंगवनपरेउनिशिमानहुकुलिशकटोर॥१५४॥चौ॥प्राणकंठगतभयउभुवालू॥मनिविहीनजिमिव्याकुल
व्यालू॥इंद्रीसकलविकलभयभारी॥जनुसरसरसिजवनविनुवारी॥कौशल्यानृपदीषमलाना॥रविकुलरविअथयेजियजाना॥उर
धरिधीररामम्हतारी॥वोलीवचनसमयअनुसारी॥नाथसमुझिमनकरियविचारू॥रामवियोगपयोधिअपारू॥करणधारतुम्हअवधिजहा
जू॥चढेउसकलप्रियपथिकसमाजू॥धीरजधरिअतिपाइअपारू॥नाहितबूडिहिसवपरिवारू॥जौंजियधरिअविनयप्रभुमोरी॥रामलष
नसियमिलहिवहोरी॥दो॥प्रियावचनमृदुसुनतनृपचितयउनयनउघारि॥तलफतमीनमलीनजनुसींचेउसीतलवारि॥१५५॥चौ॥
धरिधीरजउठिवैठुभुवालू॥कहुसुमंतकहंराममहीपालू॥कहांलषनकहंरामसनेही॥कहंप्रियपुत्रवधूवयदेही॥विलपतराउविकलवहु
भांती॥भइयुगसरिसमसिरातनराती॥तापसअंधशापसुधिआई॥कौशिल्यहिकहिसकलसुनाई॥भयउविकलवरनतइतिहासा॥रामरहि राम
तधिगजीवनआसा॥सोतनराखिकरवमैंकाहा॥जेहिनप्रेमपनवोरनिवाहा॥हारघुनंदनप्राणपरीते॥तुमविनुजियतवहुतदिनवीते ३१
हाजानकीलषणहारघुवर॥हापितुहितुहाचातकजलधर॥दो॥रामरामकहिरामकहिरामरामकहिराम॥तनुपरिहरिरघुवरविरहराउग
एसुरधाम॥१५६॥चौ॥जियनमरणफलदशरथपावा॥अंडअनेकअमलजसछावा॥जियतरामविधुवदननिहारा॥रामविरहकरिम

रण सवारा॥ सोकविकल सव रोवहि रानी॥ रूप शील वल तेज वषानी॥ करहि विलाप अनेक प्रकारा॥ परहि भूमितल वारहि वारा॥ विलौंहि विकल दास अरु दासी॥ घर घर रोदन करहि पुरवासी॥ अथयउ आजु भानकुल भानू॥ धर्म अवधि गुण रूप निधानू॥ गारी सकल कैकई देई॥ नैन विहून कीन्ह जग जेई॥ एहि विधि विलपत रैनि विहानी॥ आए सकल महा मुनि ग्यानी॥ दो॥ तव वशिष्ट मुनि समय सम कहि अनेक इतिहास॥ सोक निवारेउ सवहि कर निज विज्ञान प्रकास॥ १५७॥ चौ॥ तेल नाव भरि न्रिप तन राषा॥ दूत वोलाइ वहुरि अस भाषा॥ धावहु वेगि भरत पहं जाहू॥ न्रप सुधि कतहु कहेहु जनि काहू॥ इतनै कहेहु भरत सन जाई॥ गुरु वोलाइ पठए दोउ भाई॥ सुनि मुनि आयसु धावन धाए॥ चले वेग वर वाजि लजाए॥ अनरथ अवधि अरंभेउ जवतें॥ कुसगुण होहि भरत के तवतें॥ देषहि राति भयावन सपना॥ जागि करहि कटु कोटि कलपना॥ विप्र जेवाइ देहि वहु दाना॥ शिव अभिषेक करहि विधि नाना॥ मांगहि हृदय महेश मनाई॥ कुशल मातु पितु परिजन भाई॥ दो॥ एहि विधि सोचत भरत मन धावन पहुचे जाइ॥ गुरु अनुसासन श्रवण सुनि चले गणेश मनाइ॥ १५८॥ चौ॥ चले समीर वेग हय हांके॥ नाघत सरित शैल वन वांके॥ हृदय सोच वड कछु न सोहाई॥ अस जानहि जिय जाउं उडाई॥ एक निमेष कल्प सम जाई॥ एहि विधि भरत नगर निअराई॥ असगुर होइ नगर पैसारा॥ रटहि कुभांति कुषेत करारा॥ षर स्रकाल वोलत प्रतिकूला॥ सुनि सुनि होइ भरत उर सूला॥ श्रीहत सर सरिता वर वागा॥ नगर विशेष भयावन लागा॥ षग म्रग हय गय जाहि न जोए॥ राम वियोग कुरोग विगोए॥ नगर नारि नर निपट दुखारी॥ मनहुं सव

प

अ०कां० निसवसंपतिहारी॥ दो॥ पुरजनमिलहिनकहहिकछुगवहिजोहारहिजांहि॥ पुछिनसकहिभरतकुशलभएविषादमनमाहि॥
३२ १५९॥ चौ॥ हाटवाटनहिजाइनिहारी॥ जनुपुरदहुदिसलागिदवारी॥ आवतसुतसुनिकैकैनंदिनि॥ हरखीरविकुलजलरुहचंदिनि
सजिआरतीमुदितउठिधाई॥ द्वारहिभेटिभवनलेइआई॥ भरतदुखितपरिवारनिहारी॥ मानहुतुहिनकंजवनमारी॥ कैकेइहरषितएहि
भांती॥ मनहुंमुदितदवलाइकिराती॥ सुतहिससोचदेखिमनमारे॥ पूछतिनैहरकुशलहमारे॥ सकलकुशलकहिभरतसुनाई॥ सछी
मा निजकुलकुशलभलाई॥ कहुकहंतातकहासबमाता॥ कहसियरामलषनप्रियभ्राता॥ दो॥ सुनिसुतवचनसनेहमयकपटनीरभरि
नैन॥ भरतश्रवणमनसूलसमपापिनिबोलीबैन॥१६०॥ चौ॥ तातबातमैंसकलसवारी॥ भइमंथरासहाइविचारी॥ कछुककाजविधिबी
चबिगारे॥ भूपतिसुरपतिपुरपगुधारे॥ सुनतभरतभएविकलविषादा॥ जनुसहमेकरिकेहरिनादा॥ तात तात हा तात पुकारी॥ परेउभूमित
तोदि लव्याकुलभारी॥ चलततनदेषनपायउ॥ तातनरामहिसौंपेउमोही॥ वहुरिधीरधरिउठेउसंभारी॥ कहुपितुमरणहेतुमहतारी॥ सुनिसुत राम ३२
वचनकहतिकैकेई॥ मरमुपांछिजनुमाहुरदेई॥ आदिहुतेसबआपनिकरणी॥ कुटिलकठोरमुदितमनवरणी॥ दो॥ भरतहिविसरेउ
पितुमरणसुनतरामवनगौन॥ हेतुआपनीजानिजियथकितरहेधरिमौन॥१६१॥ चौ॥ विकलविलोकिसुतहिसमुझावति॥ मनहुज
रेपरलोनलगावति॥ तातराउनहिसोचैयोगू॥ वढइसुकृतजसकीन्हेउभोगू॥ जीवतसकलजनमफलपाए॥ अंतअमरपति

सदनसिधाए॥ असअनुमानसोचपरहरहू॥ सहितसमाजराजपुरकरहू॥ सुनिसुठिसहमेउराजकुमारा॥ पाकेषतजनुलागुअंगारा
धीरजधरिभरिलेहिउसासा॥ पापिनिसवहिभांतिकुलनासा॥ जौंपैकुरुचिरहीअतितोही॥ जनमतकसनहिमारेमोही॥ पेडकाटितैपालवसी
चा॥ मीनजिवणहितवारिउलीचा॥ दो॥ हंसवंसदशरथजनकरामलखणसेभाइ॥ जननीतूजननीभईविधिसोंकछुनवसाइ॥१६२॥ चो॥
जवतैंकुमतिकुमतिजियठयउ॥ षंडषंडहोइहृदयनगयऊ॥ वरमांगततनभयउनपीरा॥ गरीजीभिमुखपरीनकीरा॥ भूपप्रतीतितोरकिमिकीन्हा
मरणकालविधिमतिहरिलीन्हा॥ विधिहुननारिहृदयगतिजानी॥ सकलकपटअघऔगुणषानी॥ सरलसुसीलधर्मरतराऊ॥ सोकिमिजानैना
रिसुभाऊ॥ असकोजीवजंतुजगमांही॥ जेहिरघुनाथप्राणप्रियनाही॥ भैअतिअहितरामतेतोही॥ कोतैअहसिसत्यकहुमोही॥ जोहसिसोहसिमुहमस
८ सिलाई॥ आंषिओटमुखवैठहुजाई॥ दो॥ रामविरोधीहृदयतेंप्रगटकीन्हविधिमोहि॥ मोहिसमानकोपातकीवादिकहौंकातोहि॥१६३॥ चौ॥ सुनीशत्रु चो॥
हनमातुकुटिलाइ॥ जरहिगातरिसिकछुनवसाई॥ तेहिऔसरकुवरीतहंआइ॥ वसनविभूषनविविधवनाई॥ लखिरिसिभरेउलखणलघुभाई॥
वरतअनलघृतआहुतिपाई॥ उमगिलाततकिकूवरमारा॥ परीमुहभरमहिकरतपुकारा॥ कूवरटूटेउफुटेउकपारा॥ दलितदसनमुखरुधिरप्रचा
रा॥ अहहदेवमैंकाहनसावा॥ करतनीकफलअनइसपावा॥ सुनिरिपुहनलषिनषसिषषोटी॥ लागघसीटनधरिधरिझोंटी॥ भरतदयानिधिदीन्ह
छुडाई॥ कौशिल्यापहंगेदोउभाई॥ दो॥ मलिनवसनविवरणविकलकृशसरीरदुखभार॥ कनककलपवरवेलिकहमानहुहनीतुसार॥१६४

अ० का० चौ॥भरतहिदेषिमातुउठिधाई॥मूर्छितअवनिपरीझौंआइ॥देषतभरतविकलभौभारी॥परेउचरणतनदशाविसारी॥मातुतातकहदेहिदिषा
३३ इ॥कहसियरामलखणदोउभाई॥कैकेइकतजननीजगमांझा॥जौंजनमीतौभइकिनवांझा॥कुलकलंकजेजनमेउमोही॥अपजस
भाजनप्रियजनद्रोही॥कोत्रभुवनमोहिसरिसअभागी॥गतिअसितोरिमांतुजेहिलागी॥पितुसुरपुरवनरघुकुलकेतू॥मैंकेवलसवअनरथ
हेतू॥धृगमोहिभयउवेनुवनआगी॥दुसहदाहदुखदूखणभागी॥दो॥मातुभरतकेवचनम्रदुसुनिपुनिउठीसंभारि॥लिएउठाइलगाइउर
लोचनमोचतिवारि॥१६५॥चौ॥सरलसुभायमायउरलाए॥अतिहितमनहुंरामफिरिआए॥भेटेउवहुरिलषनलघुभाई॥सोकसनेहनहृ
दयसमाई॥देषिसुभावकहतसवकोई॥राममातुअसकाहेनहोई॥मांतभिरतगोदवैठारी॥आंसुपोंछिम्रदुवचनउचारी॥अजहुंवछवलिधी
रजधरहूं॥कुसमयसमुझिसोकपरिहरहू॥जनिमानहुजियहानिगलानी॥कालकर्म्मगतिअघटितजानी॥काहुहिदोसदेहुजनिताता॥
भामोहिसवविधिवामविधाता॥जोएतेदुखमोहिजिआवा॥अजहुंकोजानैकातेहिभावा॥दो॥पितुआयसुभूषणवसनताततजेउरघुवीर॥ राम
विसमयहरषनहृदयकछुपहिरेवलकलचीर॥१६६॥चौ॥मुखप्रसन्नमनरागनरोषा॥सवकरसवविधिकरिपरितोषा॥चलेविपिनिसुनिसिय ३३
संगलागी॥रहैनरामचरणअनुरागी॥सुनतहिलखनचलेउठिसाथा॥रहहिनजतनकियेरघुनाथा॥तवरघुवीरसवहिसिरनाइ॥चलेसंगसियअ
रुलघुभाई॥रामलषणसियवनहिसिधाए॥गइउंनसंगनप्राणपठाए॥यहसवभाइनआंषिन्हआगे॥तौनतजाततनजीवअभागे॥मोहिनला

जानिज नेहहि विचारी ।। राम सरिस सुत मैं महतारी ।। जियैं मरैं भल भूपति जाना ।। मोर हृदय शत कुलिस समाना ।। दो ।। कौशिल्या के वचन सु

नि भरत सहित रनिवास ।। व्याकुल विलपत राजग्रह मानहुं सोक निवास ।। १६७ ।। चौ ।। विलपहि विकल भरत दोउ भाई ।। कौशिल्या लिए हृदय लगा

ई ।। भांति अनेक मातु समुझाई ।। कहि अनेक इतिहास सोहाइ ।। भरत हुं मातु सकल समुझाए ।। कहि पुराण श्रुति कथा वुझाए ।। छल विहीन

सुचि सरल सुवानी ।। वोले भरत योरि युग पानी ।। जे अघ मातु पिता सुत मारे ।। गाइ गोठ महिसुर पुर जारे ।। जे अघ तिय वालक वध कीन्हे ।। मीत म

हीप हि माहुर दीन्हे ।। जे पातक उपपातक अहहीं ।। कर्म वचन मन भव कवि कहहीं ।। ते पातक मोहि होउ विधाता ।। जौं जानौ यह संमत माता ।। दो ।। जे

परिहरि हरि हर चरण भजहिं भूतघन घोर ।। तेहि कै गति मोहि देहु विधि जौं जननी मत मोर ।। १६८ ।। चौ ।। वेचहि वेद धर्म दुहि लेहीं ।। पिशुन पराय पाप

कहि देहीं ।। कपटी कुटिल कलह प्रिय क्रोधी ।। वेद विदूषक विश्व विरोधी ।। लोभी लंपट लोलुप चारा ।। जे ताकहि पर धन पर दारा ।। पावौ मैं तिन्ह कै गति घो

रा ।। जौं जननी यह संमत मोरा ।। जे नहि साधु संग अनुरागे ।। परमारथ पथ विमुख अभागे ।। जे न भजहि हरि नर तनु पाइ ।। जिन्हहि न हरि हर सुजस

सोहाइ ।। तजि श्रुति पंथ वाम पथ चलहीं ।। वंचक विरचि वेष जग छलहीं ।। तिन्ह कै गति मोहि शंकर देऊ ।। जौं जननी जानौ यह भेऊ ।। दो ।। मातु भरत के

वचन सुनि साचे सरल सुभाय ।। कहति राम प्रिय तात तुम सदा वचन मन काय ।। १६९ ।। चौ ।। राम प्राण हुं ते प्राण तुम्हारे ।। तुम रघुपति हि प्राण ते प्यारे ।। विधु वि

धु चवै श्रवै हिम आगी ।। होइ वारि चर वारि विरागी ।। भयें ज्ञान वरु मिटै न मोहू ।। तुम्ह रामहि प्रतिकूल न होहू ।। मत तुम्हार यह जो जग कहहीं ।। सो सपनेसु

अ॰ का॰ रव सुगति न लहिहि ही ॥ अस कहि मातु भरत हिय लाए ॥ थन पय स्त्रवत नयन जल छाए ॥ करत विलाप विपुल एहि भांती ॥ बैठहि वीति गई सब राती ॥
३४ वामदेव वसिष्ठ तव आए ॥ सचिव महाजन सकल वोलाए ॥ मुनि वहु भांति भरत उपदेसे ॥ कहि परमारथ वचन सुदेसे ॥ दो॰ ॥ तात हृदय धीरज धरहु
करहु जो औसर आजु ॥ उठे भरत गुरु वचन सुनि करण कहेउ सव काजु ॥ १७० ॥ चौ॰ ॥ न्हपतन वेद विहित अन्हवावा ॥ परम विचित्र विमान वनावा ॥
गहि पद भरत मातु सव राखी ॥ रही राम दरसन अभिलाषी ॥ चंदन अगर भार वहु आए ॥ अमित अनेक सुगंध सोहाए ॥ सरयू तीर रचि चिता वनाइ ॥
जनु सुरपुर सोपान सोहाइ ॥ एहि विधि दाह क्रिया सव कीन्ही ॥ विधिवत न्हाइ तिलांजुरि दीन्ही ॥ सोधि सुमृत सव वेद पुराना ॥ कीन्ह भरत दश
गात्र विधाना ॥ जहं जस मुनिवर आयसु दीन्हा ॥ तहं तस सहस भांति सव कीन्हा ॥ भए विशुद्ध दिए सव दाना ॥ धेनु वाजि गय वाहन नाना ॥ दो॰ ॥ सिं
घासन भूषन वसन अन्न धरणि धन धाम ॥ दिए भरत लहि भूमिसुर भए परिपूरण काम ॥ १ ॥ ॥ १७१ ॥ चौ॰ ॥ पितु हित भरत कीन्ह जस करणी ॥ सो मुख ल
लाख जाइ नहि वरणी ॥ सुदिन सोधि मुनिवर सव आए ॥ सचिव महाजन सकल वुलाए ॥ वैठे राजसभा सव जाई ॥ पठए वोलि भरत दोउ भाई ॥ भर राम
त वसिष्ठ निकट वैठारे ॥ नीति धर्ममय वचन उचारे ॥ प्रथम कथा सव मुनिवर वरणी ॥ कैकै कुटिल कीन्ह जस करणी ॥ भूप धर्मव्रत सत्य सराहा ॥ जे ३४
हि तनु परिहरि प्रेम निवाहा ॥ कहत राम गुण शील सुभाऊ ॥ सजल नयन पुलके मुनिराउ ॥ वहुरि लखन सिय प्रीति वषानी ॥ सोक सनेह मग
न मुनि ग्यानी ॥ दो॰ ॥ सुनहु भरत भावी प्रवल विलखि कहे मुनिनाथ ॥ हानि लाभ जीवण मरण जस अपजस विधि हाथ ॥ १७२ ॥ चौ॰ ॥ अस

विचारि केहि देइअ दोसू ॥ ब्रथा काहि पर कीजिय रोसू ॥ तात विचार करहु मन मांही ॥ सोच योग दशरथ न्रप नाही ॥ सोचिअ विप्र वेद विधि हीना ॥
तजि निज धर्म विषय लैलीना ॥ सोचिअ न्रप जो नीति न जाना ॥ जेहि न प्रजा प्रिय प्राण समाना ॥ सोचिअ वैश क्रपिन धनवानू ॥ जो आतिथि
य शिवभक्त न जानू ॥ सोचिव सुद्र विप्र अपमानी ॥ मुखर मान प्रिय ज्ञान गुमानी ॥ सोचिय पुनि पति वंचक नारी ॥ कुटिल कलह प्रिय इछाचारी ॥
सोचिय वटु निज ब्रत परिहरई ॥ जे नहि गुरु आयसु अनुसरई ॥ दो ॥ सोचिय ग्रही जो मोह वस करै कर्म पथ त्याग ॥ सोचिय जती प्रपंचरत वि
गत विवेक विराग ॥१७३॥ चौ ॥ वैषानस सोइ सोचै जोगू ॥ तप विहाइ जेहि भावै भोगू ॥ सोचिय पिसुन अकारण क्रोधी ॥ जननि जनक गुरु वं
धु विरोधी ॥ सव विधि सोचिय पर अपकारी ॥ निज तन पोषक निर्दय भारी ॥ सोचनीय सवही विधि सोई ॥ जो न छाडि छल हरिजन हो
ई ॥ सोचै सचिव जेहि नेति न आज ॥ वैद न रुज भेषज लषि पाऊ ॥ सोचनीय नहि कौशलराऊ ॥ भुवन चारिदश प्रगट प्रभाऊ ॥ भय उ न अहै
न अव होनिहारा ॥ भूप भरत जस पिता तुम्हारा ॥ विधि हरि हर सुरपति दिशिनाथा ॥ वरणहि सव दशरथ गुणगाथा ॥ दो ॥ कहहु तात केहि भाति कौ
उ करहि वडाइ तासु ॥ राम लषण तुम्ह शत्रुहन सरिस सुवंस सुचि जासु ॥१७४॥ चौ ॥ सव प्रकार भूपति वड भागी ॥ वादि विषाद करिय तेहि लागी ॥ न
यह सुनि समुझि सोच परिहरहू ॥ सिर धरि राय रजायसु करहू ॥ राय राज पद तुम्ह कह दीन्हा ॥ पिता वचन फुर चाहिय कीन्हा ॥ त्यागेउ राम वचन
हित लागी ॥ तन परिहरेउ राम विरहागी ॥ न्रपहि वचन प्रिय नहि प्रिय प्राना ॥ करहु तात पितु वचन प्रमाना ॥ करहु सीस धरि भूप रजाइ ॥ है तुम्ह

अ०कां० कहं सब भांति भलाई ॥ परसराम पितु आयसु राषी ॥ मारी मांतु लोक सब साषी ॥ तनय जजातिहि जौवन दयऊ ॥ पितु अग्या अघ अजस न भ अ
३५ यऊ ॥ दो० ॥ अनुचित उचित बिचार तजि जो पालहि पितु बैन ॥ ते भाजन सुख सुजस के बसहि अमरपति ऐन ॥ १७५ ॥ चौ० ॥ अवसि नरेस बचन फु
र करहू ॥ पालहु प्रजा सोच परिहरहू ॥ सुरपुर नृप पाइहि परितोषू ॥ तुम्ह कह सुकृत सुजस नहि दोषू ॥ बेद बिहित संमत सब ही का ॥ जेहि पितु दे
इ सो पावै टीका ॥ करहु राज परिहरहु गलानी ॥ मानहु मोर बचन हित जानी ॥ सुनि सुख लहब राम बैदेही ॥ अनुचित कहब न पंडित केही ॥ कौस
िल्यादि सकल महतारी ॥ तेउ प्रजा सुख होंहिं सुखारी ॥ प्रेम तुम्हार राम कर जानहि ॥ सो सब बिधि तुम्ह सो भल मानहि ॥ सौंपेउ राज राम के आए
सेवा करेहु सनेह सुभाए ॥ दो० ॥ कीजिय गुरु आयसु अवसि कहहि सचिव कर जोरि ॥ रघुपति आए उचित जस तस पुनि करब बहोरि ॥ १७६ ॥ चौ०
कौसिल्या धरि धीरज कहई ॥ सत परम गुरु आयसु अहई ॥ सो आदरि अ करि अ हित मानी ॥ तजिय बिषाद काल गति जानी ॥ बन रघुपति सुरपु
र नरनाहू ॥ तुम्ह एहि भांति तात कदराहू ॥ परिजन प्रजा सचिव सब अंबा ॥ तुमही सुत सब के अवलंबा ॥ लखि बिधि बाम काल कठिनाई ॥ धीरज ध राम
रहु मातु बलि जाई ॥ सिर धरि गुरु आयसु अनुसरहू ॥ प्रजा पालि पुरजन दुख हरहू ॥ गुरु के बचन सचिव अभिनंदन ॥ सुनत भरत हिय हित उ ३५
र चंदन ॥ सुनी बहोरि मातु मृदु बानी ॥ सील सनेह सरल रस सानी ॥ छं० ॥ सानी सरल रस मातु बानी सुनि भरत ब्याकुल भये ॥ लोचन सरोरुह स्रवत
सींचत बिरह उर अंकुर नए ॥ सो दसा देषत समै तेहि बिसरी सबहि सुधि देह की ॥ तुलसी सराहत सकल सादर सीव सहज सनेह की ॥ सो० ॥ भरत क

मलकरजोरिधीरधरंधरधीरधरि ॥ वचनअमीयजिमिवोरिदेतउचितउत्तरसवहि ॥ १७७ ॥ चौ ॥ मोहिउपदेशदीन्हगुरुनीका ॥ प्रजासचिवं
संमतसवहीका ॥ मांतुउचितधरिआयसुदीन्हा ॥ अवसिसीसधरिचाहोंकीन्हा ॥ गुरुपितुमातुस्वामिहितवानी ॥ सुनिमनमुदितकरियभल
जानी ॥ उचितकिअनुचितकिएविचारू ॥ धर्मजाइसिरपातषभारू ॥ तुमतौदेहुसरलसिषसोई ॥ जोआचरतमोरभलहोई ॥ जद्यपियहसमुझतहोंनी
के ॥ तदपिहोतपरितोषनजीके ॥ अवतुम्हविनयमोरिसुनिलेहू ॥ मोहिअनुहरतसिषावनदेहू ॥ उत्तरदेउछमवअपराधू ॥ दुखितदोषगुनगनहिन
साधू ॥ दो ॥ पितुसुरपुरसियरामवनकरणकहहुमोहिराज ॥ एहितेजानहुमोरहितकैआपनवडकाज ॥ १७८ ॥ चौ ॥ हितहमारसियपतिसेवकाई
सोहरि लीन्हमातुकुटिलाई ॥ मैअनुमानिदीषमनमाही ॥ आनउपाइमोरहितनाही ॥ सोकसमाजराजकेहिलेषे ॥ रामलखणसियपद
न विनुदेषे ॥ वादिवसंविनुभूषनभारू ॥ वादिविरतिविनुब्रह्मविचारू ॥ सहजसरीरवादिवहुभोगा ॥ विनुहरिभक्तिवादिजपजोगा ॥ जायजीयवि
नुदेहसोहाई ॥ वादिमोरसवविनुरघुराई ॥ जांउरामपहंआयसुदेहू ॥ एकहिआंकमोरहितएहू ॥ मोहिनृपकरिभलआपनचहहू ॥ सोसनेह
जडतावसकहहू ॥ दो ॥ कैकेसुअनकुटिलमतरामविमुखगतलाज ॥ तुमचाहहुसुखमोहवसमोहिसेअधमकेराज ॥ १७९ ॥ चौ ॥ कहोंसाचसव
सुनिपतिआहू ॥ चाहिअधर्मशीलनरनाहू ॥ मोहिराजहठिदीहहुजवही ॥ रसारसातलजाइहितवही ॥ मोहिसमानकोपापनिवासू ॥ जेहिलगि
रामसीयवनवासू ॥ रायरामकहकाननदीन्हा ॥ विछुरतगवनअमरपुरकीन्हा ॥ मैंसठसवअनरथकरहेतू ॥ वैठिवातसवसुनोंसचेतू ॥

अ०कां विनुरघुवीरविलोकिअवासू॥रहैप्राणसहिजगउपहासू॥रामपुनीतविषयरसरूषे॥लोलुपभूपभोगकेभूषे॥कहंलगिकहौंहृदयकठि
३६ नाइ॥निदरिकुलिशजेइलहीवडाई॥दो॥कारणतेंकारजकठिनहोइदोसनहिमोर॥कुलिसअस्थितेंउपलतेंलोहकरालकठोर॥१८०॥चौ
अति कैकेइभवतनुअनुरागे॥पावरप्राणअघाइअभागे॥जौंप्रियविरहप्राणप्रियलागे॥देषवसुनववहुतअवआगें॥लषनरामसियकहं
वनदीन्हा॥पठैअमरपुरपतिहितकीन्हा॥लीन्हविधवपनअपजसआपू॥दीन्हेउप्रजहिसोकसंतापू॥मोहिदीन्हसुखसुजससुराजू॥
कीन्हकैकेईसवकरकाजू॥एहितेंमोरकहाअवनीका॥तेहिपरदीन्हचहहुतुम्हटीका॥कैकेजठरजनमजगमांही॥यहमोहिकहंक
छुअनुचितनाही॥मोरवातसवविधिहिवनाई॥प्रजापंचकतकरहुसहाइ॥दो॥ग्रहग्रासितपुनिवातवसितेहिपुनिविछीमार॥ताहि
पियाइयवारुनीकहहुकहाउपचार॥१८१॥चौ॥कैकैसुअनयोगजगजोइ॥चतुरविरंचिदीन्हमोहिसोई॥दशरथतनयरामलघुभाई॥
दीन्हमोहिविधिवादिवडाई॥तुम्हसवकहहुकढावनटीका॥रायरजायसुसवहीकहंनीका॥उतरदेउकेहिविधिकेहिकेही॥कहहुसुखेनय राम
थारुचिजेही॥मोहिकुमातुसमेतविहाई॥कहहुकहिहिकेहिकीन्हिभलाई॥मोविनुकोसचराचरमांही॥जेहिसियरामप्राणप्रियनाहीं॥प ३६
रमहानिसवकहंवडलाहू॥आदिनमोरनहिदूषनकाहू॥संसैसीलप्रेमवसअहहू॥सवैउचितसवजोकछुकहहू॥दो॥राममातुसुठिस
रलचितमोपरप्रेमविशेषि॥कहैसुभायसनेहवसमोरदीनतादेषि॥१८२॥चौ॥गुरुविवेकसागरजगजाना॥जिन्हविश्वकरवदिरसमाना॥ जा

मोकहंतिलक साजसजसोई॥ भौविधिविमुखविमुखसबकोई॥ परिहरिरामसीयजगमाही॥ कोउनकहिहिमोरमतनाही॥ सोमैसुनव
सहबसुखमानी॥ अंतहुकींचतहांजहपानी॥ डरमोहिजगकहिहिकिपोचू॥ परलोकहुकरनाहिनसोचू॥ एकैउरवनदुसहदवारी॥ मोहि
लगिभएसियरामदुखारी॥ जीवणलाहुलखनभलपावा॥ सबतजिरामचरणमनलावा॥ मोरजनमरघुबरवनलागी॥ झूठकाहपछि
तावअभागी॥ दो॥ आपनिदारुणदीनतासबहिकहोंसिरनाइ॥ देषेविनुरघुनाथपदजियकैजरणिनजाइ॥ १८३॥ चौ॥ आनउपायमो
हिनहिसूझा॥ कोजियकैरघुवरविनुबूझा॥ एकहिआंकइहैमनमाहीं॥ प्रातकालचलिहौंप्रभुपांही॥ यद्यपिमैअनभलअपराधी॥ भामोहि
कारणसकलउपाधी॥ तदपिसरणसनमुखमोहिदेषी॥ छमिसबकरिहहिकृपाविशेषी॥ शीलसकुचिसुठिसरलसुभाऊ॥ कृपासनेहसदन
रघुराऊ॥ अरिहुकअनभलकीन्हनरामा॥ मैंसिसुसेवकयद्यपिवामा॥ तुम्हपैपांचमोरभलमानी॥ आयसुआसिषदेहुसुवानी॥ जेहिसुनि
विनयमोहिजनजानी॥ आवहिवहुरिरामरजधानी॥ दो॥ यद्यपिजन्मकुमांतुतेमैंसठसदासदोस॥ आपनजानिनत्यागिहहिमोहिरघुवी
रभरोस॥ १८४॥ चौ॥ भरतवचनसबकेएयलागे॥ रामसनेहसुधाजनुपागे॥ लोगवियोगविषमदुखलागा॥ मंत्रसजीवसुनतजनुजागा॥ मां
तुसचिवसबसबपुरनरनारी॥ सकलसनेहविकलभौभारी॥ भरतहिकहहिसराहिसराही॥ रामप्रेममूरतितनआही॥ तातभरतअसकाहे
नकहहू॥ प्राणसमानरामएयअहहू॥ जोपावरअपनीजडताई॥ तुम्हहिसुगाइमांतुकुटिलाई॥ सोसठकोटिकुपुरुषसमेता॥ वसहिकलपश

अ॰ कां॰
३७

तनकीनिकेता॥ अहिअघअवगुणनहिमनिगहई॥ हरैगरलदुखदारिददहई॥ दो॥ अवसिचलियजहरामवनभरतमंत्रभलकीन्ह॥ सो
कसिंधवूडतसवहितुम्हअवलंवनदीन्ह॥ १८५॥ चौ॥ गुरुसनभरतकहेउसिरनाई॥ पुरपरिजनकरकौनउपाई॥ कहमुनिरामविरहदु
खदाहू॥ चलनकहियजनिराषियकाहू॥ सुनतसवहिउरमोदनथोरा॥ जिमिघनधनिसुनिदादुरमोरा॥ चलतप्रातलखिनिरनउनीके भ
रतप्राणप्रियभेसवहीके॥ मुनिहिवंदिभरतहिसिरनाई॥ चलेसकलघरविदाकराई॥ धन्यभरतजीवनजगमांही॥ सीलसनेहसराहतजाहीं॥
सपर कहहिपरंभावडकाजू॥ सकलचलैकरसाजहिसाजू॥ जेहिराषहिरहुघररखवारी॥ सोजानहिजनुगईनमारी॥ कोउकहरहनकहिअज
निकाहू॥ कोनचहैजगजीवनलाहू॥ दो॥ जरउसोसंपतिसदनसुखसुहृदमांतुपितुभाइ॥ सनमुखहोतजोरामपदकरेनसहजसहाइ
१८६॥ चौ॥ घरघरसाजहिवाहननाना हरषहृदयपरभातपयाना॥ भरतजाइघरकीन्हविचारू॥ नगरवाजिगजभवनभंडारू॥ संपतिस
वरघुपतिकैआही॥ जौंविनुजतनचलौंतजिताही॥ तौपरिनामनमोरभलाई॥ पापसिरोमनिसांईदोहाई॥ करैस्वामिहितसेवकसोई॥ दू राम
खनकोटिदेइकिनकोई॥ असविचारिसुचिसेवकवोले॥ जेसपनेहुनिजधर्मनडोले॥ कहिसवमर्मधर्मसवभाषा॥ जोजेहिलायकसोत ३७
हेराषा॥ करिसवजतनराषिरखवारे॥ राममांतुपहंभरतसिधारे॥ दो॥ आरतजननीजानिसवभरतसनेहसुजान॥ कहेउवनावनपाल न
कीसजनसुखासनजान॥ १८७॥ चौ॥ चक्कचक्किजिमिपुरनरनारी॥ चहतप्रातउरआनंदभारी॥ जागतसवनिशिभयउविहाना॥ भरतवोलाय

उसचिवसुजाना॥ कहेउलेहुसवतिलकसमाजू॥ वनहिदेवमुनिरामहिराजू॥ वेगिचलेउमुनिसचिवजोहारे॥ तुरिततुरगरथनागसवारे॥ अ
रुंधतिअरुअगिनिसमाऊ॥ रथचढिचलेप्रथममुनिराऊ॥ विप्रवृंदचढिवाहननाना॥ चलेसकलतपतेजनिधाना॥ नगरलोगसवसजिस
जिजाना॥ चित्रकूटकहकीन्हपयाना॥ सिविकासुभगनजांहिंवखानी॥ चढिचढिचलतभईसवरानी॥ दो॥ सौंपिनगरसुचिसेवकन्हिसाद
रसकलचलाइ॥ सुमिरिराममसियचरणतव चलेभरतदोउभाई॥ १८८॥ चौ॥ रामदरसलगिसवनरनारी॥ जनुकरिकरिणिचलेतकिवारी
वनसियरामसमुझिमनमांहीं॥ सानुजभरतपयादेजाहीं॥ देषिसनेहलोगअनुरागे॥ उतरिचलेहयगयरथत्यागे॥ जाइसमीपराषिनिजडो
ली॥ राममातुमृदुवानीवोली॥ तातचढहुरथवलिमहतारी॥ होइहिप्रियपरिवारदुखारी॥ तुम्हरेचलतचलिहिसवलोगू॥ सकलसोककृशन
हिमगजोगू॥ सिरधरिवचनचरणसिरनाई॥ रथचढिचलतभएदोउभाई॥ तमसाप्रथमदिवसकरिवासू॥ दूसरगोमतितीरनिवासू॥ दो॥ पयअ
हारफलअसनएकनिसिभोजनएकलोग॥ करतरामहितनेमव्रतपरिहरिभूषनभोग॥ १८९॥ चौ॥ सईतीरवसिचलेविहाने॥ शृंगवेरपुरसवनि
अराने॥ समाचारसवसुनेनिषादा॥ हृदयविचारकरैसविषादा॥ कारणकवनभरतवनजाहीं॥ हैकछुकपटभावमनमाहीं॥ जौंपैजियनहोति
कुटिलाई॥ तौकतसंगलीन्हकटकाई॥ जानहिरामहिसानुजमारी॥ करौंनिकंटकराजसुखारी॥ भरतनराजनीतिजिमआनी॥ तवकलंकअ
वजीवनहानी॥ सकलसुरासुरजुरहिजुझारा॥ रामहिसमरनजीतनिहारा॥ काआस्चर्जअसकरहीं॥ नहिविषिवेलिअमरफरफरहीं॥ दो॥

भरत

अ०कां असविचारिगुहज्ञातिसनकहेउसजगसवहोहु॥हथवासहुवोरहुतरणिकीजियघाटारोहु॥१९०॥होहुसजोयलरोकहुघाटा॥ठादहु
३८ सकलमरणकेठाटा॥सनमुखलोहभरतसनलेहू॥जियतनसुरसरिउतरणदेहू॥समरमरणपुनिसुरसरितीरा॥रामकाजछनभंगसरीरा॥
भरतभाइनृपमैंजननीचू॥वडेभागपाइयअसमीचू॥स्वामीकाजकरहुरणरारी॥जसपुनिहोइभुवनदशचारी॥तजौप्राणरघुनाथनिहोरे॥
दुहूंहाथमुदमोदकमोरे॥साधुसमाजनजाकरलेषा॥रामभक्तिमहजासुनरेषा॥जोइजिवतजगसोमहिभारू॥जननीजोवनविट
पकुठारू॥दो॥विगतविषादनिषादपतिसवैवढाइउछाह॥सुमिररामभागेउतुरिततरकसधनुकसनाह॥१९१॥चौ॥वेगहुभाइहुस
जहुसजोऊ॥सुनिरजाइकदराइनकोऊ॥भलेहनाथसवकहहिसहरषा॥एकहिएकवढावहिकरषा॥चलेनिषादजोहारिजोहारी॥
सूरसकलरणरूचैरारी॥सुमिरिरामपदपंकजपनही॥भाथीवांधिचढावहिधनुही॥अंगरीपहरिकुंडिसिरधरही॥फरसावांससेलसमक
रही॥एककुशलअतिवोउनवांडे॥कूदहिगगनमनहुंछितिछाडे॥निजनिजसाजसमाजवनाई॥गुहराउतहिजोहारेन्हिजाइ॥देषिसुभटसवला राम
यकजाना॥लेइलेइनामसकलसनमाना॥दो॥भाइहुलावहुधोषजनिआजुकाजुवडमोहि॥सुनिसरोषवोलेसुभटवीरअधीरनहोंहि ३८
१९२॥चौ॥रामप्रतापनाथवलतोरे॥करहिकटकविनुभटविनुघोरे॥जीयतपावनपाछेंधरहीं॥रुंडमुंडमयमेदनिकरहीं॥देषिनिषादनाथभलटोलू॥
कहेउवजाउजुझाऊढोलू॥इतनीकहतछींकभइवाए॥कहेउसगुनिअन्हषेतसोहाए॥वूढएककहसगुनविचारी॥भरतहिमिलिअनहोइहिरारी॥

रामहिभरतमनावएजाहीं॥सगुनकहैअसविग्रहनाहीं॥सुनिगुहकहैनीककहबूढा॥सहसाकंपछताइविमूढा॥भरतसुभावसीलविनुबूझे॥ र
वडहितहानिजानिविनुबूझे॥दो॥गहहुघाटभटसिमिटसवलेउमरममिलिजाइ॥बूझिमित्रअरिमध्यगतितसतवकरिहौंआइ॥१९३॥चौ॥
लखवसनेहसुभाएसोहाए॥वयरप्रीतिन्हहिदुरैदुराए॥असकहिभेटसजोयनलागे॥कंदमूलफलषगम्रगमागे॥मीनपीनपाठीनपुराने॥भरि
भरिभारकहारन्हआने॥मिलनसाजसजिमिलनसिधाए॥मंगलमूलसगुनशुभपाए॥देषिदूरतेंकहिनिजनामू॥कीन्हमुनीशहिदंडप्रना
मू॥जानिरामप्रियदीन्हअसीसा॥भरतहिकहेउबुझाइमुनीसा॥रामसखासुनिसंदनुत्यागा॥चलेउतरिउमगतअनुरागा॥गाउजातिगुहनावसु
नाई॥कीन्हजोहारिमाथमहिनाई॥दो॥करतदंडवतदेषितेहिभरतलीन्हउरलाइ॥मनहुंलखणसोभेटभइप्रेमनहृदयसमाइ॥१९४॥चौ॥भेटे
भरतताहिअतिप्रीति॥लोगसिहांहिप्रेमकीरीती॥धन्यधन्यधुनिमंगलमूला॥सुरसराहितेहिवरषहिफूला॥लोकवेदसवभांतिन्हनीचा॥जासुछां
हछुइलेइअसींचा॥तेहिभरिअंकरामलघुभ्राता॥मिलतपुलकपरिपूरणगाता॥रामरामकहिजेजंभुहांहीं॥तिन्हहिनपापपुंजसमुहांहीं॥एहितौराम म
लाइउरलीन्हा॥कुलसमेतजगपावनकीन्हा॥करमनासजलसुरसरिपरई॥तेहिकेकहहुसीसनहिधरई॥उलटानामजपतजगजाना॥
वालमीकिभएब्रह्मसमाना॥दो॥श्वपचसवरषलजमनजडपावरकोलकिरात॥रामकहतपावनपरमहोतभुवनविष्यात॥१९५॥चौ॥नहिअच
रजयुगयुगचलिआई॥केहिनदीन्हरघुवीरवडाई॥रामराममहिमासुरकहहीं॥सुनिसुनिअवधिलोगसुखलहहीं॥रामसखहिमिलिभरतसप्रे

अ॰कां
३९

मा॥ पूछीकुशलसुमंगलछेमा॥ देषिभरतकरसीलसनेहू॥ भानिषादतेहिसमयविदेहू॥ सकुचसनेहमोदमनवाढा॥ भरतहिचितवतएकटकठा-
ढा॥ धरिधीरजपदवंदवहोरी॥ विनयसप्रेमकरतकरजोरी॥ कुशलमूलपदपंकजदेषी॥ मैंतिहुकालकुशलनिजपेषी॥ अवप्रभुपरमअनुग्र-
हतोरे॥ सहितकोटिकुलमंगलमोरे॥ दो॥ समुझिमोरकरतूतिकुलप्रभुमहिमाजियजोइ॥ जोनभजैरघुवीरपदजगविधिवंचकसोइ॥१९६॥ चौ॰
कपटीकायरकुमतिकुजाति॥ लोकवेदवाहरसवभांती॥ रामकीन्हआपनजवहीतें॥ भयउभुवनभूषणतवहीतें॥ देषिप्रीतिसुनिविनयसोहाइ॥ मिलेउ
वहोरिभरतलघुभाई॥ कहिनिषादनिजनामसुवानी॥ सादरसकलजोहारीरानी॥ जानिलखनसमदीन्हअसीसा॥ जियहुसुखीसैलाषवरीसा
निरषिनिषादनगरनरनारी॥ भएसुखीजनुलखननिहारी॥ कहहिलहेउएइजीवनलाहू॥ भेटेउरामलखनभरिवाहू॥ सुनिनिषादनिजभा-
गवडाई॥ प्रमुदितमनलवचलेउलेवाई॥ दो॥ सनकारेसेवकसकलचलेस्वामिरुषपाइ॥ घरतरुतरसरवागवनवासवनाएन्हिजाइ॥१९७॥ चौ॥
शृंगवेरपुरभरतदेषजव॥ भएसनेहवसअंगसिथिलतव॥ सोहतदिएनिषादहिलागू॥ जनुतनुधरेंविनयअनुरागू॥ एहिविधिभरतसेनसवसंगा॥ दे-
षुजाइजगपावनिगंगा॥ रामघाटकवकीन्हप्रनामू॥ भामनमगनमिलेजनुरामू॥ करहिप्रणामनगरनारी॥ मुदितब्रह्ममयवारिनिहारी॥ करिम-
ज्जनमागहिकरजोरी॥ रामचंद्रपदप्रीतिनथोरी॥ भरतकहेउसुरसरितवरेनू॥ सकलसुखदसेवकसुरधेनू॥ जोरिपानिवरमागौएहू॥ सी-
यरामपदसहजसनेहू॥ दो॥ एहिविधिमज्जनभरतकरिगुरुअनुसासनपाइ॥ मातुयन्हानीजानिसवडेराचलेलेवाई॥१९८॥ चौ॥ जहे

राम
३९

तहंलोगनडेरा कीन्हा ॥ भरतसोधसवहीकरलीन्हा ॥ गुरुसेवाकरि आयसुपाई ॥ राममातुपहिंगयेदोउभाई ॥ चरणचापिकहिकहि मृदु वानी
जननीसकलभरतसनमानी ॥ भाइहिसौंपिमांतुसेवकाई ॥ आपुनिषादहिलीन्हिबोलाई ॥ चलेसखाकरसोकरजोरी ॥ सिथिलसरीरस
नेहनथोरी ॥ पूछासखहिसोठावदेषावऊ ॥ नेकुनयनमनजरनिजुडाऊ ॥ जहंसियरामलखननिशिसोए ॥ कहतभरेजललोचनकोए ॥ भर
तवचनसुनिभयउविषादा ॥ तुरिततहांलैगयउनिषादा ॥ दो ॥ जहंसिसुपातपुनीततरुरघुवरकियोबिश्राम ॥ अतिसनेहसादरभरतकीन्हेउ
दंडप्रणाम ॥ १९९ ॥ चौ ॥ कुशसाथरीनिहारिसोहाई ॥ कीन्हप्रणामदक्षिणजाई ॥ चरणरेषरयआंषिन्हलाई ॥ वनैनकहतप्रीतिअधिकाई ॥ कनकविं
दुदुइचारिकदेषे ॥ राषेसीससीयसमलेषे ॥ सजलविलोचनहृदयगलानी ॥ कहतसखासनवंनसुवानी ॥ श्रीहतसीयविरहदुतिहीना ॥ यथाअवधिनर
रनारिविहीना ॥ पिताजनकदेउपटतरकेही ॥ करतलभोगजोगजगजेही ॥ ससुरभानकुलभानुभुवाला ॥ जेहिसिहातअमरावतिपाला ॥ प्राणनाथर
घुनाथगोसाईं ॥ जोवडहोतसोरामवडाई ॥ दो ॥ पतिदेवतासुतीयमनिसीयसाथरीदेषि ॥ विहरतहृदयनहहरिकरिपवितेकठिनविशेषि ॥ २०० ॥ चौ ॥
लालनजोगलखणलघुलोने ॥ भेनभाइअसअहहिनहोने ॥ पुरजनप्रियपितुमांतुदुलारे ॥ सियरघुवीरहिप्राणपियारे ॥ मृदुमूरतिसुकुमारसुभाऊ ॥ तातवा
ततनलागनकाऊ ॥ तेवनवसहिविपतिसवभांती ॥ निदरेकोटिकुलिशएहिछाती ॥ रामजनमिजगकीन्हउजागर ॥ रूपशीलसुखसवगुणसागर ॥ पुरजन
परिजनगुरुपितुमांता ॥ रामसुभावसवहिसुखदाता ॥ वैरिउरामवडाईकरही ॥ बोलनिमिलनिहंसनिदुखहरही ॥ सारदकोटिकोटिश्रुतिसेषा ॥ करिनसक

अ॰ का॰ हि प्रभु गुण गण लेखा ॥ दो॰ ॥ सुख स्वरूप रघुवंशमनि मंगल मोद निधान ॥ ते सोवत कुश डासि महि विधि गति अति वलवान ॥ २०१ ॥ चौ॰ ॥ राम सुना दुख का
८० न न काऊ ॥ जीवनतरु जनु जोगवत राऊ ॥ पलक नयन फनि मनि जेहि भांती ॥ जोगवहि जननि सकल दिन राती ॥ ते अव फिरहि विपिन पदचारी ॥ कंदमूल
फल फूल अहारी ॥ धृग कैकई अमंगल मूला ॥ भइसि प्राण प्रीतम प्रतिकूला ॥ मैं धृग धृग अघउदधि अभागी ॥ सव उतपात भयउ जेहि लागी ॥ कुल कलंक करि
सृजेउ विधाता ॥ सांइ द्रोहि मोहि कीन्ह कुमाता ॥ सुनि सप्रेम समुझाव निषादू ॥ नाथ करिय कत वादि विषादू ॥ राम तुम्हहि प्रिय तुम्ह प्रिय रामहि ॥ यह निरदो
स दोस विधि वामहि ॥ छंद ॥ विधि वाम की करणी कठिन जेहि मातु कीन्ही वावरी ॥ तेहि राति पुनि पुनि करहि प्रभु सादर सराहन रावरी ॥ तुलसी न तुम
से राम प्रीतम कहत हौं सौंहे किए ॥ परिणाम मंगल जानि अपने आनिए धीरज हिए ॥ सो॰ ॥ अंतरजामी राम सकुच सप्रेम कृपायतन ॥ चलि करिय विश्रा
म यह विचार दृढ आनि मन ॥ २०२ ॥ चौ॰ ॥ सखा वचन सुनि उर धरि धीरा ॥ वास चले सुमिरत रघुवीरा ॥ यह सुधि पाइ नगर नर नारी ॥ चले विलोकत आरत भा
री ॥ परदक्षिण करि करहि प्रणामा ॥ देहि कैकइ खोरि निकामा ॥ भरि भरि वारि विलोचन लेंही ॥ वाम विधातहि दूषण देंही ॥ एक सराहहि भरत सनेहू राम
कोउ कह नृपति निवाहे नेहू ॥ नींदहि आपु सराहि निषादहि ॥ को कहि सकै विमोह विषादहि ॥ एहि विधि राति लोग सव जागा ॥ भा भिनुसार गुदारा ला ८०
गा ॥ दंड चारि महं भा सव पारा ॥ उतरि भरत तव सवहि संभारा ॥ दो॰ ॥ प्रात क्रिया करि मातु पद वंदि गुरुहि सिर नाइ ॥ आगे किए निषाद गण दीन्हे
उ कटक चलाइ ॥ किए निषाद नाथ अगुआई ॥ मातु पालकी सकल चलाइ ॥ साथ वोलाइ भाइ लघु दीन्हा ॥ विप्रन्ह सहित गवन गुरु कीन्हा ॥ आ

भुसुरसरिहि कीन्हप्रणामा॥ सुमिरे लखण सहित श्रीरामा॥ गवने भरत पियादे पाए॥ कोतल संग जांहि डोरिअए॥ कहहि सुसेवक वारहि वारा॥ होइ
अनाथ अश्व असवारा॥ रामपियादे पाय सिधाए॥ हम कह गज रथ वाजि वनाए॥ सिर भर जांउ उचित अस मोरा॥ सव ते सेवक धर्म्म कठोरा॥ देखि भर
तगति सुनि मृदु वानी॥ सव सेवक गण गरहि गलानी॥ दो॥ भरत तीसरे पहर कह कीन्ह प्रवेश प्रयाग॥ कहत राम सिय राम सिय उमगि उमगि अनुरा
ग॥२०४॥ चौ॥ झलका झलकहि पायन कैसे॥ पंकज कोश ओस कन जैसे॥ भरत पयादहि आए आजू॥ भए दुखित सुनि सकल समाजू॥ षवरि लीन्ह सव लो
गन्ह याई॥ कीन्ह प्रणाम त्रिवेनिहि जाई॥ सवविधि सीतल नीर अन्हाने॥ दिए दान महिसुर सनमाने॥ देषत स्यामल गौर हिलोरे॥ पुरक शरीर भरत कर जो
रे॥ सकल काम प्रद तीरथ राऊ॥ वेद विदित जग प्रगट प्रभाऊ॥ मांगौ भीषि त्यागि निज धर्म्मू॥ आरत काह न करै कुकर्म्मू॥ अस जिय जानि सुजान
सुदानी॥ सफल करहि जग जाचक वानी॥ दो॥ अर्थ धर्म्म नहि कांम रुचि गति न चहौ निर्वान॥ जन्म जन्म रति राम पद यह वरदान न आन॥२०५
चौ॥ जानहु राम कुटिल करि मोही॥ लोग कहै गुरु साहिव द्रोही॥ सीता राम चरण रति मोरे॥ अनुदिन वढौ अनुग्रह तोरे॥ जलदु जनम भ
रि सुरति विसारौ॥ जाचत जलु पवि पाहन डारौ॥ चातक रटनि घटे घटि जाई॥ वढे प्रेम सव भांति भलाई॥ कनकहि वान चढै जिमि दाहे॥ तिमि प्री
तम पद नेम निवाहे॥ भरत वचन सुनि मांझ त्रिवेनी॥ भइ मृदु वाणि सुमंगल देनी॥ तात भरत तुम सव विधि साधू॥ राम चरण अनुराग अगाधू॥ वा
दि गलानि करहु मन माहीं॥ तुम ते रामहि कोउ प्रिय नाहीं॥ दो॥ तन पुलके उ हिय हरष सुनि वेनि वचन अनकूल॥ भरत धन्य कहि धन्य सुर हरषि

अ॰ कां॰ ४१ नवरषहि फूल॥२०६॥ चौ॰॥ प्रमुदित तीरथराजनिवासी॥ वैषानस वटु ग्रही उदासी॥ कहहि परसपर मिलि दश पांचा॥ भरत सनेह शील सुचि
साचा॥ सुनत रामगुणग्राम सोहाए॥ भरद्वाज मुनिवर पह आए॥ दंड प्रनाम करत मुनि देषे॥ मूरतिवंत भाग्य निज लेषे॥ धाइ उठाइ लाइ उर ली
न्हे॥ दीन्ह असीस कृतारथ कीन्हे॥ आसन दीन्ह नाइ सिर वैठे॥ चहत सकुच ग्रह मह जनु पैठे॥ मुनि पूछव किछु यह वड सोचू॥ वोले ऋषि लषि सी
लसकोचू॥ सुनहु भरत हम सव सुधि पाई॥ विधि करतव पर कछु न वसाई॥ दो॰॥ तुम्ह गलानि जिय जनि करहु समुझि मातु करतूति॥ तात कैकइहि
दोस नहि गई गिरा मति धूति॥२०७॥ चौ॰॥ इहउ कहत भल कहिहि न कोऊ॥ लोक वेद वुध संमत दोऊ॥ तात तुम्हार विमल जस गाई॥ पाइहि लोकउ वे
द वडाई॥ लोक वेद संमत सव कहई॥ जेहि पितु देइ राज सो लहई॥ राउ सत्यव्रत तुम्हहि वोलाई॥ देत राज सुख धर्म वडाई॥ राम गवनु वन अनरथ मूला॥
सो सुनि सकल विश्व भइ सूला॥ सो भावी वस रानि अयानी॥ करि कुचालि अंतहु पछितानी॥ तहउ तुम्हार अलप अपराधू॥ कहै सो अधम अयान असा
धू॥ करतेहु राज त तुम्हहि न दोषू॥ रामहि होत सुनत संतोषू॥ दो॰॥ अव अति कीन्हेउ भरत भल तुम्हहि उचित मत एहु॥ सकल सुमंगल मूल जग रघुव राम ४१
र चरण सनेह॥२०८॥ चौ॰॥ सो तुम्हार धन जीवन प्राणा॥ भूरिभाग को तुम्हहि समाना॥ यह तुम्हार आचरजु न ताता॥ दशरथ तनय राम प्रिय भ्राता॥
सुनहु भरत रघुपति मन मांही॥ प्रेमपात्र तुम्ह सम कोउ नांही॥ लषन राम सीतहि अति प्रीती॥ निशि सव तुम्हहि सराहत वीती॥ जाना मरमु न्हात
प्रयागा॥ मगन होहि तुम्हरे अनुरागा॥ तुम्ह पर अस सनेह रघुवर के॥ सुख जीवन जग जस जड नर के॥ यह न अधिक रघुवीर वडाई॥ प्रनत कु

दुंवपालरघुराई॥तुह्मतौभरतमोरमतएहू॥धरेदेहजनुरामसनेहू॥दो॥तुह्मकहंभरतकलंकयहहमसवकहंउपदेश॥रामभगतिरससाधहितभा
यहिसमउगणेशा॥२०९॥चौ॥नवविधुविमलतातजसुतोरा॥रघुवरकिंकरकुमुदचकोरा॥उदितसदाअथइहिकवहूना॥घटिहिनजगनभदिनदि
नदूना॥कोकतिलोकप्रीतिअतिकरही॥प्रभुप्रतापरविछविहिनहरही॥निशिदिनसुखदसदासवकाहू॥ग्रसहिनकैकेकरतवराहू॥पूरणरामसुप्रेम
पियूषा॥गुरुअपमानदोषनहिदूषा॥रामभगतिअवअमियअघाहू॥कीन्हीसुलभसुधावसुधाहू॥भूपभगीरथसुरसरिआनी॥सुमिरतसकलसुमं
गलखानी॥दशरथगुणगणवरनिनजांही॥अधिककहाजेहिसमजगनाहीं॥दो॥जासुसनेहसकोचवसरामप्रगटभएआइ॥जेहरहियनयननिक
वहुंनिरखेनहीअघाइ॥२१०॥चौ॥कीरतिविधुतुह्मकीन्हअनूपा॥जहंवसरामप्रेममृगरूपा॥तातगलानिकरहुजियजाए॥डरहुदरिद्रहिपा
रसपाए॥सुनहुभरतहमझूठनकहही॥उदासीनतापसवनरहहीं॥सवसाधनकरसुफलसोहावा॥लषनरामसियदरसनपावा॥तेहिफलक
रफलदरसतुह्मारा॥सहितप्रयागसुभागहमारा॥भरतधन्यतुह्मजसजगजयऊ॥कहिअसप्रेममगनमुनिभयऊ॥सुनिमुनिवचनसभासदह ॥रषे
साधुसराहिसुमनसुरवरषे॥धन्यधन्यधुनिगगनप्रयागा॥सुनिसुनिभरतमगनअनुरागा॥दो॥पुलकगातहिरामसियसजलसरोरुहनैन य
करिप्रनाममुनिमंडलिहिवोलेगदगदवैन॥२११॥चौ॥मुनिसमाजअरुतीरथराजू॥साचिहुसपथअघाइअकाजू॥एहिथलजौंकछुकहियवनाई॥
एहिसमअधिकनअघअधमाई॥तुह्मसरवज्ञकहहुसतिभाऊ॥उरअंतरजामीरघुराऊ॥मोहिनमातुकरतवकरसोचू॥नहिदुखजियजगक

अ॰कां हिहिकिपोचू॥ नाहिनडरविगरिहिपरलोकू॥ पितहुमरनकरमोहिनसोकू॥ सुकृतसुजसभरिभुवनसोहाए॥ लछिमनरामसरिससुतपाए॥
४२ रामविरहतजितनुछिनुभंगू॥ नृपसोचकरकवनप्रसंगू॥ रामलखनसियविनुपगपनही॥ करिमुनिवेषफिरहिवनवनही॥ दो॥ अजिनव
सनफलअसनमहिसयनडासिकुशपात॥ वसितरुतरनितसहतहिमआतपवरषावात॥ २१२॥ चौ॥ एहिदुखदाहदहैदिनछाती॥ भूषनवास
रनींदनराती॥ एहिकुरोगकरऔषधनाहीं॥ सोधेउसकलविश्वमनमाहीं॥ मांतुकुमतवढईअघमूला॥ तेहिहमारहितकीन्हवसूला॥ करकुकाठक
रकीन्हकुजंत्रू॥ गाड़िअवधिपढिकठिनकुमंत्रू॥ मोहिलगिएहुकुठाटतेहिठाटा॥ घालेसिसवजगवारहवाटा॥ मिटैकुजोगरामफिरिआए॥ वसैअवधिन
हिआनउपाए॥ भरतवचनसुनिमुनिसुखपाई॥ सवहिकीन्हवहुभांतिवडाई॥ तातकरहुजनिसोचविशेषी॥ सवदुखमिटिहिरामपगुदेषी॥ दो॥
करिप्रवोधमुनिवरकहेउअतिथिप्राणप्रियहोहु॥ कंदमूलफलफूलहमदेहिलेहुकरिछोहु॥ २१३॥ सुनिमुनिवचनभरतउरसोचू॥ भयउकु चौ॥
औसरकठिनसकोचू॥ जानिगरुइगुरुगिरावहोरी॥ चरणवंदिवोलेकरजोरी॥ सिरधरिआयसुकरियतुम्हारा॥ परमधरमयहनाथहमारा॥ राम
भरतवचनमुनिवरमनभाए॥ सुचिसेवकसिषनिकटवोलाए॥ चाहियकीन्हभरतपहुनाई॥ कंदमूलफलआनहुजाई॥ भलेहनाथकहि ४२
तिन्हसिरनाए॥ प्रमुदितनिजनिजकाजसिधाए॥ मुनिहिसोचपाहुनवडनेवता॥ तसिपूजाचाहिअजसदेवता॥ सुनिरिधिसिधिअनिमादिकधा
ई॥ आयसुहोइसोकरियगोसाई॥ दो॥ रामविरहव्याकुलभरतसानुजसहितसमाज॥ पहुनाईकरिहरहुश्रमकहामुदितमुनिराज॥ २१४॥ चौ॥

रिधिसिधिसिरधरिमुनिवरवानी॥वडभागिनिआपुहिअनुमानी॥कहहिपरसपरसिधिसमुदाई॥अतुलितअतिथिरामलघुभाई॥मुनिपदवंदिक
रियसोआजू॥होइसुखीसवराजसमाजू॥असकहिरचेउरुचिरग्रहनाना॥जेविलोकिविलषाहिविमाना॥भोगविभूतिभूरिभरिराषे॥देषतजिन्ह
हि अमरअभिलाषे॥दासीदाससाजुसवलीन्हे॥जोगवतरहहिमनहिमनुदीन्हे॥सवसमाजसजिसिधिपलमांही॥जेसुखसपनेहुसुरपुरनाही॥
प्रथमहिवासदिएसवकेही॥सुंदरसुखदयथारुचिजेही॥दो॥वहुरिसपरिजनभरतकहरिषिअसआयसुदीन्ह॥विधिविसमयदायकविभवमुनिवर
तपवलकीन्ह॥२१५॥चौ॥मुनिप्रभावजवभरतविलोका॥सवलघुलागलोकपतिलोका॥सुखसमाजनहिजाइवषानी॥देषतविरतिविसारहि
ज्ञानी॥आसनसयनवरवसनविताना॥वनवाटिकाविहंगम्रगनाना॥सुरभिफूलफलअमियसमाना॥विमलजलाशयविविधविधाना॥
असनपानसुचिअमितअमीसे॥देषिलोगसकुचातजमीसे॥सुरसुरभीसुरतरुसवहीके॥लषिअभिलाषसुरेससचीके॥रितुवसंतवहत्रि
विधिवयारी॥सवकहंसुलभपदारथचारी॥स्रकचंदनवनितादिकभोगा॥देषिहरषविसमयसवलोगा॥दो॥संपतिचकईभरतचकमुनिआय
सुषेलवार॥तेहिनिसिआश्रमपिंजराराषेभाभिनुसार॥२१६॥चौ॥कीन्हनिमंजनतीरथराजा॥नाइमुनिहिसिरसहितसमाजा॥रिषिआयसु
असीसससिरराषी॥करिदंडवतविनयवहुभाषी॥पथगतिकुशलसाथसवलीन्हे॥चलेचित्रकूटहिचितदीन्हे॥रामसखाकरदीन्हेलोगू॥चलत
देहधरिजनुअनुरागू॥नहिपदत्राणसीसनहीछाया॥प्रेमनेमव्रतधर्मअमाया॥लषनरामसियपंथकहानी॥पूछतसखहीकहतम्रदुवानी॥राम

बासथलबिटपबिलोकी॥उरअनुरागरहतनहिरोकी॥देखिदशासुरबरिषहिफूला॥भइम्रदुमहिमुदमंगलमूला॥दो॥कियेजांहिछायाजलदसु
खदवहैबरबात॥असमगभयउनरामकहंजसभाभरतहिजात॥२१७॥चौ॥जड़चेतनमगजीवघनेरे॥जेचितएप्रभुजिन्हप्रभुहेरे॥तेसबभएपरमपद
जोगू॥भरतदरसभेषजभवरोगू॥यहबडिबातभरतकैनाहीं॥सुमिरतजिन्हहिराममनमाहीं॥बारयकरामकहतजगजेऊ॥होततरणतारणनरते
ऊ॥भरतरामप्रियपुनिलघुभ्राता॥कसनहोइमगमंगलदाता॥सिद्धसाधमुनिवरअसकहहीं॥भरतहिनिरखिहरषहियलहहीं॥देखिप्रभा
वसुरेशहिसोचू॥जगभलभलेहिपोचकहपोचू॥गुरुसनकहेउकरियप्रभुसोई॥रामहिभरतहिभेटनहोई॥दो॥रामसकोचीप्रेमवसभरतसुप्रेमप
योधि॥वनीबाततविगरनचहतिकरहुजतनछलसोधि॥२१८॥वचनसुनतसुरगुरुमुसुकाने॥सहसनयनविनुलोचननजाने॥कहगुरुवादिछोभ
छलछाडू॥इहांकपटकरिहोइअभांडू॥मायापतिसेवकसनमाया॥करिअतउलटिपरैसुरराया॥तबकछुकीन्हरामरुषजानी॥अबकुचालिक
रिहोइहिहानी॥सुनुसुरेसरघुनाथसुभोउ॥निजअपराधरिसाहिनकोऊ॥जोअपराधभक्तकरकरई॥रामरोषपावकसोजरई॥लोकहुवेद
विदितइतिहासा॥यहमहिमाजानहिदुर्वासा॥भरतसरिसकोरामसनेही॥जगजपुरामरामजपुजेही॥दो॥मनहुनआनियअमरपतिर
घुपतिभक्तअकाज॥अजसलोकपरलोकदुखदिनदिनसोकसमाज॥२१९॥चौ॥सुनुसुरेशउपदेसहमारा॥रामहिसेवकपरमपियारा॥
मानतसुखसेवकसेवकाई॥सेवकबैरबैरअधिकाई॥यद्यपिसमनहिरागनरोषू॥गहहिनपापपुन्यगुणदोषू॥करमप्रधानविस्वकरि

राषा ॥ जोजसकरैसोतसफलचाषा ॥ तदपिकरहिसमविषमविहारा ॥ भक्तअभक्तहृदयअनुसारा ॥ अगुनअलेषअमानएकरस ॥ रामसगुन-
भएभक्तप्रेमवस ॥ रामसदासेवकरुचिराषी ॥ वेदपुरानसाधसुरसाषी ॥ असजियजानितजहुकुटिलाई ॥ करहुभरतपदप्रीतिसुहाई ॥ दो ॥
रामभक्तपरहितनिरतपरदुखदुखीदयाल ॥ भक्तसिरोमनिभरततेजनिडरपहुसुरपाल ॥ २२० ॥ चौ ॥ सत्यसंधप्रभुसुरहितकारी ॥ भरतरामआय-
सुअनुसारी ॥ स्वारथविवसविकलतुमहोहू ॥ भरतदोसनहिराउरमोहू ॥ सुनिसुरवरसुरगुरुवरवानी ॥ भाप्रमोदमनमिटीगलानी ॥ वरषिप्रसूनह-
रषिसुरराऊ ॥ लगेसराहनभरतसुभाऊ ॥ एहिविधिभरतचलेमगजाहीं ॥ दसादेषिमुनिसिद्धसिहाहीं ॥ जवहिरामकहिलेहिउसासा ॥ उमगतप्रेम-
मनहुचहुपासा ॥ द्रवहिवचनसुनिकुलिशपषाना ॥ पुरजनप्रेमनजाइवषाना ॥ वीचवासकरिजमुनहिआए ॥ निरषिनीरलोचनजलछाए ॥ दो ॥ रघु-
वरवरणविलोकिवरवारिसमेतसमाज ॥ होतमगनवारिधिविरहचढेविवेकजहाज ॥ २२१ ॥ चौ ॥ यमुनतीरतेहिदिनकरिवासू ॥ भयउसमयसमसवहिसुपासू-
रातिहिघाटघाटकीतरणी ॥ आईअगनितजांहिनवरणी ॥ प्रातपारभएएकहिषेवा ॥ तोषेरामसखाकीसेवा ॥ चलेअन्हाइनदिहिसिरुनाइ ॥ साथनिषाद-
नाथदोउभाई ॥ आगेंमुनिवरवाहनआछे ॥ राजसमाजजाइसवपाछे ॥ तेहिपाछेदोउवंधपयादे ॥ भूषनवसनवेषसुठिसादे ॥ सेवकसुहृदसचिवसुतसाथा ॥
सुमिरतलषनसीयरघुनाथा ॥ जहंजहंरामवासविश्रामा ॥ तहंतहंकरहिसप्रेमप्रणामा ॥ दो ॥ मगवासीनरनारिसुनिधामकामतजिधाइ ॥ देषिसरूप-
सनेहवसमुदितजनमफलपाइ ॥ २२२ ॥ चौ ॥ कहहिसप्रेमएकएकपांहीं ॥ रामलषणसखिहोंहिकिनाहीं ॥ वयवपुवरणरूपसोइआली ॥ सीलु-

अ॰ कां॰ ४४

सनेहसरिससमचाली॥देषनर्सेसरिवसीयनसंगा॥आगेंअनीचलीचतुरंगा॥नहिप्रसन्नमुरवमानसषेदा॥सखिसंदेहहोइएहिभेदा॥नासुत
रकतियगएमनमांनी॥कहहिसकलतेहिसमनसयानी॥तेहिसराहिवाणीफुरसजी॥वोलीमधुरवचनतियदूजी॥कहिसप्रेमसवकथाप्रसंगू
जेहिविधिरामराजरसभंगू॥भरतहिवहुरिसराहनलागी॥सीलसनेहसुभावसुभागी॥दो॥चलतपयादेषातफलपितुदीन्हतजिराजु॥जातमना
वनरघुवरहिभरतसरिसकोआजु॥२२३॥चौ॥भायपभक्तिभरतआचरनू॥कहतसुनतदुखदूषणहरनू॥जोकछुकहवथोरसखिसोइ॥
रामवंधुअसकाहेनहोइ॥हमसवसानुजभरतहिदेषी॥भईधन्ययुवतीजनलेषी॥सुनिगुणदेषिदशापछतांही॥केकैजननियोगसुतनाही॥
कोउकहदूषनरानिहुनाहिन॥विधिसवकीन्हहमहिजोदाहिन॥कहहमलोकवेदविधिहीनी॥लघुतियकुलकरतूतिमलीनी॥वसहिकु
देशकुगावकुवामा॥कहंयहदरसपुन्यपरिनामा॥असअनंदअचरजप्रतिग्रामा॥जनुमरुभूमिकल्पतरुजामा॥दो॥भरतदरसदेषतषु
लेउमगलोगनकरभाग॥जनुसिंहलवासिन्हभयउविधिवससुलभप्रयाग॥२२४॥चौ॥निजगुणसहितरामगुणगाथा॥सुनतजांहिसुमिरतरघुना
था॥तीरथमुनिआश्रमसुरधामा॥निरषिनिमज्जहिकरहिप्रणामा॥मनहीमनमागहिवरएहू॥सीयरामपदपदुमसनेहू॥मिलहिकिरातकोलवन राम ४४
वासी॥वैषानसवटुजतीउदासी॥करिप्रणामपूछहिजेहितेही॥केहिवनलषनरामवयदेही॥तेप्रभुसमाचारसवकहही॥भरतहिदेषिजन्मफललहही॥
जेजनकहैंहिकुसललहमदेषे॥तेएयरामलषनसमयेषे॥एहिविधिवूझतसवहिसुवानी॥सुनतरामवनवासकहानी॥दो॥तेहिवासरवसिप्रातही

चलेसुमिररघुनाथ॥ रामदरसकीलालसाभरतसहितसवसाथ॥२२५॥चौ॥ मंगलसगुनहोहिसवकाहू॥ फरकहिसुखदविलोचनवाहू॥
भरतसमेतसमाजउछाहू॥ मिलिहहिरामुमिटिहिदुखदाहू॥ करतमनोरथजसजियजाके॥ जाहिसनेहसुरासवछाके॥ सिथिलअंगपग
मगडगडोलहि॥ विहवलवचनप्रेमवसवोलहि॥ रामसखातेहिसमयदेषावा॥ सयलसिरोमनिसहजसोहावा॥ जासुसमीपसरितपयतीरा॥
सीयसमेतवसहिदोउवीरा॥ देषिकरहिसवदंडप्रणामा॥ कहिजयजानकिजीवणरामा॥ प्रेममगनअसराजसमाजू॥ जनुफिरिअवधिचले
रघुराजू॥ दो॥ भरतप्रेमजेहिसमयजसतसकहिसकहिनसेस॥ कविहिअगमजिमिब्रह्मसुखअहममलिनजनेस॥२२६॥चौ॥ सकलसनेह
सिथिलरघुवरके॥ गयेकोसदुइदिनकरढरके॥ जलथलदेषिवसेनिसिवीते॥ कीन्हगवनरघुनाथपिरीते॥ उहारामरजनीअवसेषा॥ जागे
सीयसपनअसदेषा॥ सहितसमाजभरतजनुआए॥ नाथवियोगतापतनताए॥ सकलमलिनमनदीनदुखारी॥ देषीसासुआनअनुहारी॥
सुनिसियसपनभरेजललोचन॥ भएसोचवससोचविमोचन॥ लषनसपनयहनीकनहोइ॥ कठिनकुचाहसुनाइहिकोइ॥ असकहिवंधु
समेतअन्हाने॥ पूजिपुरारिसाधुसनमाने॥ छं॥ सनमानिसुरमुनिवंदिवैठेउतरदिसिदेषतभए॥ नभधूरिषगमृगभूरिभागेविकलप्रभुआश्रमगए॥
तुलसीउठेअवलोकिकारणकाहचितचकितरहे॥ सवसमाचारकिरातकोलन्हिआइतेहिअवसरकहे॥ सो॥ सुनतसुमंगलवैनमनप्रमोदतनपुल
कभर॥ सरदसरोरुहनैनतुलसीभरेसनेहजल॥२२७॥चौ॥ वहुरिसोचवसभेसियरवनू॥ कारणकवनभरतआगवनू॥ एकआइअसकहावहो

अ०कां०
४५

री॥ सेनसंगचतुरंगनथोरी॥ सोसुनिरामहिभाअतिसोचू॥ इतपितुवचउतवंधुसकोचू॥ भरतसुभाउसमुझिमनमांही॥ प्रभुचितहितथितिपाव न

तनाहीं॥ समाधानतवभायहजाने॥ भरतकहेमहुसाधसयाने॥ लषनलषेउप्रभुहृदयषभारू॥ कहतसमयसमनीतिविचारू॥ विनुपूछे द

कछुकहौंगोसाईं॥ सेवकसमयनढीठढिठाई॥ तुम्हसर्वज्ञसिरोमनिस्वामी॥ आपुनिसमुझिकहौंअनुगामी॥ दो॥ नाथसुहृदसुठिसरलु

चितसीलसनेहनिधान॥ सवपरप्रीतिप्रतीतिजियजानीआपुसमान॥ २२८॥ चौ॥ विषईजीवपाइप्रभुताई॥ मूढमोहवसिहोइजनाई॥ भरतनीति

रतसाधसुजाना॥ प्रभुपदप्रेमसकलजगजाना॥ तेऊआजुराजपदपाई॥ चलेधरममरजादमेटाई॥ कुटिलकुवंधुकुऔसरताकी॥ जानिरामव

नवासएकाकी॥ करिकुमंत्रमनसाजिसमाजू॥ आएकरैअकंटकराजू॥ कोटिप्रकारकल्पिकुटिलाई॥ आएदलवटोरिदोउभाई॥ जौंजियर

होतिनकपटकुचाली॥ केहिसोहातरथवाजिगजाली॥ भरतहिदोसदेइकोजाए॥ जगवौराइराजपदपाए॥ दो॥ ससिगुरुतियगामीनघुषच हु

ढेभूसुरजान॥ लोकवेदतेविमुखभाअधमकोवेनुसमान॥ २२९॥ चौ॥ सहसवाहुसुरनाथत्रिसंकू॥ केहिनराजमददीन्हकलंकू॥ भरतकीन्हजसउचि राम

तउपाऊ॥ रिपुरिनरंचनराषवकाऊ॥ एककीन्हनहिभरतभलाई॥ निदरेरामजानिअसहाई॥ समुझिपरिहिसोउआजुविसेषी॥ समरसरोषरामम ४५

मुखपेषी॥ एतनाकहतनीतिरसभूला॥ रणरसविटपपुलकमिसुफूला॥ प्रभुपदवन्दिसीसरजराषी॥ वोलेसत्यसहजवलभाषी॥ अनुचितन

नाथनमानवमोरा॥ भरतहमहिउपचारनथोरा॥ कहंलगिसहियरहियमनमारे॥ नाथसाथधनुहाथहमारे॥ दो॥ छत्रिजातिरघुकुलजनमर

रामअनुजजगजान॥ लातेहुं मारे चढति सिर नीच को धूरि समान॥२३०॥ चौ॥ उठि कर जोरि रजायसु मागा॥ मनहुं वीररस सोवत जागा॥ वांधि जटा
सिर कटि कसि भाथा॥ साजि सरासन सायक हाथा॥ आजु राम सेवक जस लेऊं॥ भरतहि समर सिषावन देऊं॥ राम निरादर के फल पाई॥ सोवहि समर से र
ज दोउ भाई॥ आइ वना भल सकल समाजू॥ प्रगट करौं रिस पाछिल आजू॥ जिमि करि निकर दलै मृगराजू॥ लेइ लपेटि लवा जिमि वाजू॥ तैसेहि भरत
हि सेन समेता॥ सानुज निदरि निपातौं षेता॥ जौं सहाइ कर शंकर आई॥ तौ मारौं रण राम दुहाई॥ दो॥ अति सरोष माषे लषन लषि सुनि सपथ प्रवाण॥ सभ
य लोक सव लोकपति चाहत भभरि भगाण॥२३१॥ चौ॥ जग भए मगन गगन भइ वानी॥ लखन वाहुवल विपुल वषानी॥ तात प्रताप प्रभाव तुम्हारा॥
को कहि सकै को जाननिहारा॥ अनुचित उचित काज कछु होई॥ समुझि करिय भल कह सव कोई॥ सहसा करि पाछे पछिताहीं॥ कहहि वेद वुध ते वु
ध नाहीं॥ सुनि सुर वचन लषन सकुचाने॥ राम सीय सादर सनमाने॥ कही तात तुम्ह नीति सोहाइ॥ सव ते कठिन राजमद भाई॥ जो अचवत नृप मात(
हि तेई॥ नाहिन साधसभा जेहि सेई॥ सुनहु लषन भल भरत सरीसा॥ विधिप्रपंच महं सुना न दीसा॥ दो॥ भरतहि होइ न राजमद विधि हरि हर पद पाई॥
कवहुं कि कांजी सीकरनि छीरसिंधु विनसाई॥२३२॥ चौ॥ तिमिर तरुण तरणिहि मकु गिलई॥ गगन मगन मकु मेघहि मिलई॥ गोपद जल वूडहि घटजो
नी॥ सहज छमा वरु छाडहि छोनी॥ मसक फूंक मकु मेरु उडाई॥ होइ न नृपमद भरतहि भाई॥ लषन तुम्हार सपथ पितु आना॥ सुचि सुवंधु नहि भरत समाना
सगुण छीर अवगुण जल ताता॥ मिलै रचै परपंच विधाता॥ भरत हंस रवि वंस तडागा॥ जनमि कीन्ह गुण दोष विभागा॥ गहि गुण पय तजि अवगुण वारी॥ निज जसँग ज

तकीन्हअजियारी॥कहतभरतगुणशीलसुभाऊ॥प्रेमपयोधिमगनरघुराऊ॥दो॥सुनिरघुवरवानीविवुधदेषिभरतपरहेतु॥सकलसराह
तरामसेप्रभुकोकृपानिकेतु॥२३३॥चौ॥जौंनहोतजगजनमभरतको॥सकलधरमधुरधरणिधरतको॥कविकुलअगमभरतगुणगाथा
कोजानैतुमविनुरघुनाथा॥लषनरामसियसुनिसुरवानी॥अतिसुखलहेउनजाइवषानी॥इहांभरतसवसहितसहाए॥मंदाकिनीपुनीतअन्हा
ए॥सरितसमीपराषिसवलोगा॥मांगिमातुगुरुसचिवनियोगा॥चलेभरतजहंसियरघुराइ॥साथनिषादनाथलघुभाई॥समुझिमातुकरत
वसकुचाहीं॥करतकुतर्ककोटिमनमांहीं॥राममलषणसियसुनिममनांऊं॥उठिजनिअनतजाहितजिठांऊं॥दो॥मांतुमतेमहंमानिमोहि
जोकछुकहहिसोथोर॥अघअवगुणछमिआदरहिसमुझिआपुनीवोर॥२३४॥चौ॥जौंपरिहरहिमलिनमनजानी॥जौंसनमानहिसेवक
मानी॥मोरेसरणरामकैपनही॥रामसुस्वामिदोषसवजनही॥जगजसभाजनचातकमीना॥नेमप्रेमनिजनिपुननवीना॥असमनगुण
तचलेमगजाता॥सकुचसनेहसिथिलसवगाता॥फेरतमनहिमातुकृतषोरी॥चलतभगतिव लधीरजधोरी॥जवसमुझतरघुनाथसुभाऊ॥
तवपथपरतउताउलपाऊ॥भरतदशातेहिऔसरकैसी॥जलप्रवाहजलअलिगतिजैसी॥देषिभरतकरसोचसनेहू॥भा निषादतेहिसमैविदेहू
दो॥लगेहोनमंगलसगुणसुनिगुनिकहतनिषाद॥मिटिहिसोचहोइहिहरषिपुनिपरिनामविषाद॥२३५॥चौ॥सेवकवचनसत्यसवजाने॥आश्र
मनिकटजाइनियराने॥भरतदीषवनशैलसमाजू॥मुदितछुधितजनुपाइसुनाजू॥ईतिभीतिजनुप्रजादुखारी॥त्रिविधतापपीडितग्रहमारी॥जाइ

सुराजसुदेशसुखारी॥ होइभरतगतितेहिअनुहारी॥ रामवासवनसंपतिभ्राजा॥ सुखीप्रजाजनुपाइसुराजा॥ सचिवविरागविवेकनरेशू॥ वि
पिनसोहावनपावनदेशू॥ भटयमनियमशयलरजधानी॥ शांतिसुमतिशुचिसुंदरिरानी॥ सकलअंगसंपन्नसुराऊ॥ रामचरणआ
स्रतचितचाऊ॥ दो॥ जीतिमोहमहिपालदलसहितविवेकभुवाल॥ करतअकंटकराजपुरसुखसंपदासुकाल॥ २३६॥ चौ॥ वनप्रदेश
मुनिवासघनेरे॥ सजनुपुरनगरगाउगनषेरे॥ विपुलविचित्रविहंगमृगनाना॥ प्रजासमाजनजाइवषाना॥ षगहाकरिहरिवाघवराहा॥ देषिम
हिषवृषसाजुसराहा॥ वैरविहाइचरहिएकसंगा॥ जहंतहंमनहुंसेनचतुरंगा॥ झरणाझरहिमत्तगजगाजहिं॥ मनहुंनिशानविविधविधिवाजहिं
चकचकोरचातकसुकपिकगण॥ कूंजतमंजुमरालमुदितमण॥ अलिगणगावतनाचतमोरा॥ जनुसुराजमंगलचहुंवोरा॥ वेलिविटपत्रि
णसफलसफूला॥ सवसमाजमुदमंगलमूला॥ दो॥ रामसयलसोभानिरषिभरतहृदयअतिप्रेम॥ तापसतपफलपाइजिमिसुखीसि
रानेनेम॥ २३७॥ चौ॥ तवकेवटउंचेचढधाई॥ कहेउभरतसनभुजाउठाई॥ नाथदेषिअहिविटपविशाला॥ पाकरिजंवुरसालतमाला॥ ति
न्हतरुवरन्हमध्यवटसोहा॥ मंजुविशालदेषिमनमोहा॥ नीलसघनपल्लवफललाला॥ अविचलछांहसुखदसवकाला॥ मानहुंतिमिरअरु
णमयरासी॥ विरचीविधिसकेलिसुखमासी॥ एतरुसरितसमीपगोसाई॥ रघुवरपरणकुटीजहछाई॥ तुलसीतरुअतिविविधसोहाए॥ कहुंकहुं
सियकहुंलखनलगाए॥ वटछायावेदिकावनाई॥ सियनिजपानिसरोजसोहाई॥ दो॥ जहांवैठिमुनिगनसहितनितसियरामसुजान॥ सु

अ०कां० नहिकथाइतिहाससवआगमनिगमपुरान॥२३८॥चौ॥सखावचनसुनिविटपनिहारी॥उमगेभरतविलोचनवारी॥करतप्रनामचले
५१ दोउभाई॥कहतप्रीतिसारदसकुचाई॥हरषहिनिरषिरामपदअंका॥मानहुंपारसपायउरंका॥रजसिरधरिहियनयनन्हलावहि॥रघुवरमि व
लनसरिससुखपावहि॥देषिभरतगतिअकथअतीवा॥प्रेममगनमृगखगजडजीवा॥सखहिसनेहविवसमगभूला॥कहिसुपंथसुरवरषहि
फूला॥निरषिसिद्धसाधकअनुरागे॥सहजसनेहसराहनलागे॥होतनभूतलभाउभरतके॥अचरसचरचरअचरकरतके॥दो॥प्रेमअमिय
मंदरविरहभरतपयोधिगंभीर॥मथिप्रगटेसुरसाधहितकृपासिंधरघुवीर॥२३९॥चौ॥सखासमेतमनोहरजोटा॥लषेउनलषनसघनव
नवोटा॥भरतदीषप्रभुआश्रमपावन॥सकलसुमंगलसदनसोहावन॥करतप्रवेसमिटेदुखदावा॥जनुयोगीपरमारथपावा॥देषेभर
तलखनप्रभुआगे॥पूछेवचनकहतअनुरागे॥सीसजटाकटिमुनिपटवांधे॥तूनकसेकरसरधनुकांधे॥वेदीपरमुनिसाधसमाजू
सीयसहितराजतरघुराजू॥वलकलवसनजटिलतनस्यामा॥जनुमुनिवेषकीन्हरतिकामा॥करकमलनिधनुसायकफेरत॥जि राम
यकीजरनिहरतहंसिहेरत॥दो॥लसतमंजुमुनिमंडलीमध्यसीयरघुचंद॥ज्ञानसभाजनुतनधरेभक्तिसच्चिदानंद॥२४०॥सानुजसखा ५१
समेतमगनमन॥विसरेहरषसोकदुखसुखगन॥पाहिनाथकहिपाहिगोसाई॥भूतलपरेलकुटकीनाई॥वचनप्रेमलखनपहिचाने चौ॥
करतप्रणामभरतजियजाने॥वंधुसनेहसरसएहिवोरा॥उतसाहिवसेवावरजोरा॥मिलिनजाइनहिगुदरतवनई॥सुकविलषनम

नकीगति भनई॥ रषेराषि सेवापर भाजू॥ चढीचंग जनु षैंचि षेलारू॥ कहत सप्रेम नाइ महि माथा॥ भरतप्रनाम करत रघुनाथा॥ उठे राम सुनि प्रेम अधी
रा॥ कहुं पट कहुं निषंग धनु तीरा॥ दो॥ वरबस लिए उठाइ उर लाए क्रुपानिधान॥ भरत राम की मिलनि लषि विसरे सबहि अपान॥ २४१॥ मिलनि प्रीति कि चौ॥
मि जाइ वषानी॥ कविकुल अगम करम मन वानी॥ परम प्रेम पूरण दोउ भाई॥ मन बुधि चित अहमिति विसराई॥ कहहु सप्रेम प्रगट को करई॥ केहि छाया क
वि मति अनुसरई॥ कविहि अर्थ आषर बल साचा॥ अनुहरि ताल गतिहि नट नाचा॥ अगम सनेह भरत रघुवर के॥ जहं न जाइ मन विधि हरि हर के॥ सो मैं कुमति
कहौं केहि भांती॥ वाजु सुराग कि गांडर तांती॥ मिलनि विलोकि भरत रघुवर की॥ सुरगण सभै धकधकी धरकी॥ समुझाए सुरगुरु जड जागे॥ वरषि प्रसून
प्रसंसन लागे॥ दो॥ मिलि सप्रेम रिपुसूदनहि केवट भेटेउ राम॥ भूरि भाय भेटे भरत लछिमण करत प्रणाम॥ २४२॥ चौ॥ भेटेउ लषन ललकि लघु
भाई॥ वहुरि निषाद लीन्ह उर लाई॥ पुनि मुनिगण दुहुं भाइन्ह वंदे॥ अभिमत आसिष पाइ अनंदे॥ सानुज भरत उमगि अनुरागा॥ धरि सिर सिय
पद पदुम परागा॥ पुनि पुनि करत प्रणाम उठाए॥ सिर कर कमल परसि वैठाए॥ सीय आसीस दीन्ह मन मांहीं॥ मगन सनेह देह सुधि नाहीं॥ सब विधि
सानुकूल लषि सीता॥ भे निसोच उर अपडर वीता॥ कोउ कछु कहै न कोउ कछु पूछा॥ प्रेम भरा मन निज गति छूछा॥ तेहि अवसर केवट धीरज धरि
जोरि पानि विनवत प्रणाम करि॥ दो॥ नाथ साथ मुनिनाथ के मातु सकल पुरलोग॥ सेवक सेनप सचिव सब आए विकल वियोग॥ २४३॥ चौ॥
सील सिंधु सुनि गुरु आगवनू॥ सिय समीप राषे रिपुदवनू॥ चले सवेग राम तेहि काला॥ धीर धरम धुर दीनदयाला॥ गुरुहि देषि सानुज अनुरा

अ०कां०
५८

गे ।। दंड प्रणाम करण प्रभु लागे ।। मुनिवर धाइ लिए उरलाई ।। प्रेम उमगि भेटे दोउ भाई ।। प्रेम पुलकि केवट कहि नामू ।। कीन्ह दूरि ते दंड प्रणामू ।। राम सखा

व रिषिवर समेटा ।। जनु महि लुठत सनेह समेटा ।। रघुपति भक्ति सुमंगल मूला ।। नभ सराहि सुर बरिषहि फूला ।। एहि सम निपट नीच कोउ नाहीं ।। बड बसिष्ट(

सम को जग माहीं ।। दो ।। जेहि लखि लषनहु ते अधिक मिले मुदित मुनिराउ ।। सो सीता पति भजन को प्रगट प्रताप प्रभाउ ।। २४४ ।। चौ ।। आरत लोग रा

म सब जाना ।। करुणाकर सुजान भगवाना ।। जो जेहि भाय रहा अभिलाषी ।। तेहि तेहि कै तसि तसि रुचि राषी ।। सानुज मिलि पल महं सब काहू ।। कीन्हि

दूरि दुख दारुण दाहू ।। यह बडि बात राम कै नाहीं ।। जिमि घट कोटि एक रवि छाहीं ।। मिलि केवटहि उमगि अनुरागा ।। पुरजन सकल सराहहि भागा ।।

देषी राम दुखित महतारी ।। जनु सुवेलि अवली हिम मारी ।। प्रथम राम भेटे कैकेई ।। सरल सुभाय भक्ति मति भेई ।। पग परि कीन्ह प्रबोध बहोरी ।।९(

काल करम विधि सिर धरि षोरी ।। दो ।। भेटी रघुवर मातु सब करि प्रबोध परितोषु ।। अंब ईश आधीन जग काहि न देइअ दोषु ।। २४५ ।। चौ ।। गुरु तिय

पद वंदे दुहुं भाई ।। सहित विप्र तिय जे संग आई ।। गंग गौरि सम सब सनमानी ।। देहि असीस मुदित मृदु वानी ।। गहि पद लगे सुमित्रा अंका ।। ज राम

नु भेटी संपति अति रंका ।। पुनि जननी चरणनि दोउ भ्राता ।। परे प्रेम व्याकुल सब गाता ।। अति अनुराग अंब उर लाए ।। नयन सनेह सलिल अन्ह ५८

वाए ।। तेहि औसर कर हर्ष विषादू ।। किमि कवि कहै मूक जिमि स्वादू ।। मिलि जननिहि सानुज रघुराई ।। गुरु सन कहेउ कि धारिये पाई ।। पुरजन

पाइ मुनीस नियोगू ।। जल थल तकि तकि उतरेउ लोगू ।। दो ।। महिसुर मंत्री मातु गुरु गने लोग लिए साथ ।। पावन आश्रम गवने कैय भर

तलखन रघुनाथ ॥२४६॥ चौ॥ सीय आय मुनिवर पग लागी॥ उचित असीस लीन्ह मन मांगी॥ गुरुपतिनी मुनितियन्हि समेता॥ मिली प्रेम क
हि जाइ न जेता॥ बंदि बंदि पद सिय सबही के॥ आसीरबचन लही प्रिय जी के॥ सासु सकल जब सीय निहारी॥ मूदे नयन सहमि सुकुमारी॥ परी बधिक
बसि मनहुं मराली॥ काह कीन्ह करतार कुचाली॥ तिन्ह सिय निरषि निपट दुख पावा॥ सो सब सहिअ जो दैव सहावा॥ जनकसुता तब उर धरि धीरा॥
नील नलिन लोचन भरि नीरा॥ मिली सकल सासुन्ह सिय जाई॥ तेहि अवसर करुणा महि छाई॥ दो॥ लागि लागि पग सबनि सिय भेटति अति अ
नुराग॥ हृदय असीसहि प्रेम वस रहिअहु भरी सोहाग॥२४७॥ चौ॥ विकल सनेह सीय सब रानी॥ बैठन सबहि कहेउ गुरु ग्यानी॥ कहि जग गति
माइक मुनिनाथा॥ कहे कछुक परमारथ गाथा॥ नृप कर सुरपुर गवन सुनावा॥ सुनि रघुनाथ दुसह दुख पावा॥ मरण हेतु निज हेतु
विचारी॥ भे अति विकल धीर धुर धारी॥ कुलिश कठोर सुनत कटु वानी॥ विलपत लखन सीय सब रानी॥ सोक विकल अति सकल समाजू॥ मान
हु राज अकाजेउ आजू॥ मुनिवर बहुरि राम समुझाए॥ सहित समाज सुसरित अन्हाए॥ व्रत निरंबु तेहि दिन प्रभु कीन्हा॥ मुनिहु कहे जल का
हु न लीन्हा॥ दो॥ भोर भए रघुनंदनहि जो मुनि आयसु दीन्ह॥ सर्द्धा भक्ति समेत प्रभु सो सब सादर कीन्ह॥२४८॥ चौ॥ करि पितु क्रिया वेद ज
स वरनी॥ भये पुनीत पातक तम तरनी॥ सुद्ध सो भए साधु संमत अस॥ तीरथ आवाहन सुरसरि जस॥ सुद्ध भए दुइ वासर वीते॥ वोले गुरु सन रा
म प्रीते॥ नाथ लोग सब निपट दुखारी॥ कंद मूल फल अंबु अहारी॥ सानुज भरत सचिव सब माता॥ देखि मोहि पल जुग जिमि जाता॥ सब समेत

अ॰कां
५९

पुरधारिअपाऊ॥ आपुइहांअमरावतिराऊ॥ वङ्गतकहेउसवकिएउठिगाई॥ उचितहोइतसकरियगोसाइ॥दो॥ धर्म्मसेतुकरुणायतनकस
नकहहुअसराम॥ लोगदुखितदिनदुइदरसदेषिलहउविश्राम॥२४९॥चौ॥ रामवचनसुनिसवैसमाजू॥ जनुजलनिधिमहंविकलजहाजू॥
सुनिगुरुगिरासुमंगलमूला॥ भयउमनङ्गमारुतअनकूला॥ पावनिपयतिहुकालअन्हाही॥ जोविलोकिअघवोघनसाहीं॥ मंगलमूरतिलो
चनभरिभरि॥ निरषहिहरषिदंडवतकरिकरि॥ रामसयलवनदेषनजांहीं॥ जहंसुखसकलसकलदुखनाहीं॥ झरणाझरहिसुधासमवारी॥
त्रिविधितापहरत्रिविधिवयारी॥ विटपवेलितृणअगिनितजाती॥ फलप्रसूनपल्लववङ्गभांती॥ सुंदरशिलासुखदसवछांहीं॥ जाइवरणिवनछ
विकेहिपांहीं॥दो॥ सरनिसरोरुहजलविहंगकुंजतगुंजतभंग॥ वयरविगतविहरतविपिनिम्रगविहंगवङ्गरंग॥२५०॥चौ॥ कोलकिरा
तभीलवनवासी॥ मधुसुचिसुंदरस्वादसुधासी॥ भरिभरिपरणपुटिरचिरूरी॥ कंदमूलफलफलअंकुरजूरी॥ सवहिदेहिकरिविनय
यप्रणामा॥ कहिकहिस्वादभेदगुणनामा॥ देहिलोगवङ्गमोलनलेहीं॥ फेरतरामदोहाईदेहीं॥ कहहिसनेहमगनम्रदुवानी॥ मानतसा
धुप्रेमपहिचानी॥ तुम्हसुकृतीहमनीचनिषादा॥ पावादरसनरामप्रसादा॥ हमहिअगमअतिदरसतुम्हारा॥ जसमरुधरणिदेवधुनिधा
रा॥ रामकृपालनिषादनेवाजा॥ परिजनप्रजाचहियजसराजा॥दो॥ असजियजानिसकोचतजिकरिअछोहतजिनेहु॥ हमहिकृतारथक
रणलगिफलतृणअंकुरलेहु॥२५१॥चौ॥ तुम्हप्रियपाङ्गनवनपगुधारे॥ सेवाजोगनभागहमारे॥ देवकाहहमतुम्हहिगोसाईं॥ ईंधनपात

राम
५९

जीव

किरातमिनाई॥ यहहमारिअतिवड़िसेवकाई॥ लेहिनवासनवसनचोराई॥ हमजडजीवँगणघाती॥ कुटिलकुचालीकुमतिकुजाती॥ पापकरतनि
शिवासरजोंहीं॥ नहिपटकटिनहिपेटअघाहीं॥ सपनेहुधर्मबुद्धिकसकाऊ॥ यहरघुनंदनदरसप्रभाऊ॥ जबतेंप्रभुपदपदुमनिहारे॥ मिटेदुसह
दुखदोषहमारे॥ बचूनसुनतपुरजनअनुरागे॥ तिन्हकेभागसराहनलागे॥ छं॥ लागेसराहनभागसबअनुरागबचनसुनावहीं॥ बोलनिमिल
निसियरामचरणसनेहलखिसुषपावहीं॥ नरनारिनिदरहिनेहनिजसुनिकोलभिल्लनिकीगिरा॥ तुलसीकृपारघुबंसमनिकीलोहलैलौका
तिरा॥ सोरठा॥ विहरहिवनचहुंवोरप्रतिदिनप्रमुदितलोगसब॥ जलज्योंदादुरमोरभएपीनपावसप्रथम॥ २५१॥ चौ॥ पुरनरनारिमगनअतिप्री
ती॥ वासरजांहिपलकसमबीती॥ सीयसासुप्रतिवेषबनाई॥ सादरकरैसरससेवकाई॥ लषैनमरमरामबिनुकाहूं॥ मायासबसियमायामाहूं॥
सीयसासुसेवावसिकीन्ही॥ तिन्हलहिसुखसिषआसिषदीन्ही॥ लषिसियसहितसरलदोभाई॥ कुटिलरानिपछितानिअघाई॥ अवनिजमहि
जाचतिकैकेई॥ महिनवीचुविधिमीचुनदेई॥ लोकहुवेदविदितमुनिकहहीं॥ रामविमुखथलनर्कनलहहीं॥ यहसंसैसबकेमनमांहीं॥ रामगव
नविधिअवधिकीनांहीं॥ दो॥ निशिननींदनहिभूषदिनभरतविकलसुठिसोच॥ नीचकीचविचमगनजसमीनहिसलिलसकोच॥ २५२॥ चौ॥ की
न्हमातुमिसुकालकुचाली॥ ईतिभीतिजसपाकतशाली॥ केहिविधिहोइरामअभिषेकू॥ मोहिअवकलतउपाउनएकू॥ अवसिफिरहिगुरुआयसु
मानी॥ मुनिपुनिकहवरामरुचिजानी॥ मातुकहेंबहुरहिरघुराऊ॥ रामजननिहठकरबकिकाऊ॥ मोहिअनुचरकरकेतिकबाता॥ तेहिपर

अ॰को॰ कुसमैवामविधाता॥ जौंहवकरौंतनिपदकुकर्म्मू॥ हरमिरतेंगुरुसेवकधर्म्मू॥ एकौजुगुतिनमनठहरानी॥ सोचतभरतहिरैनिविहानी॥ प्रातअन्हाइ
५० प्रभुहिसिरनाइ॥ वैठतपठएरिषैवोलाइ॥ दो॥ गुरुपदकमलप्रनामकरिवैठेआयसुपाइ॥ विप्रमहाजनसचिवसवजुरेसभासदआइ॥ २५४॥ चौ॥
वोलेमुनिवरसमयसमाना॥ सुनहुसभासदभरतसुजाना॥ धर्म्मधुरीणभानुकुलभानू॥ राजारामस्ववसभगवानू॥ सत्यसंधपालकश्रुति
सेतू॥ रामजन्मजगमंगलहेतू॥ गुरुपितुमातुवचनअनुसारी॥ खलदलदलनदेवहितकारी॥ नीतिप्रीतिपरमारथुस्वारथु॥ कोउनरामसम
जानयथारथ॥ विधिहरिहरससिरविदिसिपाला॥ मायाजीवकरमकुलिकाला॥ अहिपमहिपजहलगिप्रभुताई॥ योगसिद्धिनिगमागमगाई॥
करिविचारसवदेषहुनीके॥ रामरजायसीससवहीके॥ दो॥ देषेरामरजायरुषहमसवकरहितहोइ॥ समझिसयानेकरहुअवसवमिलि
संमतसोइ॥ २५५॥ चौ॥ सवकहंसुखदरामअभिषेकू॥ मंगलमूलमोदमगुएकू॥ केहिविधिअवधिचलहिरघुराई॥ कहहुसमुझिसोकरिय
उपाई॥ सवसादरसुनिमुनिवरवानी॥ नयपरमारथस्वारथसानी॥ उतरुनआवलोगभएभोरे॥ तवसिरनाइभरतकरजोरे॥ भानुवंसभए राम
एभूपघनेरे॥ अधिककएकतेंएकवडेरे॥ जनमहेतुसवकहंपितुमाता॥ करमसुभासुभदेइविधाता॥ दलिदुखसजैसकलकल्याना॥ असअसीसरा ५०
उरिजगजाना॥ सोगोसाइंविधिगतिजेहिछेकी॥ सकैकोटारिटेकजोटेकी॥ दो॥ बूझिअमोहिउपाउअवसोसवमोरअभागु॥ सुनिसनेहमय
वचनगुरुउरउमगाअनुरागु॥ २५६॥ तातवातफुरिरामकृपाहीं॥ रामविमुखसुखसपनेहुनाहीं॥ सकुचौंतातकहतएकवाता॥ अर्द्धतजहिंवुधसरव

सजाना ॥ तुम्ह कानन गवनहु दुहुं भाइ ॥ फेरि अलषन सीय रघुराई ॥ सुनि सुभ वचन हरषे दोउ भ्राता ॥ भये प्रमोद परिपूरण गाता ॥ मन प्रसन्न तन
तेज विराजा ॥ जनु जिय राउ राम भए राजा ॥ वहुत लाभ लोगन्ह लघु हानी ॥ सम दुख सुख सब रोवहि रानी ॥ कहहि भरत मुनि कहा सो कीन्हे ॥ फल जग
जीवन्ह अभिमत दीन्हे ॥ कानन करउ जनम भरि वासू ॥ एहि तें अधिक न मोर सुपासू ॥ दो ॥ अंतरजामी राम सिय तुम्ह सर्वज्ञ सुजान ॥ जौं फुर कहौं त ना
थ निज कीजिय वचन प्रमान ॥ २५७ ॥ चौ ॥ भरत वचन सुनि देषि सनेहू ॥ सभा सहित मुनि भए विदेहू ॥ भरत महा महिमा जलरासी ॥ मुनि मति ठाढि ती
र अवला सी ॥ गा चह पार जतन हिय हेरा ॥ पावहि नाउ न वोहित वेरा ॥ अवरु करिहि को भरत वडाई ॥ सरसी सीपी कि सिंधु समाई ॥ भरत मुनिहि मन भीत
र भाए ॥ सहित समाज राम पहि आए ॥ प्रभु प्रणाम करि दीन्ह सुआसन ॥ वैठे सुनि सव मुनि अनुसासन ॥ वोले मुनिवर वचन विचारी ॥ देश काल औस
र अनुहारी ॥ सुनहु राम सरवज्ञ सुजाना ॥ धर्म्म नीति गुण ज्ञान निधाना ॥ दो ॥ सव के उर अंतर वसहु जानहु भाव कुभाउ ॥ पुरजन जननी भरत
हित होइ सो कहिय उपाउ ॥ २५८ ॥ चौ ॥ आरत कहहि विचारि न काऊ ॥ सूझ जुआरिहि आपन दाऊ ॥ सुनि मुनि वचन कहत रघुराऊ ॥ नाथ तुम्हा
रेहि हाथ उपाऊ ॥ सव कर हित रुष राउर राषे ॥ आयसु किए मुदित फुर भाषे ॥ प्रथम जो आयसु मो कहं होई ॥ माथें मानि करौं सिष सोई ॥ पुनि जे
हि कहं जस कहव गोसाईं ॥ सो सव भांति करहि सेवकाई ॥ कह मुनि राम सत्य तुम भाषा ॥ भरत सनेह विचारु न राषा ॥ तेहि तें कहउं वहोरि वहोरी ॥ भरत भगति
वस भइ मति मोरी ॥ मोरे जान भरत रुचि राषी ॥ जो कीजिय सो सुभ शिव साषी ॥ दो ॥ भरत विनय सादर सुनिय करिय विचारु वहोरि ॥ करव साधुमत लोक

अ० कां०
५२

मत नृपनयनिगमनिचोरि ॥ २५९ ॥ चौ ॥ गुरुअनुरागभरतपरदेषी ॥ रामहृदयआनंदविशेषी ॥ भरतहिधर्मधुरंधरजानी ॥ निजसेवकतनमानस
वानी ॥ बोलेगुरुआयसुअनुकूला ॥ वचनमंजुमृदुमंगलमूला ॥ नाथसपथपितुचर्नदोहाई ॥ भएननुवनभरतअसुभाई ॥ जेगुरुपदअंबुजअनुरागी
तेलोकहुवेदहुवडभागी ॥ राउरजापरअसअनुरागू ॥ कोकहिसकैभरतकरभागू ॥ लखिलघुवंधुवुधिसकुचाई ॥ करतवदनपरभरतवडाई ॥ भ
रतकहहिसोकिएभलाई ॥ असकहिरामरहेअरगाई ॥ दो ॥ तवमुनिवोलेभरतसनसवसकोचतजितात ॥ कृपासिंधुप्रियवंधुसनकहहुहृदयकै
वात ॥ २६० ॥ चौ ॥ सुनिमुनिवचनरामरुखपाई गुरुसाहिवअनुकूलअघाई ॥ लखिअपनेसिरसवछरभारू ॥ कहिनसकैहिकछुकरहिविचा
रू ॥ पुलकिसरीरसभाभएठाढे ॥ नीरजनयननेहुजलवाढे ॥ कहववमोरमुनिनाथनिवाहा ॥ एहितेंअधिककहवमैकाहा ॥ मैजानौनिजनाथसु न
भाऊ ॥ अपराधिहुपरकोहनकाऊ ॥ मोपरकृपासनेहविशेषी ॥ षेलतषुनुसककवहुंनहिदेषी ॥ सिसुपनतेंपरिहरेउंसंगू ॥ कवहूंनकीन्हमोरमनभं
गू ॥ मैप्रभुकृपारीतिजियजोही ॥ हारेहुषेलजितावहिमोही ॥ दो ॥ महूंसनेहसकोचवससनमुखकहेनवैन ॥ दरसनतृपितनआजुलगिप्रेम राम
चौ पियासेनैन ॥ २६१ ॥ विधिनसकेउसहिमोरदुलारा ॥ नीचवीचुजननीमिसुपारा ॥ एहउकहतमोहिआजुनसोभा ॥ अपनीसमुझिसाधुसुचिकोभा ॥ ५२
मातुमंदिमैंसाधुसुचाली ॥ उरअसआनतकोटिकुचाली ॥ फरैकिकोदववालिसुसाली ॥ मुकताप्रसवकिसंवुककाली ॥ सपनेहुदोसकलेसनका
हू ॥ मोरअभागउदधिअवगाहू ॥ विनुसमुझेनिजअघपरिपाकू ॥ जामेउजायजननिकहिकाकू ॥ हृदयहेरिहारेउंसवओरा ॥ एकहिभांतिभलेह

भलमोरा॥गुरुगोसाइसाहिवसियरामू॥लागतमोहिनीकपरिनामू॥दो॥साधकसभागुरुमुनिनिकटकहौंसुथलसतिभाउ॥प्रेमप्रपंचकिझूठफुरजा
नहिमुनिरघुराउ॥२६२॥चौ॥भूपतिमरनुप्रेमपनुराषी॥जननीकुमतिजगतसवसाषी॥देषिनजाइविकलमहतारी॥जरहिदुसहजरपुरनरनारी॥
महींसकलअनरथकरमूला॥सोसुनिसमुझिसहउसवसूला॥सुनिवनगवनकीन्हरघुनाथा॥करिमुनिवेषलषनसियसाथा॥विनुपदत्राणपि
यादेहिपाए॥शंकरसाषिरहेएहिघाए॥वहुरिनिहारिनिषादसनेहू॥कुलिशकठिनउरभयउनवेहू॥अवसवआषिन्हदेषेउआइ॥जीवतजीव
जडसवैसहाई॥जिन्हहिनिरषिमगसापिनिविछी॥तजहिविषमविषतापसतिछी॥दो॥तेइरघुनंदनलषणसियअनहितलागेजाहि॥तासुतनय
तजिदुसहदुखदैवसहावतकाहि॥२६३॥चौ॥सुनिअतिविकलभरतवरवानी॥आरतिप्रीतिविनयनयसानी॥सोकमगनसवसभाषभारू॥मनहुंक
मलवनपरेउतुसारू॥कहिअनेकविधिकथापुरानी॥भरतप्रवोधकीन्हमुनिज्ञानी॥वोलेउचितवचनरघुनंदू॥दिनकरकुलकैरववनचंदू॥तात
जीयजिनिकरहुगलानी॥ईशअधीनजीवगतिजानी॥तीनिकालत्रिभुवनगतमोरे॥पुण्यस्लोकताततरतोरे॥उरआनततुम्हारकुटिलाई॥जा
इलोकपरलोकनसाई॥दोसदेइजननिहिजडतेई॥जिन्हगुरुसाधकसभानहिसेई॥दो॥मिटिहैपापप्रपंचसवअखिलअमंगलभार॥लोकसुज
सपरलोकसुखसुमिरतनामतुम्हार॥२६४॥चौ॥कहउसुभावसत्यशिवसाषी॥भरतभूमिरहराउरराषी॥तातकुतर्ककरहुजियजाए॥वैरप्रे
मनहिदुरैदुराए॥मुनिगननिकटविहंगमृगजाहीं॥वाधकवधिकविलोकिपराहीं॥हितअनहितपशुपच्छीजाना॥मानुषतनगुणज्ञाननिधाना॥

अ॰का॰ ताततुम्हहिमैंजानौनीकें॥करौकाहअसमंजसजीके॥राषेउरायसत्यमोहित्यागी॥तनुपरिहरेउप्रेमपनलागी॥तासुवचनमेटतमोहिसोचू
५२ तेहितेंअधिकतुम्हारसकोचू॥तापरगुरुमोहिआयसुदीन्हा॥अवसिजोकहहुचहिउँसोकीन्हा॥दो॥मनप्रसन्नकरिसकुचतजिकहहुक
रौंसोइआजु॥सत्यसंधरघुवरवचनसुनुभासुखीसमाजु॥२६५॥चौ॥सुरगणसहितसभयसुरराजू॥सोचहिंचाहतहोनअकाजू॥वनतउपाउकर
तकछुनाहीं॥रामसरणसवकेमनमाहीं॥वहुरिविचारिपरसपरकहहीं॥रघुपतिभगतभक्तिवसअहहीं॥सुधिकरिअंवरीषदुर्वासा॥भेसुरसुरपतिनि र
पटनिरासा॥सहेसुरन्हवहुकालविषादा॥नरहरिकिएप्रगटप्रह्लादा॥लगिलगिकानकहहिंधुनिमांथा॥अवसुरकाजभरतकेहाथा॥आ
नउपायनदेखियदेवा॥मानतरामसुसेवकसेवा॥हियसप्रेमसुमिरहुसवभरतहि॥निजगुणशीलरामवसकरतहि॥दो॥सुनिसुरमतसुरगुरुकहे
श्र उभलतुम्हारवडभाग॥सकलसुमंगलमूलजगभरतचरणअनुराग॥२६६॥चौ॥सीतापतिसेवकसेवकाई॥कामधेनुसयसरिससोहाई॥भरतभगतितुम्ह
रेमनआई॥तजहुसोचविधिवातवनाई॥देषुदेवपतिभरतप्रभाऊ॥सहजसुभावविवसरघुराऊ॥मनथिरकरहुदेवडरनाहीं॥भरतहिजानिरामप राम
रिछांहीं॥सुनिसुरगुरुसुरसंमतसोचू॥अंतरजामीप्रभुहिसंकोचू॥निजसिरभारभरतजियजानी॥करतकोटिविधिउरअनुमानी॥करिविचार ५२
मनदीन्हेठीका॥रामरजायसुआपननीका॥निजपणतजिराषेउपनमोरा॥छोहसनेहकीन्हनहिंथोरा॥दो॥कीन्हअनुग्रहअमितअतिसवविधिसी
तानाथ॥करिप्रणामवोलेभरतजोरिजलजजुगहाथ॥२६७॥चौ॥कहौंकहावौंकाअवस्वामी॥कृपाअंवुनिधिअंतरजामी॥गुरुप्रसन्नसाहिवअनुकूला

मिटीमलिनमनकलपितसूला॥ अपडरडरेउनसोचसमूले॥ रविहिनदोसदिवसदिसिभूले॥ मोरअभागमांनुकुटिलाइ॥ विधिगतिविषमकालकठिनाई
पाउरोपिसवमिलिमोहिघाला॥ प्रनतपालआपनपनपाला॥ यहनईरीतिनराउरहोई॥ लोकऊवेदविदितनहिगोई॥ जगअनभलभलएकगोसाई॥ क
हियहोइभलकासुभलाई॥ देवदेवतरुसरिससुभाऊ॥ सनमुखविमुखनकाहुहिकाऊ॥ दो॥ जाइनिकटपहिचा नितरुछांहसमनसवसोचु॥ माग
तअभिमतपावजगराउरंकभलपोचु॥ २६८॥ चौ॥ लखिसवविधिगुरुस्वामिसनेहू॥ मिटेउछोभनहिमनसंदेहू॥ अवकरुणाकरकीजियसोई॥ जन
हितप्रभुचितछोभनहोई॥ जोसेवकसाहिवहिसकोची॥ निजहितचहैतासुमतिपोची॥ सेवकहितसाहिवसेवकाई॥ करैसकलसुखलोभविहाई॥ स्वारथनाथ
फिरेसवहीका॥ किएरजायकोटिविधिनीका॥ यहस्वारथपरमारथसारू॥ सकलसुकृतफलसुगतिसिंगारू॥ देवएकविनतीसुनिमोरी॥ उचितहो
इतसकरववहोरी॥ तिलकसमाजसाजसवआना॥ करियसफलप्रभुजौंमनमाना॥ दो॥ सानुजपठइयमोहिवनकीजियसवहीसनाथ॥ नतरुफे
रियहिवंधदोउनाथचलौंमैंसाथ॥ २६९॥ चौ॥ नतरुजांहिवनतीनिउभाई॥ वहुरिअसीयसहितरघुराई॥ जेहिविधिप्रभुप्रसन्नमनहोई॥ करुणा
द सागरकीजिएसोई॥ देवदीन्हसवमोहिपभारू॥ मोरेनीतिनधर्मविचारू॥ कहौंवचनसवस्वारथहेतू॥ रहतनआरतकेचितचेतू॥ उतरदेइसुनिस्वामिर
जाई॥ सोसेवकलखिलाजलजाई॥ असमैअवगुणउदधिअगाधू॥ स्वामिसनेहसराहतसाधू॥ अवकृपालमोहिसोमतभावा॥ सकुचस्वामिमनजा
एनपावा॥ प्रभुपदसपथकहौंसतभाऊ॥ जगमंगलहितएकउपाऊ॥ दो॥ प्रभुप्रसन्नमनसकुचतजिजोजेहिआयसुदेव॥ सोसिरधरिधरिकरिहिसव

मिटिहिअनटअवरेव॥२७०॥चौ॥भरतवचनसुनिमुनिसवहरषे॥साधसराहिसुमनसुरवरषे॥असमंजसवसअवधनिवासी॥प्रमुदितमु
नितापसवनवासी॥चुपहिरहेरघुनाथसकोची॥प्रभुगतिदेषिसभासवसोची॥जनकदूततेहिऔसरआवा॥मुनिवसिष्ठसुनिवेगिवोलावा॥क
रिप्रणामतिन्हरामनिहारे॥वेषदेषिभयेनिपटदुखारे॥दूतन्हमुनिवरवूझीवाता॥कहहुविदेहभूपकुशलाता॥सुनिसकुचाइनाइमहिमाथा॥
वोलेचरवरजोरेहाथा॥वूझवराउरसादरसांई॥कुशलहेतुसोभयउगोसांई॥दो॥नाहितकोशलनाथकेसाथकुशलगइनाथ॥मिथिलाअ
वधिविशेषतेंजगसवभयउअनाथ॥२७१॥चौ॥कोशलपतिगतिसुनिजनकौरा॥भयेसवलोगसोगवसवौरा॥जेहिदेषेतेहिसमयवि
देहू॥नामसत्यअसलागनकेहू॥रानिकुचालसुनतनरपालहि॥सूझनकछुजसमनिविनुव्यालहि॥भरतराजरघुवरवनवासू॥भामि
थिलेशहिहृदयहेरासू॥नृपवूझेउवुधसचिवसमाजू॥कहहुविचारिउचितकाआजू॥समुझिअवधिअसमंजसदोऊ॥चलियकिरहिय
नकहकछुकोऊ॥नृपहिधीरधरिहृदयविचारी॥पठएअवधिचतुरचरचारी॥वूझिभरतसतिभावकुभाऊ॥आएहुवेगिनहोइलषाऊ॥दो॥
गएअवधिचरभरतगतिवूझिदेषिकरतूति॥चलेचित्रकूटहिभरतचारचलेतिरहूत॥२७२॥चौ॥दूतन्हआइभरतकैकरनी॥जनकसमाजयथा
मतिवरनी॥सुनिगुरुपुरजनसचिवमहीपति॥भयेसवसोचसनेहविकलअति॥धरिधीरजकरिभरतवडाई॥लिएसुभटसाहनीवोलाई॥घरपुरदे
सराखिरषवारे॥हयगयरथवहुजानसंवारे॥दुघरिसाधिचलेततकाला॥किहुविश्रामनमगमहिपाला॥भोरहिआइअन्हाइप्रयागा॥चले

यमुनउतरणसवलागा॥ षवरिलेनहमपठएनापा॥ तिन्हकहिअसमहिनायउमांपा॥ साषकिरातछुसातकदीन्हे॥ मुनिवरतुरितविदाचरकीन्हे॥ दो
सुनतजनकआगमनसवहरषेउअवधसमाज॥ रघुनंदनहिसंकोचवडसोचविवससुरराज॥ २७३॥ चौ॥ गरैगलानिकुटिलकैकेई॥ काहिकहैकेहिदू
षनदेई॥ असमनआनिमुदितनरनारी॥ भयउवहोरिरहनदिनचारी॥ एहिप्रकारगतवासरसोऊ॥ प्रातअन्हाइलागसवकोऊ॥ करिमंजनपू
जहिनरनारी॥ गनपतिगौरिपुरारितमारी॥ रमारमनपदवंदिवहोरी॥ विनवहिअंजुलिअंचलजोरी॥ राजारामजानकीरानी॥ आनंदअवधि
र अवधिरजधानी॥ सुवसवसउसवसहितसमाजा॥ भरतहिरामकरहुजुवराजा॥ एहिसुखसुधासीचिसवकाहू॥ देवदेहुजगजीवनलाहू॥ दो॥
गुरुसमाजभाइन्हसहितरामराजपुरहोउ॥ अछतरामराजाअवधिमरियमागसवकोउ॥ २७४॥ चौ॥ सुनिसनेहमयपुरजनवानी॥ नींदहिजोगवि
रतिमुनिग्यानी॥ एहिविधिनित्यकृयाकरिपुरजन॥ रामहिकरहिप्रणामपुलकिमन॥ ऊंचनीचमध्यमनरनारी॥ लहहिदरसनिजनिजअनुहारी॥
सावधानसवकहंसनमानहि॥ सकलसराहतकृपानिधानहि॥ लरिकाइहितेंरघुवरवानी॥ पालतनीतिप्रीतिपहिचानी॥ शीलसकोचसिंधुरघुराऊ॥
सुमुखसुलोचनसरलसुभाऊ॥ कहतरामगुणगणअनुरागे॥ सवनिजभागसराहनलागे॥ हमसवपुन्यपुंजजगथोरे॥ जिन्हहिराममानतक
रिमोरे॥ दो॥ प्रेममगनतेहिसमयसवसुनिआवतमिथिलेसु॥ सहितसभासंभ्रमउठेउरविकुलकमलदिनेसु॥ २७५॥ चौ॥ भाइसचिवगुरुपरिज
नसाथा॥ आगेंगवनकीन्हरघुनाथा॥ गिरिवरदीषजनकपतिजवहीं॥ करिप्रणामरथत्यागेउतवहीं॥ रामदरसलालसाउछाहू॥ पथश्रम

अ॰कां
५४
लेसकलेशनकाहू॥ मनमहंजहंरघुवरवयदेही॥ विनुमनुतनुदुखसुखसुधिकेही॥ आवतजनकचलेएहिभांती॥ सहितसमाजप्रेम
मतिमांती॥ आएनिकटदेखिअनुरागे॥ सादरमिलनपरसपरलागे॥ लगेजनकमुनिजनपदवंदनु॥ रिषिनप्रणामकरतरघुनंदन॥ भाइन्हसहित
राममिलिराजहि॥ चलेलेवाइसमेतसमाजहि॥ दो॰ आश्रमसागरसांतरसपूरणपावनपाथ॥ सेनमनहुकरुनासरितलिएजातरघुनाथ॥ २७६॥
चौ॰ वोरतिज्ञानविरागकरारे॥ वचनससोकमिलतनदनारे॥ सोचउसाससमीरतरंगा॥ धीरजतटतरुवरकरभंगा॥ विषमविषादतोरावतिधारा॥ भयभ्रमभ
वरअवर्तअपारा॥ केवटवुद्धिविद्यावडनावा॥ सकहिनखेइऐकनहिआवा॥ वनचरकोलकिरातविचारे॥ थकेविलोकिपथिकहियहारे॥ आश्रमउद
धिमिलेजवजाई॥ मनहुंउठेअंवुधिअकुलाई॥ सोकविकलदोउराजसमाजा॥ रहानज्ञाननधीरजलाजा॥ भूपरूपगुणशीलसराही॥ रोवहिसोक
व सिंधुअवगाही॥ छं॰ अवगाहिसोकसमुद्रसोचहिनारिनरव्याकुलमहा॥ देदोषसकलसरोषवोलहिवामविधिकीन्होकहा॥ सुरसिद्धतापसजोगिजन राम
मुनिदेषिदशाविदेहकी॥ तुलसीनसमरथकोउजोतरिसकैसरितसनेहकी॥ सो॰ कियेअमितउपदेसुजहंतहंलोगन्हमुनिवरन्ह॥ धीरजधरि ५५
यनरेसकहेउवसिष्टविदेहसन॥ २७७॥ चौ॰ जासुज्ञानरविभवनिशिनासा॥ वचनकिरणमुनिकमलविकासा॥ तेहिकिमोहममतानियराई॥ यह
सियरामसनेहवडाई॥ विषईसाधकसिद्धसयाने॥ त्रिविधजीवजगवेदवखाने॥ रामसनेहसरसमनजासू॥ साधुसभावडआदरतासू॥ सोहनरामप्रे
मविनुज्ञानू॥ करणधारविनुजिमिजलजानू॥ मुनिवहुविधिविदेहसमुझाए॥ रामघाटसवलोगअन्हाए॥ सकलसोकसंकुलनरनारी॥ सोवासर

रवीतिविनुवारी॥ पसुषगम्रगन्हनकीन्ह अहारू॥ एयपरिजनकरकौनविचारू॥दो॥दोउसमाजनिमिराजरघुराजअन्हानेप्रात॥वैठेसववटविटपतरमनमलीनकृसगात॥२७८॥चौ॥जेमहिसुरदशरथपुरवासी॥जेमिथिलापतिनगरनेवासी॥हंसवंसगुरुजेनकपुरोधा॥जिनजगमगपरमारथसोधा॥ लगेकहनउपदेशअनेका॥सहितधर्मनयविरतिविवेका॥कौशिककहिकहिकथापुरानी॥समुझाईसवसभासुवानी॥तवरघुनाथकौशिकहिकहेउ॥नाथकालसववितुजलरहेउ॥मुनिकहउचितकहतरघुराई॥गयउवीतिदिनपहरअढाई॥रिषिरुषलखिकहतिरहुतिराजू॥इहाउचितनहिअसनअनाजू॥कहाभूपभलसवहिसोहाना॥पाइरजायसुचलेअन्हाना॥दो॥तिहिअवसरफलफूलदलमूलअनेकप्रकार॥लैआएवनचरविपुलभरिभरिकांवरिभार॥२७९॥चौ॥कांमदगिरिरामप्रसादा॥अवलोकतअपहरतविषादा॥सरसरितावनभूमिविभागा॥जनुउमगतआनंदअनुरागा॥ वेलिविटपसवसफलसफूला॥वोलतषगम्रगअलिअनकूला॥तेहिअवसरवनअधिकउछाहू॥त्रिविधिसमीरसुखदसवकाहू॥जाइनवरणिमनोहरताइ॥जनुमहिकरतिजनकपहुनाइ॥तवसवलोगअन्हाइअन्हाइ॥रामजनकमुनिआयसुपाइ॥देषिदेषितरुवरअनुरागे॥जहंतहंपुरजनउतरनलागे॥दलफलमूलकंदविधिनाना॥पावनसुंदरसुधासमाना॥दो॥सादरसवकेरामगुरुपठएभरिभरिभार॥पूजिपितरसुरअतिथगुरुलगेकरणफलहार॥२८०॥चौ॥एहिविधिवासरवीतेचारी॥रामनिरषिनरनारिसुखारी॥दुहुंसमाजअसरुचिमनमाहीं॥विनुसियरामफिरवभलनाहीं॥सीतारामसंगवनवासू॥कोटिअमरपुरसरिससुपासू॥परिहरिलखणरामवैदेही॥जेहिघरभाववामविधितेही॥दाहिनदैवहोइजवसवही॥रा क

ब

अ॰कां॰
५५

मसमीपवसिअवनतवही ॥ मंदाकिनिमज्जनतिहुकाला ॥ रामदरससुदमंगलमाला ॥ अटनरामगिरिवनतापसथल ॥ असनअमियसमकंद
मूलफल ॥ सुखसमेतसम्वतदोइसाता ॥ पलसमहोंहिनजानहिजाता ॥ दो ॥ एहिसुखजोगनलोगसवकहहिकहांअसभाग ॥ सहजसुभायसमाज
दुहुरामचरणअनुराग ॥ २८१ ॥ चौ ॥ एहिविधिसकलमनोरथकरहीं ॥ वचनसप्रेमसुनतमनहरहीं ॥ सीयमातुतेहिसमेपठाईं ॥ दासीदेखिसुअवसर
आई ॥ सावकाससवसुनिसियसासू ॥ आयउजनकरायरनिवासू ॥ कौशिल्यासादरसनमानी ॥ आसनदिऐसमयसमआनी ॥ सीलसनेहसकल
दुहुंओरा ॥ द्रवहिदेखिसुनिकुलिशकठोरा ॥ पुलकसिथिलतनवारिविलोचन ॥ महिनखलिखनलागिसवसोचन ॥ सवसियरामप्रेमकीमूरति ॥
जनुकरुणावहुवेषविसूरति ॥ सीयमातुकहविधिवुधिवांकी ॥ जोपयफेनफोरपविटांकी ॥ दो ॥ सुनियसुधादेखियगरलसवकरतूतिकरा
ल ॥ जहंतहंकाकउलूकवकमानससुकृतमराल ॥ २८२ ॥ चौ ॥ सुनिससोचकहदेविसुमित्रा ॥ विधिगतिवडिविपरीतविचित्रा ॥ जोसृजिपालेहरैवहोरी
वालकेलिसमविधिमतिभोरी ॥ कौशिल्याकहदोसनकाहू ॥ करमविवसदुखसुखछतिलाहू ॥ कठिनकरमगतिजानविधाता ॥ जोशुभअशुभसकलफ
लदाता ॥ ईशरजाइसीसमवहीके ॥ उतपतिथितिलयविषहुअमीके ॥ देविमोहवससोचियवादी ॥ विधिप्रपंचअसअचलअनादी ॥ भूपतिजियवमरव
उरआनी ॥ सोचियसखिलखिनिजहितहानी ॥ सीयमातुकहसत्यसुवानी ॥ सुकृतीअवधिअवधिपतिरानी ॥ दो ॥ लखनरामसियजांहिवनभल
परिनामनपोचु ॥ गहवरिहियकहकौशिलामोहिभरतकैसोचु ॥ २८३ ॥ चौ ॥ ईशप्रसादअसीसतुम्हारी ॥ सुतसुतवधूदेवसरिवारी ॥ राममपथमैंकी

राम
५५

न्हनकाज॥ सोकरिकहौंसखीसतिभाऊ॥ भरतशीलगुणविनयवडाई॥ भायपभक्तिभरोसभलाई॥ कहतसारदहुकरमतिहीचे॥ सागरसीपिकि
जाहिउलीचे॥ जानौसदाभरतकुलदीपा॥ वारवारमोहिकहेउमहीपा॥ कसेकनकमनिपारषपाए॥ पुरुषपरिषिअहिसमैसुभाए॥ अनुचितआजु
कहवअसमोरा॥ सोकसनेहसयानपथोरा॥ सुरसरिसमसुनिपावनिवानी॥ भईसनेहविकलसवरानी॥ दो॥ कौशिल्याकहधीरधरिसुनहुदे
विमिथिलेशि॥ कोविवेकनिधिवल्लभहितुम्हहिसकैउपदेशि॥ २८४॥ चौ॥ रानिरायसनअवसरपाई॥ अपनीभांतिकहवसमुझाई॥ रषिअ
हिलषनभरतगवनहिवन॥ जौंयहमतमानेमहीयमन॥ तौभलजतनकरवसुविचारी॥ मोरेसोचभरतकरभारी॥ गूढसनेहभरतमनमा
हीं॥ रहेनीकमोहिलागतनाहीं॥ लखिसुभावसुनिसरलसुवानी॥ सवभईमगनकरुणारससानी॥ नभप्रसूनझरिधन्यधन्यधुनि॥ सिथि
लसनेहसिद्धयोगीमुनि॥ सवरनिवासविथकिसुनिरहेऊ॥ नवधरिधीरसुमित्राकहेऊ॥ देविदंडयुगजामिनिवीती॥ राममातुसुनिउठीस
प्रीती॥ दो॥ वेगिपाउधारियथलहिकहिसनेहसतिभाय॥ हमरेतवअवईशगतिकेमिथिलेशसहाय॥ २८५॥ चौ॥ लखिसनेहसुनिव
चनविनीता॥ जनकप्रियागहेपायपुनीता॥ देविउचितअसविनयतुम्हारी॥ दशरथघरनिराममहतारी॥ प्रभुअपनेवचनहुआ
दरहीं॥ अग्निधूमगिरिसिरधरहीं॥ सेवकराउकरममनवानी॥ सदासहायमहेशभवानी॥ रौरेअंगजोगकोहै॥ दीपसहायकिदिनकरसो जग
है॥ रामजाइवनकरिसुरकाजू॥ अचलअवधपुरकरिहहिराजू॥ अमरनागनररामवाहुवल॥ सुखवसिहहिअपनेअपनेथल॥ यहस

अ॰कां वजाग वलि ककहि राया॥ देवि न होइ वृथा मुनि भाषा॥ दो॥ असकहि पगपरि प्रेम अति सियहित विनय सुनाइ॥ सियसमेत सियमातु त
५६ व चली सुआयसु पाइ॥ २८६॥ चौ॥ प्रियपरिजनहि मिली वैदेही॥ जो जेहि जोग भांति तेहि तेही॥ तापस वेष जानकी हि देषी॥ भा सव विकल वि
षाद विशेषी॥ जनक राम गुरु आयसु पाई॥ चले थलहि सिय देषनि आई॥ लीन्हि लाय उर जनक जानकी॥ पाहुनि पावनि प्रेम प्राण की॥
उर उमगेउ अंवुधि अनुराग॥ भयउ भूप मन मनहुं पयाग॥ सियसनेह वट वाढत जोहा॥ तापर राम प्रेम सिसु सोहा॥ चिरजीवी मुनि ज्ञान
विकल जनु॥ वूडत लहेउ वाल अवलंवनु॥ मोह मगन मति नहि विदेह की॥ महिमा सिय रघुवर सनेह की॥ दो॥ सियपितु मातु सनेह वस विक(
ल न सके संभारि॥ धरणिसुता धीरज धरेउ समै सुधर्म विचारि॥ २८७॥ चौ॥ तापस वेष जनक सिय देषी॥ भयउ प्रेम परितोष विशेषी॥ पुत्री पवित्र की
न्हे कुल दोऊ॥ सुजस धवल जग कह सव कोऊ॥ जिति सुरसरि कीरति सरि तोरी॥ गवन कीन्ह विधि अंड करोरी॥ गंग अवनि थल तीनि वडेरे॥ ए
मन हि किए साधु समाज घनेरे॥ पितु कह सत्य सनेह सुवानी॥ सीय सकुच मंहु मनहुं समानी॥ पुनि पितु मातु लीन्हि उर लाई॥ सिष आसिष हित दीन्ह सोहा राम
ई॥ कहति न सीय सकुच मन माहीं॥ इहां वसव रजनी भल नाहीं॥ लषि रुष रानि जनायेउ राऊ॥ हृदय सराहत शील सुभाऊ॥ दो॥ वार वार मिलि ५६
भेटि सिय विदा कीन्ह सनमानि॥ कही समय सिर भरत गति रानि सुवानि सयानि॥ २८८॥ चौ॥ सुनि भूपाल भरत व्यवहारू॥ सोन सुगंध सुधा(
स ससि सारू॥ मूंदे सजल नयन पुलके तन॥ सुजस सराहन लगे मुदित मन॥ सावधान सुनु सुमुषि सुलोचनि॥ भरत कथा भव वंध विमोचनि॥ धरमरा

जनप्रबुभविचारु॥ इहा यथामति मोर प्रचारू॥ सो मति मोरि भरत महिमा हीं॥ कहै काह छलि छुवत न छांहीं॥ विधि गनपति अहिपति शिव सारद॥
कवि कोविद बुध बुद्धि विसारद॥ भरत चरित कीरति करतूती॥ धर्म सील गुण विमल विभूती॥ समुझत सुनत सुखद सब काहू॥ सुचि सुरसरि रुचि निदर सुधा
हू॥ दो॥ निरवधी गुण निरुपम पुरुष भरत भरत भरत सम जानि॥ कहिय सुमेरु कि सेर सम कवि कुल मति सकुचानि॥२८९॥ चौ॥ अगम सबहि बर
नत बरबरनी॥ जिमि जलहीन मीन गमधरनी॥ भरत अमित महिमा सुनु रानी॥ जानहि राम न सकहि बषानी॥ बरणि सप्रेम भरत अनभाऊ॥
तिय जिय की रुचि लषि कह राऊ॥ बहुरहि लषन भरत बन जांहीं॥ सब कर भल सब के मन माही॥ देवि परंतु भरत रघुबर की॥ प्रीति प्रतीति जाइ न
हितरकी॥ भरत अवधि सनेह ममता की॥ यद्यपि राम सीव समता की॥ परमारथ स्वारथ सुख सारे॥ भरत न सपनेहु मनहु निहारे॥ साधन सिद्ध
राम पग नेहू॥ मोहि लषि परा भरत मत एहू॥ दो॥ भोरेहु भरत न पेलिहहि मनसहु राम रजाइ॥ करिय न सोच सनेह बस कहेउ भूप बिलषाइ॥२९०॥ चौ
राम भरत गुन गुनत सप्रीती॥ निशि दंपतिहि कलप सम बीती॥ राज समाज प्रात युग जागे॥ न्हाइ न्हाइ सुर पूजन लागे॥ गये न्हाइ गुरु पह रघुराई॥ बंदि
चरण बोले रुष पाइ॥ नाथ भरत पुरजन महतारी॥ सोक विकल बनवास दुखारी॥ सहित समाज राउ मिथिलेसू॥ बहुत दिवस भय सहत कलेसू॥ उ
चित होइ सो कीजिय नाथा॥ हित सबही कर रौरे हाथा॥ अस कहि अति सकुचे रघुराऊ॥ मुनि पुलके लषि सील सुभाऊ॥ तुम्ह बिनु राम सकल सुख साजा
र नेके सरिस दुहु राज समाजा॥ दो॥ प्राण प्राण के जीव के जिव सुख के सुख राम॥ तुम्ह तजि तात सोहात गृह जिन्हहि तिन्हहि विधि वाम॥२९१॥ चौ॥

अ०का० ५७ सोसुखकर्म्मधर्म्मजरिजाऊ ॥ जेहिनरामपदपंकजचाऊ ॥ जोगकुजोगज्ञानअज्ञानू ॥ जेहिनरामप्रेमपरधानू ॥ तुम्हविनुदुखीसुखीतुम्हतेंहीं ॥ तु
म्हजानहुजियजोजेहिकेही ॥ राउरआयसुसिरसवहीके ॥ विदितहुपालहिगतिसवहीके ॥ आपुआश्रमहिधारियपाऊ ॥ भयउसनेहसिथिलमुनि
राऊ ॥ करिप्रनामतवरामसिधाए ॥ रिषिधरिधीरजनकपहआए ॥ रामवचनगुरुनृपहिसुनाए ॥ सीलसनेहसुभायसोहाए ॥ महाराजअवकीजिय
सोइ ॥ सवकरधर्मसहितहितहोइ ॥ दो ॥ ज्ञाननिधानसुजानसुचिधर्म्मधीरनरपाल ॥ तुम्हविनुअसमंजससमनकोसमरथ्यएहिकाल ॥ २९२
चौ ॥ सुनिमुनिवचनजनकअनुरागे ॥ लषिगुनज्ञानविरागविरागे ॥ सिथिलसनेहगुनतमनमाहीं ॥ आएइहांकीन्हभलनाहीं ॥ रामहिरायकहेउ
वनजाना ॥ कीन्हआपुप्रियप्रेमप्रवाना ॥ हमअववनतेंवनहिपठाई ॥ प्रमुदितफिरवविवेकवडाई ॥ तापसमुनिमहिसुरमुनिदेषी ॥ भएप्रेमवसविकल
विशेषी ॥ समौसमुझिधरिधीरजराजा ॥ चलेभरतपहिंसहितसमाजा ॥ भरतआइआगेंभैलीन्हे ॥ औसरसरिससुआसनदीन्हे ॥ तातभरतकहते
रहुतिराऊ ॥ तुम्हहिविदितरघुवीरसुभाऊ ॥ दो ॥ रामसत्यव्रतधर्म्मरतसवकरसीलसनेहु ॥ संकटसहतसकोचवसकहियजोआयसुदेहु ॥ २९३ राम ५७
चौ ॥ सुनितनपुलकिनयनभरिवारी ॥ वोलेभरतधीरधरिभारी ॥ प्रभुप्रियपूज्यपितासमआपू ॥ कुलगुरुसमहितमायनवापू ॥ कौशिकादिमुनि
सचिवसमाजू ॥ ज्ञानअंवुनिधिआपुनराजू ॥ सिसुसेवकआयसुअनुगामी ॥ जानिमोहिसिषदेइयस्वामी ॥ एहिसमाजथलवूझवराउर ॥ मनमम
लीनमैवोलववाउर ॥ छोटेवदनकहौवडिवाता ॥ छमवतातलषिवामविधाता ॥ आगमनिगमप्रसिद्धपुराना ॥ सेवकधर्मकठिनजगजाना ॥ स्वा

९ मिधर्म्मस्वारथहिविरोधू॥वैरुअंधप्रेमहिनप्रवोधू॥दो॥राषिरामरुषधर्म्मव्रतपराधीनमोहिजानि॥सवकेसंमतसर्वहितकरियप्रेमपहिचानि॥२९४॥चौ
भरतवचनसुनिदेषिसुभाऊ॥सहितसमाजसराहतराऊ॥सुगमअगममृदुमंजुकठोरे॥अर्थअमितअतिआषरथोरे॥जौंमुखमुकुरमुकुरनिजपा
नी॥गहिनजाइअसअदवुदवानी॥भूपभरतमुनिसाधसमाजू॥गएजहविवुधकुमुदद्विजराजू॥सुनिसुधिसोचुविकलसवलोगा॥मनहुमीनगन
न नवजलजोगा॥देवंप्रथमकुलगुरुगतिदेषी॥निरषिविदेहसनेहविशेषी॥रामभगतिमयभरतनिहारे॥सुरस्वारथीहहरिहियहारे॥सवकेरामप्रेममय
पेषा॥भएअलेषसोचवसलेषा॥दो॥रामसनेहसकोचवसकहससोचसुरराजु॥रचहुप्रपंचहिपंचमिलिनाहितभयउअकाजु॥२९५॥चौ॥सुरन्हसुमि
रिसारदासराही॥देविदेवसरनागतपाही॥फेरिभरतमतिकरिनिजमाया॥पालुविवुधकुलकरिछलछाया॥विवुधविनयसुनिदेविसयानी॥वोलीसु
रस्वारथजडजानी॥मोसनकहहुभरतमतिफेरू॥लोचनसहसनसूझसुमेरू॥विधिहरिहरमायावडिभारी॥सोउनभरतमतसकइनिहारी॥सोमति
मोहिकहतकरुभोरी॥चंदिनिकरकिचंदुकरचोरी॥भरतहृदयसियरामनिवासू॥तहंकितिमिरजहंतरनिप्रकासू॥असकहिसारदगइविधिलोका
विवुधविकलनिसिमानहुकोका॥दो॥सुरस्वारथीमलीनमनकीन्हकुमंत्रकुठाटु॥रचिप्रपंचमायाप्रवलभयभ्रमअरतिउचाट॥२९६॥चौ॥
करिकुचालिसोचतसुरराजू॥भरतहाथसवकाजुअकाजू॥गएजनकरघुनाथसमीपा॥सनमानेसवरघुकुलदीपा॥समयसमाजधरमअवि
रोधा॥वोलेतवरघुवंसपुरोधा॥जनकभरतसंवादसुनाई॥भरतकहाउतिकहीसुहाई॥तातरामजसआयसुदेहू॥सोसवकरइमोरमतएहू॥सुनिरघु

अ॰कां
५८

नाथजोरिजुगपानी॥बोलेसत्यसरलमृदुबानी॥बिद्यमानआपुनमिथिलेसू॥मोरकहबसबभांतिभदेसू॥राउररायरजायसुहोई॥राउरसपथ
सहीसिरसोही॥दो॥रामसपथसुनिमुनिजनकसकुचेसभासमेत॥सकलबिलोकतभरतमुखबनइनउतरुदेत॥२९७॥चौ॥सभासकुचिसब
भरतनिहारी॥रामबंधधरिधीरजभारी॥कुसमौदेषिसनेहसभारा॥बढतसिंधजिमिघटजनिवारा॥सोककनकलोचनमतिछोनी॥हरिबिमल
गुनगनजगजोनी॥भरतबिबेकबराहबिसाला॥अनाआसउघरेतेहिकाला॥करिप्रनामसबकेरजोरे॥रामराउगुरुसाधनिहोरे॥छमबआ को
जुअतिअनुचितमोरा॥कहोबदनमृदुबचनकठोरा॥हियेसुमिरिसारदासुहाई॥मानसतेमुखपंकजआई॥बिमलबिबेकधर्मनैसाली॥भ य
रतभारतीमंजुमराली॥दो॥निरषिबिबेकबिलोचनन्हिसिथिलसनेहसमाज॥करिप्रणामबोलेभरतसुमिरिसीयरघुराज॥चौ॥२९८॥प्रभुपितुमा
तुसुहृदगुरुस्वामी॥पूज्यपरमहितअंतरजामी॥सरलसुसाहिबसीलनिधानू॥प्रनतपालसर्वज्ञसुजानू॥समरथसरनागतहितकारी॥गुणगाहक
अवगुणअघहारी॥स्वामिगोसाइहिसरिसगोसाई॥मोहिसमाननहिसाईदोहाई॥प्रभुपितुबचनमोहबसपेली॥आएउंइहांसमाजसकेली॥जगभ राम
लपोचऊंचअरुनीचू॥अमियअमरपदमाहुरमीचू॥रामरजाइमेटिमनमांहीं॥देषासुनाकतहुंकोउनाहीं॥सोमैंसबबिधिकीन्हढिठाई॥प्रभुमानीसनेह ५८
सेवकाई॥दो॥कृपाभलाईआपनीनाथकीन्हभलमोर॥दूषनभयेभूषनसरिससुजसचारुचहुंओर॥२९९॥चौ॥राउरिरीतिसुबानिबडाई॥जगतबि
दितनिगमागमगाई॥कूरकुटिलषलकुमतिकलंकी॥नीचनिशीलनिरीसनिसंकी॥तेउसुनिसरनसामुहेआए॥सकृतप्रणामकिएअपनाए॥देषिदो

दो

षकवकुनउरआने॥ सुनिगुरसाधसमाजवषाने॥ कोसाहिवसेवकहिनेवाजी॥ आपुसमाजसाजसवसाजी॥ निजकरतूतिनसमुझियसपने॥ सेव
कसकुचसोचउरअपनें॥ सोगोसाइनहिदूसरकोपी॥ भुजाउठाइकहोयनरोपी॥ पसुनाचतसुकपाठप्रवीना॥ गुणगतिनटपाठकआधीना॥ दो
जोसुधारिसनमानिजनकिएसाधसिरमौर॥ कोक्रपालविनुपालिहेविरदावलिवरजोर॥३००॥ चौ॥ सोकसनेहकिवालसुभाए॥ आएउलाइ
रजायसुवाए॥ तवहुक्रपालहेरिनिजवोरा॥ सवहिभांतिभलमानेउमोरा॥ देषेउपाइसुमंगलमूला॥ जानेउस्वामिसहजअनकूला॥ वडेसमा
जविलोकेउभागू॥ वडीचूकसाहिवअनुरागू॥ क्रपाअनुग्रहअंगुअघाई॥ कीन्हिक्रपानिधिसवअधिकाई॥ राषामोरदुलारगोसाई॥ अपने
शीलसुभाएभलाई॥ नाथनिपटमैकीन्हढिठाई॥ स्वामिसमाजसंकोचविहाई॥ अविनयविनययथारुचिवानी॥ छमिहिदेवअतिआरतिजा
नी॥ सुहृदसुजानसुसाहिवहिवहुतकहववडिषोरि॥ आयसुदेइअदेवअवसवैसुधारिअमोरि॥३०१॥ चौ॥ प्रभुपदपदुमपरागदोहाई॥ सत्यसु
कृतसुखसीवसोहाई॥ सोकरिकहौहियेअपनेकी॥ रुचिजागतसोवतसपनेकी॥ सहजसनेहस्वामिसेवकाई॥ स्वारथछलफलचारिविहाई॥
अग्यासमनसुसाहिवसेवा॥ सोप्रसादुजनपावैदेवा॥ असकहिप्रेमविवसभयेभारी॥ पुलकसरीरविलोचनवारी॥ प्रभुपदकमलगहेअ
कुलाई॥ समउसनेहनसोकहिजाई॥ क्रपासिंधसनमानिसुवानी॥ वैठाएसमीपगहिपानी॥ भरतविनयसुनिदेषिसुभाउ॥ सिथिलसनेहस
भारघुराऊ॥ छं॥ रघुराउसिथिलसनेहसाधसमाजमुनिमिथिलाधनी॥ मनमहुसराहतभरतभायपभगतिकीमहिमाघनी॥ भरतहिप्रसंसत

विवुधवरषतसुमनमानसमलिनसे॥तुलसीविकलसवलोगसुनिसकुचेनिसागमनलिनसे॥सो॥देषिदुखारीदीनदुहुसमाजनरनारि
सव॥मघवामहा[illegible]मलीनमुँमारिमंगलचहत॥३०२॥चौ॥कपटकुचालीसींवसुरराजू॥परअकाजप्रियआपनकाजू॥काकसमा
नपाकरिपुरीती॥छलीमलिनकतहुनपरतीती॥प्रथमकुमतिकरिकपटुसकेला॥सोउचाटुसवकेसिरमेला॥सुरमायासवलोगविमोहे
रामप्रेमअतिसवनविछोहे॥भयउचाटवसमनथिरनाही॥छनवनरुचिछनसदनसोहाही॥दुविधमनोगतिप्रजादुखारी॥सरितसिंधुसंग
मजनुवारी॥दुचितकतहुंपरितोषनलहहीं॥एकएकसनमरमनकहहीं॥लखिहियहंसिकहकृपानिधानू॥सरिससवानूमघवानिजजा
नू॥दो॥भरतजनकमुनिगनसचिवसाधुसचेतविहाइ॥देवमायासवहियथाजोगजनुपाइ॥२०३॥कृपासिंधुलखिलोगदुखारे॥निज
सनेहसुरपतिछलभारे॥सभाराउगुरुमहिसुरमंत्री॥भरतभगतिसवकेमतिजंत्री॥रामहिचितवतचित्रलिखेसे॥सकुचतवोलतवच
नसिषसे॥भरतप्रीतिनतिविनयवडाई॥सुनतसुखदवरनतकठिनाई॥जासुविलोकिभगतिलवलेसू॥प्रेममगनमुनिगनमिथिले
सू॥महिमातासुकहैकिमितुलसी॥भगतिसुभावसुमतिहियहुलसी॥आपुछोटिमहिमावड़िजानी॥कविकुलकानिमानिसकुचानी॥२
कहिनसकहिगुणरुचिअधिकाई॥मतिगतिवालवचनकीनाई॥दो॥भरतविमलजसुविमलविधुसुमतिचकोरकुमारि॥उदितविमल
जनहदयनभएकटकरहीनिहारि॥३०४॥चौ॥भरतसुभाउनसुगमनिगमहू॥लघुमतिचापलताकविछमहू॥कहतसुनतसतिभाउभ

रतको ॥ सीयराम पद होइ न रसको ॥ सुमिरत भरतहि प्रेम राम को ॥ जेहि न सुलभ तेहि सरिस वाम को ॥ देखि दयाल दशा सबही की ॥ राम सुजा
न जानजन जी की ॥ धर्म्मधुरीन धीर नय नागर ॥ सत्य सनेह सील सुख सागर ॥ देसु काल लखि समौ समाजू ॥ नीति प्रीति पालक रघुराजू ॥ बो
ले वचन वानि सरवसु से ॥ हित परिनाम सुनत ससि रसु से ॥ तात भरत तुम्ह धरम धुरीना ॥ लोक वेद बुध प्रेम प्रवीना ॥ दो ॥ करम वचन मानस
विमल तुम्ह समान तुम तात ॥ गुरु समाज लघु बंधु गुण कुसमय किमि कहि जात ॥ २०५ ॥ चौ ॥ जानहु तात तरनि कुल रीती ॥ सत्यसंध पितु कीरति प्री
ती ॥ समौ समाज लाज गुरुजन की ॥ उदासीन हित अनहित मन की ॥ तुम्हहि विदित सबही कर करमू ॥ आपन मोर परम हित धरमू ॥ मोहि सब भां
ति भरोस तुम्हारा ॥ तदपि कहौं अवसर अनुसारा ॥ तात तात विनु बात हमारी ॥ केवल गुरु कुल कृपा संभारी ॥ नतरु प्रजा पुरजन परिवारू ॥ हमहि
सहित सब होत खुआरू ॥ जौं विनु अवसर अथव दिनेसू ॥ जग केहि कहहु न होइ कलेसू ॥ तस उतपात तात विधि कीन्हा ॥ मुनि मिथिलेस राखि सब
लीन्हा ॥ २०६ ॥ दो ॥ राजकाज सब लाज पति धर्म धरनि धन धाम ॥ गुरु प्रभाउ पालिहि सबहि भल होइहि परिनाम ॥ चौ ॥ सहित समाज तुम्हार हमा
रा ॥ घर वन गुरु प्रसाद रखवारा ॥ मातु पिता गुरु स्वामि निदेसू ॥ सकल धर्म धरनीधर सेसू ॥ सो तुम्ह करहु करावहु मोहू ॥ तात तरनि कुल पालक हो
हू ॥ साधन एक सकल सिधि देनी ॥ कीरति सुगति भूतिमय वेनी ॥ सो विचारि सहि संकट भारी ॥ करहु प्रजा परिवारु सुखारी ॥ वांटी विपति सबहीं मो
हि भाई ॥ तुम्हहि अवधि भरि वडि कठिनाई ॥ जानि तुम्हहि मृदु कहउं कठोरा ॥ कुसमय तात न अनुचित मोरा ॥ होंहि कुठायं सुबंधु सहाए ॥ ओ

अ० कां ६० डियहाय असनिङ्क के घाएं ॥दो॥ सेवक कर पद नयन सें मुख सो साहिव होइ ॥ तुलसी प्रीति की रीति सुनि सुकवि सराहहि सोइ ॥३०७॥ चौ॥ सभा
सकल सुनि रघुवर वानी ॥ प्रेम पयोधि अमिय जल सानी ॥ सिथिल समाज सनेह समाधी ॥ देषि दसा चुप सारद साधी ॥ भरतहि भयउ परम संतो
षू ॥ सनमुख स्वामि विमुख दुख दोषू ॥ मुख प्रसन्न मन मिटा विषादू ॥ भा जनु गूंगहि गिरा प्रसादू ॥ कीन्ह सप्रेम प्रनाम वहोरी ॥ वोले पानि पंकरुह
जोरी ॥ नाथ भयउ सुख साथ गए को ॥ लहेउ लाहु जग जनम भए को ॥ अव कृपाल जस आयसु होई ॥ करउं सीस धरि सादर सोई ॥ सो अवलंव
देव मोहि देई ॥ अवधि पार जें पावउं सेई ॥दो॥ देव देव अभिषेक हित गुरु अनुसासनु पाइ ॥ आनेउं सव तीरथ सलिलु तेहि कह काह रजाइ ॥३०८॥ चौ
एक मनोरथ वड मन माहीं ॥ सभय सकोच जात कहि नाहीं ॥ कहहु तात प्रभु आयसु पाई ॥ वोले वानि सनेह सुहाई ॥ चित्रकूट मुनि थल तीरथ व
न ॥ खग मृग सरि सर निर्झर गिरि गन ॥ प्रभु पद अंकित अवनि विसेषी ॥ आयसु होइ त आवउं देषी ॥ अवसि अत्रि आयसु अनुसरहू ॥ ता
त विगत भय कानन चरहू ॥ मुनि प्रसादु वन मंगल दाता ॥ पावन परम सुहावन भ्राता ॥ रिषिनायकु जहं आयसु देहीं ॥ राखेहु तीरथ जलु थल तेही राम ६०
सुनि प्रभु वचन भरत सुषु पावा ॥ मुनि पद कमल मुदित सिरु नाया ॥दो॥ भरत राम संवाद सुनि सकल सुमंगल मूल ॥ सुर स्वारथी सराहि कुल
वरषत सुरतरु फूल ॥३०९॥ चौ॥ धन्य भरत जय राम गोसाईं ॥ कहत देव हरषत वरिआईं ॥ मुनि मिथिलेस सभां सव काहू ॥ भरत वचन सुनि म २
भयउ उछाहू ॥ भरत राम गुन ग्राम सनेहू ॥ पुलकि प्रसंसत राउ विदेहू ॥ सेवक स्वामि सुभाउ सुहावन ॥ नेम प्रेम अति पावन पावन ॥ मति अ

नुसारसराहनलागे॥सचिवसभासदसवअनुरागे॥सुनिसुनिरामभरतसंवादू॥दुहुसमाजहियहरषविषादू॥राममातुदुषसुखसमजानी॥क
हिगुणदोषप्रवोधीरानी॥एककहहिरघुवीरवडाई॥एकसराहतभरतभलाई॥दो॥अत्रिकहेउतवभरतसनसैलसमीपसुकूप॥राषियतीरथतोय
तहपावनअमियअनूप॥३१०॥चौ॥भरतअत्रिअनुसासनुपाई॥जलभाजनसवदियेचलाई॥सानुजआपुअत्रिमुनिसाधू॥सहितगए
जहंकूपअगाधू॥पावनपाथपुन्यथलराषा॥प्रमुदितप्रेमअत्रिअसभाषा॥तातअनादिसिद्धथलएहू॥लोपेउकालविदित
नहिकेहू॥तवसेवकन्हसरसथलुदेषा॥कीन्हसुजलहितकूपविशेषा॥विधिवसभयउविस्वउपकारू॥सुगमअगमअतिध
र्मविचारू॥भरतकूपअवकहिहहिलोगा॥अतिपावनतीरथजलजोगा॥प्रेमसप्रेमनिमज्जतप्रानी॥होइहहिविमलकर्ममनवा
नी॥दो॥कहतकूपमहिमासकलगयेजहांरघुराउ॥अत्रिसुनाएउरघुवरहितीरथपुन्यप्रभाउ॥३११॥चौ॥कहतधर्मइतिहाससप्री
ती॥भयउभोरुनिसिसोसुखवीती॥नित्यनिवाहिभरतदोउभाई॥रामअत्रिगुरुआयसुपाई॥सहितसमाजसाजसवसादे॥चलेरामवन
अटनपयादे॥कोमलचरनचलतविनुपनही॥भैमृदुभूमिसकुचमनमनही॥कुशकंटककांकरीकुराई॥कटुकठोरकुवस्तुदुरा
ई॥महिमंजुलमृदुमारगकीन्हे॥वहतसमीरत्रिविधसुखलीन्हे॥सुमनवरषिसुरघनकरिछाही॥विटपफूलफलतृणमृदुताही
मृगाविलोकिखगवोलिसुवानी॥सेवहिसकलरामप्रियजानी॥दो॥सुलभसिद्धिसवप्राकृतहुरामकहतजमुहात॥रामप्रानप्रियभरतकहुंय

अ० का०
६१

हनहोतवडिवात॥३१२॥चौ॥एहिविधिभरतफिरतवनमाही॥नेमप्रेमलखिमुनिसकुचाही॥पुन्यजलाश्रयभूमिविभागा॥षगमगतरुतृ
णगिरिवनवागा॥चारुविचित्रपवित्रविशेषी॥वूकतभरतदिव्यसवुदेषी॥सुनिमनमुदितकहतरिषिराउ॥हेतुनामगुणपुन्यप्रभाउ॥कतहुंनि
मज्जनकतहुंप्रनामा॥कतहुंविलोकतमनअभिरामा॥कतहुंवैठिमुनिआयसुपाई॥सुमिरतसीयसहितदोउभाई॥देहिअसीससमुदित
वनदेवा॥देषिसुभाउसनेहसुसेवा॥फिरहिगएदिनपहरअढाई॥प्रभुपदकमलविलोकहुआई॥दो॥देषेथलतीरथसकलभरतपां
चदिनमांझ॥कहतसुनतहरिहरसुजसगएउदिवसभईसांझ॥३१३॥चौ॥भोरन्हाइसवुजुरासमाजू॥भरतभूमिसुरतिरहुतिराजू॥भलदिनआ
जुजानिमनमाही॥रामकृपालकहतसकुचांही॥गुरुन्रपभरतसभाअवलोकी॥सकुचिरामफिरिअवनिविलोकी॥सीलसराहिसभासव
सोची॥कहुंनरामसमस्वामिसकोची॥भरतसुजानरामरुषदेषी॥उठिसप्रेमधरिधीरविशेषी॥करिदंडवतकहतकरजोरी॥राखिनाथ
सकलरुचिमोरी॥मोहिलगिसवहिसहेसंताए॥वहुतभांतिदुखपावाआए॥अवगोसाईमोहिदेउरजाई॥सेवहिअवधिऔंधिभरिजाई॥ व
दो॥जेहिउपाउपुनिपायजनदेषैदीनदयाल॥सोसिषदेइअवधिलगिकोशलपालकृपाल॥३१४॥चौ॥पुरजनपरिजनप्रजागोसाई॥ राम
सवसुचिसरससनेहसगाई॥राउरवदिभलभवदुखदाह्न॥प्रभुविनुवादिपरमपदलाह्न॥स्वामिसुजानुजानिसवहीकी॥रुचिलालसारहनिजन ६१
नजीकी॥प्रनतपालपालिहिसवकाहू॥देउदुहूंदिसिऔरनिवाहूं॥असमोहिसवविधिभूरिभरोसो॥कियेविचारनसोचषरोसो॥आरतमोर

नायकरछोड्ढ॥दुहुँमिलिकीन्हढीठहठिमोह्ढ॥यहबड़िदोषदूरिकरिस्वामी॥तजिसकोचुसिषईयअनुगामी॥भरतविनयसुनिसवहिप्रसंसी॥षी
दो· रनीरविवरणगतिहंसी॥दीनवंधमुनिवंधकेवचनदीनछलहीन॥देशकालअवसरसरिसवोलेरामप्रवीन॥२१५॥चौ॥तातनुम्हारिमोरिपरि
जनकी॥चिंतागुरुहिनृपहिघरवनकी॥माथेपरगुरुमुनिमिथिलेसू॥हमहितुमहिसपनेहुँकलेसू॥मोरतुम्हारपरमपुरुषारथ॥स्वारथुसुज
सुधरमपरमारथ॥पितुआयसुपालिअदुहुँभाई॥लोकवेदभलभूपभलाई॥गुरुपितुमातुस्वामिसिषपाले॥चलेहुँसुमगपगपरहिनषाले
असविचारसवसोचविहाई॥पालहुअवधिअवधिभरिजाई॥देसकोसपुरजनपरिवारू॥गुरुपदहिलागछरुभारू॥तुम्हमुनिमातुसचिवसिष रज
मानी॥पालेहुपुहुमिप्रजारजधानी॥दो॥मुखिआमुषसोचाहियषानपानकहुँएक॥पालैपोषैसकलअंगतुलसीसहितविवेक॥२१६॥चौ
राजधरमसरवसुएतनोई॥जिमिमनमाहमनोरथगोई॥वंधुप्रवोधकीन्हवहुभाती॥विनुअधारमनतोषुनसांती॥भरतसीलगुरसचिवस
ली माज॥सकुचसनेहविवसरघुराजू॥प्रभुकरिकृपापावरीदीं॥सादरभरतसीसधरिलीन्हीं॥चरनपीठकरुनानिधानके॥जनुजुगजामिकप्र
जाप्रानके॥संपुटभरतसनेहरतनके॥आषरजनुजुगजीवजतनके॥कुलकपाटकरकुशलकरमके॥विमलनयनसेवासुधरमके॥
भरतमुदितअवलंवलहेते॥अससुखजससियरामरहेते॥दो॥मागेउविदाप्रनामकरिरामलिएउरलाइ॥लोगउचाटेअमरपतिकुटिल
कुअवसरुपाइ॥२१७॥चौ॥सोकुचालिसवकहंभैनीकी॥अवधिआससमजीवनिजीकी॥नतरुलषनसियरामवियोगा॥हहरिमरतसवलो

अ०कां
६२

गकुरोगा॥ राम कृपा अवरेव सुधारी॥ विवुध धारि भइ गुनद गोहारी॥ भेटत भुज भरि भाइ भरत सो॥ राम प्रेम रसु कहि न परत सो॥ तन मन वचन उमग
अनुरागा॥ धीर धुरंधर धीरजु त्यागा॥ वारिज लोचन मोचत वारी॥ देषि दसा सुर सभा दुषारी॥ मुनिगन गुर धुर धीर जनक से॥ ज्ञान अनल मन
कसे कनक से॥ जे विरंचि निरलेप उपाए॥ पदुम पत्र जिमि जग जल जाए॥ दो॥ तेउ विलोकि रघुवर भरत प्रीति अनूप अपार॥ भए मगन मन त
न वचन सहित विराग विचार॥३१८॥ चौ॥ जहा जनक गुर गति मति भोरी॥ प्राकृत प्रीति कहत वडि षोरी॥ वरनत रघुवर भरत वियोगू॥ सुनि कठो
र कवि जानहि लोगू॥ सो सकोच रसु अकथ सुवानी॥ समउ सनेह सुमिरि सकुचानी॥ भेटि भरत रघुवर समुझाए॥ पुनि रिपुदवनु हरषि हिय ला
ए॥ सेवक सचिव भरत रुष पाई॥ निज निज काज लगे सब जाई॥ सुनि दारुण दुष दुहु समाजा॥ लगे चलन के साजन साजा॥ प्रभु पद प
दुम वंदि दोउ भाई॥ चले सीस धरि राम रजाई॥ मुनि तापस वनदेव निहोरी॥ सब सनमानि वहोरि वहोरी॥ दो॥ लषनहि भेटि प्रनामु करि
सिर धरि सिय पद धूरि॥ चले सप्रेम असीस सुनि सकल सुमंगल मूरि॥३१९॥ चौ॥ सानुज राम नृपहि सिरु नाई॥ कीन्हि वहुत विधि विनय वडा राम
ई॥ देव दयावस वड दुषु पाएउ॥ सहित समाज काननहि आएउ॥ पुर पगु धारिअ देइ असीसा॥ कीन्ह धीर धरि गवनु महीसा॥ मुनि महिदेव सा ६२
धु सनमाने॥ विदा किए हरि हर सम जाने॥ सासु समीप गए दोउ भाई॥ फिरे वंदि पग आसिष पाई॥ कौशिक वामदेव जावाली॥ परिजन पुरिजन
सचिव सुचाली॥ यथा जोग करि विनय प्रनामा॥ विदा किए सव सानुज रामा॥ नारि पुरुष लघु मध्य वडेरे॥ सव सनमानि कृपानिधि फेरे॥ दो॥ भर

तमातुपदवंदिप्रभुसुचिसनेहमिलिभेटि॥ विदाकीन्हिसजिपालकीसकुचसोचसवमेटि॥३२०॥ चौ॥ परिजनमातुपितहिमिलिसीता॥ फिरिप्रा
नप्रियप्रेमपुनीता॥ करिप्रनामुभेटिसवसासू॥ प्रीतिकहतकविहियनहुलासू॥ सुनिसिषअभिमतआसिषपाई॥ रहीसीयदुहुंप्रीतिसमाई॥ र
घुपतिपटुपालकीमगाई॥ करिप्रवोधसवमातुचढाई॥ वारवारहिलिमिलिदुहुंभाई॥ समसनेहजननीपहुंचाई॥ साजिवाजिगजवाहननाना॥
भूपभरतदलकीन्हपयाना॥ हृदयरामसियलषनसमेता॥ चलेजाहिसवलोगअचेता॥ वसहवाजिगजपसुहियहारे॥ चलेजांहिपरवसमनुमारे॥
दो॥ गुरुगुरतियपदवंदिप्रभुसीतालषनसमेत॥ फिरेहरषविसमयसहितआएपरननिकेत॥३२१॥ चौ॥ विदाकीन्हसनमानिनिषादू॥ चलेउहृ
दयवडविरहविषादू॥ कोलकिरातभिल्लवनचारी॥ फिरेफिरेजोहारिजोहारि॥ प्रभुसियलषनवैठिवटछांहीं॥ प्रियपरिजनवियोगविलषांहीं॥ भरतसने
हुसुभाउसुवानी॥ प्रियाअनुजसनकहतवषानी॥ प्रीतिप्रतीतिवचनमनकरनी॥ श्रीमुखरामप्रेमवसवरनी॥ तेहिअवसरषगमृगजलमीना॥ चि
त्रकूटचरअचरमलीना॥ विवुधविलोकिदसारघुवरकी॥ वरषिसुमनगतिकहिघरघरकी॥ प्रभुप्रनामकरिदीन्हभरोसो॥ चलेमुदितमनडरनषरो
सो॥ दो॥ सानुजसीयसमेतप्रभुराजतपरनकुटीर॥ भक्तिज्ञानवैराग्यजनुसोहतधरेसरीर॥३२२॥ चौ॥ मुनिमहिसुरगुरुभरतभुआलू॥ राम
विरहसवसाजुविहालू॥ प्रभुगुणग्रामगुनतमनमाहीं॥ सवचुपचापचलेमगजाहीं॥ यमुनाउतरिपारसवभयऊ॥ सोवासरविनुभोजनगयऊ॥
उतरिदेवसरिदूसरवासू॥ रामसखासवकीन्हसुपासू॥ सईउतरिगोमतीअन्हाए॥ चौथेदिवसअवधिपुरआए॥ जनकुरहेपुरवासरचारी॥ राज

काजसवसाजसंभारी॥ सौंपिसचिवगुरुभरतहिराजू॥ तिरहुतिचलेसाजिसवुसाजू॥ नगरनारिनरगुरु सिषमानी॥ वसेसुखेनरामरजधानी
दो॥ रामदरसलगिलोगसवकरतनेमउपवास॥ तजितजिभूषनभोगसुखजियतअवधिकीआस॥३२३॥चौ॥ सचिवसुसेवकभरतप्रवोधे
निजनिजकाजपाइसिषओधे॥ पुनिसिषदीन्हवोलिलघुभाइ॥ सौपीसकलमातुसेवकाइ॥ भूसुरवोलिभरतकरजोरे॥ करिप्रनामवरविनय
निहोरे॥ ऊंचनीचकारजभलपोचू॥ आयसुदेवनकरवसंकोचू॥ परिजनपुरजनप्रजावोलाए॥ समाधानकरिसुवसवसाए॥ सानुजगयेगुरुगे
हवहोरी॥ करिदंडवतकहतकरजोरी॥ आयसुहोइतरहउसनेमा॥ वोलेमुनितनपुलकिसप्रेमा॥ समुझवकहवकरवतुम्हजोई॥ धर्मसारजगु
होइहिसोई॥ दो॥ सुनिसिषपाइअसीसवडिगनकवोलिदिनुसाधि॥ सिंहासनप्रभुपादुकावैठारेनिरुपाधि॥३२४॥चौ॥ राममातुगुरुपदसिरु
नाइ॥ प्रभुपदपीठरजायसुपाइ॥ नंदिग्रामकरिपरणकुटीरा॥ कीन्हनिवासधरमधुरधीरा॥ जटाजूटसिरमुनिपटधारी॥ महिषनिकुशसांथरी
संवारी॥ असनवसनवासनव्रतनेमा॥ करतकठिनरिषिधर्मसप्रेमा॥ भूषनवसनभोगसुखभूरी॥ मनतननवचननतजेत्रिणतूरी॥ अवधिराजसु
रराजुसिहाई॥ दशरथधनसुनिधनदलजाई॥ तेहिपुरवसतभरतविनुरागा॥ चंचरीकजिमिचंपकवागा॥ रमाविलासरामअनुरागी॥ तजतव
वनाजिमिजनवडभागी॥ दो॥ रामप्रेमभाजनभरतवडेनपेहिकरतूति॥ चातकहंससराहिंतटेकिविवेकविभूति॥३२५॥चौ॥ देहदिनहुदिनदूवरि
होई॥ घटनतेजवलमुखछविसोई॥ नितनवरामप्रेमपनुपीना॥ वढतधरमदलुमननमलीना॥ जिमिजलनिघटतसरदप्रकासे॥ विलसतवे